गुनाहों से तौबा

काश मैं
गुनाह नहीं
करता

मुसन्निफ
अनवर रज़ा खान अज़हरी

हम्द व सना

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

ऐ अल्लाह, तेरी जात बेमिस्ल व यकता है, तू हमेशा से है, हमेशा रहेगा। तू एक है, पाक है, तू ही इबादत के लायक है। तू ही सारी चीजों को बनाने वाला है। तू ही सारे जहां का रब है। या अल्लाह तू मेरा खुदा, मैं तेरा बंदा, तूने मुझे इबादत के लिए बनाया और कुरआन मेरे हिदायत के लिए उतारा, नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तरीका ए सुन्नत के लिए भेजा, वलियों का सिलसिला निसबत और मोहब्बत के लिए कयामत तक जारी रखा ताकि मैं कुरआन से हिदायत पाऊँ, नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सुन्नतको अपनाऊं और वलियों से निसबत और मोहब्बत करने वाला बन जाऊं, ऐ मेरे रब तेरा एहसाने अज़ीम है की आदम अलैहिस्लाम को अपने कुदरत वाले हाथ से बनाया और उनकी औलाद हमे बनाया

और सबसे बड़ा एहसान ये है कि जिस हबीब को तूने अपने नूर की तजल्ली से बनाया उसका उम्मती हमे बनाया यानी अशरफुल मखलुकात बनाया और शुक्र है तेरी सारी नेमतों का जिसे मैं शुमार नहीं कर सकता। या अल्लाह तुझ से अज़ीम कोई नही।

दरूद व सलाम हो उस नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जिसे तूने अपनी नूर की तजल्ली से बनाया और सारे जहां के लिए रहमत बनाकर हम गुनाहगार उम्मतियों का नबी बनाया दरूद व सलाम हो उस नबी के आल पर जिस का सिलसिला तूने कयामत तक जारी रखा, और सलामती हो उन तमाम मोमिनो मोमिनात पर जिन्होंने तुझे राज़ी किया।

फेहरिस्त

बाब 1 गुनाह का बयान

बाब 2 तौबा का बयान

पहले इस पर अमल करे

आयत 1 : "जो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म माने तो उसे उनका साथ मिलेगा जिनपर अल्लाह ने फ़ज़्ल किया यानी अम्बीया (नबी) और सिद्दिक़ (सच्चे लोग) और शहीद और नेक लोग, ये क्या ही अच्छे साथी हैं" (कंजूल ईमान, सुरह: निशा, आयत न. 69)

तर्जमा : अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमा|बरदारी करोगे तो तुम्हारे किसी काम तुम्हें नुक़सान न देगा बेशक अल्लाह बख्शने वाला मेहरबान हैण *(सूरह - हुजरात, आयत न. 14)*

आयत 2 : जो हुक्म माने अल्लाह और अल्लाह के रसूल का, अल्लाह उसे बाग़ों में ले जाएगा जिनके नीचे नहरें रवां हमेशा उनमें रहेंगे और यही है बड़ी कामयाबी. *(कंजूल ईमान, सुरह: निशा, आयत न. 13)*

आयत 3 : अल्लाह चाहता है कि अपने अहकाम तुम्हारे लिये साफ़ बयान करदे और तुम्हें अगलों की रविशे बतादे और तुमपर अपनी रहमत से रूजू (ध्यान दिलाये) फ़रमाए और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है. *(कंजूल ईमान, सुरह: निशा, आयत न. 26)*

आयत 4 : "तो ऐ मेहबूब तुम्हारे रब की क़सम वो मुसलमान न होंगे जबतक अपने आपस के झगड़े में तुम्हें हाकिम न बनाएं फिर जो कुछ तुम हुक्म फ़रमा दो अपने दिलों में उस से रूकावट न पाएं और जी (दिल) से मान लें." *(कंजूल ईमान, सुरह: निशा, आयत न. 65)*

आयत 5 : जिसने रसूल का हुक्म माना बेशक उसने अल्लाह का हुक्म माना और जिसने मुंह फेरा तो हमने तुम्हें उनके बचाने को न भेजा. (कंजूल ईमान, सुरह: निशा, आयत न. 80)

आयत 6: "ऐ ईमान वालो हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का और उनका जो तुममें हुकूमत वाले हैं फिर अगर तुममें किसी बात का झगड़ा उठे तो उसे अल्लाह और रसूल के हुजूर रूजू (पेश) करो अगर अल्लाह व क़यामत पर ईमान रखते हो, यह बेहतर है और इसका अन्जाम सबसे अच्छा" *(कंजूल ईमान, सुरह: निशा, आयत न. 60)*

आयत 7 : अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करे और उसकी कुल हदों से बढ़ जाए अल्लाह उसे आग में दाख़लि करेगा जिसमें हमेशा रहेगा और उसके लिये ख़्वारी (ज़िल्लत) का अज़ाब है। (कंजूल ईमान, सुरह: निशा, आयत न. 14

गुनाह का बयान

गुनाह क्या है : अल्लाह और रसूल सलल्ललाहु अलैहिवस्सलम के फरमान के खिलाफ काम करने का नाम गुनाह है यानी जिस काम के करने का हुक्म अल्लाह व रसूल ने दिया है उसको न करना और जिससे मना किया है उसको करना गुनाह है गुनाह (हराम) को हलाल जानना कुफ्र है। गुनाहों की वजह से दिल में सख्ती और स्याही पैदा होती है और ईमान ज़ईफ (कमज़ोर) और खत्म भी हो जाता है। तौबा के जरिये ईमान को मजबूत या वापस ईमान लाया जा सकता है।

गुनाह का प्रैक्टिकल माना यह है कि दुनियावी सामान के जरिये जिस्म को आराम मिलना या दिल को कुछ पल के लिए मजा मिलना इसी का नाम गुनाह है

गुनाहों की किस्मे और तौबा का तरीका

फ़क़ीह रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते है गुनाहो की 2 किस्मे है

1. इस गुनाह का मामला अल्लाह और बंदों के दरमियान है यानी हुकुकूल अल्लाह जैसे अल्लाह के हुक्म की नाफरमानी जैसे फ़र्ज़, वाजिब, सुन्नत (नमाज, रोजा, हज, जकात, दरूद, नेकी का हुक्म गुनाहो से रोकना वगैरह जिसे अल्लाह हुक़्म दिया हो उसे अदा न किया लेकिन अल्लाह से रो रो के माफी मांगे और सच्ची तौबा करे तो उसे अल्लाह अपनी रहमत से खुद (डायरेक्ट) माफ कर सकता है।

2. इसका मामला मखलूक और मखलूक के दरमियान है यानी हूककुल इबाद यानी एक बन्दा किसी दूसरे मोमिन बंदे का दिल दुखाया हो, अमानत में खयानत किया हो, हसद, गीब्बत या चुगली, लड़ाई झगड़ा किया हो यानी बंदों का हुकूक अदा न किया वगैरह इस गुनाह को अल्लाह तभी माफ करेगा जब बन्दा एक दूसरे से माफी न मांग ले या माफ न कर दे। जैसे इब्लीस को माफी नही मिली क्योंकि वो आदम अलैहिसालाम से हसद रखता था।

हिकायत : इब्लीस ने मूसा अलैहिस्सलाम से मुलाकात की और कहा ऐ मूसा ! अल्लाह तआला ने तुम्हें अपनी रिसालत के लिए चुना और कलीम बनाया है, मैं भी अल्लाह की मख़्लूक़ में शामिल हूँ और मुझ से एक गुनाह सरज़द हो गया है, अब मैं तौबा करना चाहता हूँ , आप खुदा से मेरी सिफारिश कीजिए ताकि वह मेरी तौबा क़बूल करले और मुझे मुआफ़ करदे, हजरत मूसा अलैहिस्सलाम ने खुदा से अर्ज़ की और सिफारिश की कि शैतान अब मुआफी चाहता है, उसे मुआफ़ी दे दी जाए खुदा तआला ने फ़रमाया, मूसा ! मेरी नाराज़गी उससे आदम की वजह से है, उसने आदम को सज्दा न किया तो मैं उससे नाराज़ हो गया, अब अगर वह मुआफी चाहता है तो आदम अलैहिस्सलाम की कब्र पर जाए और आदम की क़ब्र को सज्दा करे तो मैं राजी हो जाऊँगा हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम शैतान से मिले और फ़रमाया कि खुदा तआला ने मुआफ़ी के लिए यह फरमाया है कि तुम आदम अलैहिस्सलाम की कब्र पर जाओ, और उन की कब्र को सज्दा कर लो तो मैं राज़ी हो जाउँगा, और तुम्हारी तौबा क़बूल कर लूँगा, शैतान ने कहा रहने दीजिए जनाब मैंने जब आदम को जन्नत में जिन्दा में सज्दा नही किया तो मरने के बाद कहा से सज्दा करूँगा (यानी अकड़ गया)*(मकाइदुश्शैतान, इब्ने अबिद्दुनिया)*

गुनाहगार (फ़ासिक) की किस्में

फासिक (गुनाहगार) की दो क़िस्में हैं (1) फ़ासिक काफिर (2) फ़ासिक फ़ाजिर

फासिक काफिर वह है जो अल्लाह तआला और उस के रसूल पर ईमान नही रखता। हिदायत को छोड़ कर गुमराही का तालिब होता है जैसा कि फ़रमाने इलाही है (तो फिस्क किया उस ने अपने रब के हुक्म के बारे में।)

फ़ासिक फ़ाजिर वह है जो शराब पीता है, माले हराम खाता है, बदकारियां करता है, इबादत को छोड़ कर गुनाहों में ज़िन्दगी बसर करता है। मगर अल्लाह तआला को वाहिद (एक) मानता है और उस के साथ शरीक नही ठहराता। इन दोनों में फर्क यह है कि फासिक काफिर की

बख़्शिश मौत से पहले-पहले कल्मए शहादत और तौबा के बगैर नामुमकिन है और फ़ासिक फाजिर की मगफिरत मौत से पहले तौबा और पशेमानी (पछतावे) के जरीए मुमकिन है. इस लिए कि हर वह गुनाह जिस का तअल्लुक नफ्सानी ख़्वाहिशों से है उस की मग़फित मुमकिन है, और हर वह गुनाह जिस की बुनियाद तकब्बुर और खुद बीनी है उस की मगफिरत नामुमकिन है, शैतान की नाफरमानी की वजह भी यही तकब्बुर और खुदपसन्दी थी। (मुकाशफतुल कुलूब , बाब 8, पेज 68)

शैतान की नाफरमानी तकब्बुर के वजह से

कुरआन : बेशक हमने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हारे नक्शे बनाए फिर हमने मलाइका से फ़रमाया कि आदम को सज्दा करो तो वो सब सज्दे में गिरे मगर इब्लीस, यह सज्दे वालों में न हुआ

अल्लाह फ़रमाया किस चीज़ ने तुझे रोका कि तूने सज्दा न किया जब मैंने हुक्म दिया था बोला मैं उससे बेहतर हूँ तूने मुझे आग से बनाया और उसे मिट्टी से बनाया*(सूरह अराफ, आयत न 11-12)*

हिकायत : हज़रते अबुल आलिया से रिवायत है उन्होंने कहा: जब हज़रते नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती लंगर अंदाज हूई तो आप ने जहाज़ के पिछले हिस्से में इब्लीस को देखा। हज़रते नूह अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: तेरे लिए तबाही हो, तेरी वजह से जमीन वाले गर्क़ हुए और तूने उन्हें हलाक कर दिया, इब्लीस ने कहा अब मैं क्या करूँ? आपने फ़रमाया तौबा कर, उसने कहा अपने रब से पूछिए क्या मेरी तौबा कुबूल होगी?हज़रते नूह अलैहिस्सलाम ने अपने रब से दुआ की, वह्यी आई ऐ नूह! इब्लीस की तौबा यह है कि वो आदम की क़ब्र का सज्दा कर ले, फिर आपने इब्लीस से कहा तेरे लिए तौबा का तरीका मुक़र्रर किया गया है, इब्लीस ने कहा वह क्या है? फ़रमाया तू आदम अलैहिस्सलाम की क़ब्र को सज्दा कर ले, इब्लीस ने कहा जब आदम हयात थे तो उनका सज्दा नही किया तो क्या मरने के बाद सज्दा करूँगा।*(मकाइदुश्शैतान, इब्ने अबिद्दुनिया)*

गुनाह तीन क़िस्म के हैं :

पहली किस्म यह कि तुम ने खुदा के फ़र्ज कर्दा अहकाम को अदा न किया हो और इन की अदाएगी तुम्हारे जिम्मे हो जैसे नमाज़, रोज़ा, ज़कात और कफ्फारा वगैरा तो येह महूज़ ज़बानी तौबा से मुआफ़ नही होंगे बल्कि हुत्तल इमकान इन की क़ज़ा लाज़िम है या कफ़्फ़ारा अदा करना होगा।

दूसरी क़िस्म वोह गुनाह जिन की अब कजा तो नही हो सकती मगर हों वोह भी तुम्हारे और खुदा के दरमियान ही जैसे कही शराब नोशी की हो या राग रंग(गाना बजाना) की महफिल सजाई हो या सूद खाया हो तो इस किस्म के गुनाहों की मुआफी की सूरत यह है कि गुज़श्ता गुनाहों पर नदामत व पशेमानी की जाए और आइन्दा के लिये उन्हें तर्क कर देने का पक्का इरादा कर लिया जाए।

तीसरी क़िस्म वोह गुनाह हैं जो तुम्हारे और मख़्लूक के दरमियान हैं। तमाम गुनाहों से जियादा संगीन गुनाह येह तीसरी क़िस्म के गुनाह हैं इन की नोइय्यत मुख़्तलिफ़ होती है बा'ज़ किसी के माल से तअल्लुक रखते हैं और बा'ज़ किसी की जात से, इसी तरह बा'ज़ वोह होते हैं जिन का तअल्लुक किसी की इज्जत व हुरमत से होता है और बा'ज़ वोह होते हैं जो किसी को दीनी तौर पर नुक्सान पहुंचाया होता है।

तो जिन का तअल्लुक माल से है उन के मुतअल्लिक ज़रूरी है कि अगर हो सके तो वोह माल वापस कर दिया जाए अगर गुरबत व इफ्लास के बाइस वापस करने से मा'जूर है तो साहिबे माल से जाइज़ व हलाल करवा ले अगर साहिबे माल मर चुका है या वहां मौजूद नही तो माल की मिक़दार के मुताबिक कोई चीज़ सदका कर दे और अगर येह भी मुमकिन न हो तो आ'माले सालिहा की कसरत करे और अल्लाह तआला के दरबार में गिर्या व जारी करे ताकि रोज़े क़ियामत खुदा तआला उस साहिबे माल को राजी कर दे और वोह गुनाह जिन का तअल्लुक़ किसी की जान या जात से हो जैसे किसी को क़त्ल किया हो तो उस के इवज़ (बदले में) किसास देना लाज़िम है या मक़्तूल के वारिसों से मुआफ़ कराना ज़रूरी है और अगर

वारिस मौजूद नही तो दरबारे इलाही में गिर्या व जारी ज़रूरी है और खुदा से इस की मुआफ़ी चाहना लाजिम है ताकि अल्लाह उस मक्तूल को तुम से राज़ी कर दे और किसी की इज्ज़त व आबरू से मुतअल्लिक येह गुनाह है कि इस लिये कि खुदा के फज्लो करम से येह उम्मीद है कि वोह तुम्हारी सादिक गिर्या व ज़ारी देख कर तुम्हारे ख़स्म) को अपने खजानों से अता कर के तुम्हारी तरफ से राज़ी कर दे।

तौबा के अरकान व शराइत जो हम ने बयान किये हैं, जब तुम इन पर पूरी तरह अमल पैरा हो जाओगे और आइन्दा के लिये अपने दिल को हर किस्म के गुनाहों से पाक रखने का अहद कर लोगे तो तुम्हारे गुज़श्ता गुनाह मुआफ हो जाएंगे। अब आइन्दा अगर इस अहद पर तो तुम काइम रहे मगर गुज़श्ता क़ज़ाएं अदा न कर सके या नाराज़ लोगों को राजी न कर सके तो येह साबिका गुनाह ही तुम्हारे ज़िम्मे रहे बाकी तमाम बख़्श दिये जाएंगे। *(मिन्हाजुल आबेदीन, बाब 3)*

आमाल के तीन दफ्तर

हज़रत आएशा सिद्दीका रज़ियल्लाहो अन्हा से मरवी है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आमाल के तीन दफ्तर होंगे, एक दफ़्तर ऐसा होगा जिसका लिखा हुआ अल्लाह तआला माफ़ फ़रमा देगा, एक दफ़्तर ऐसा होगा जिसका लिखा हुआ अल्लाह तआला माफ नही फरमाएगा और एक दफ्तर का नविश्ता बगैर बदला लिये माफ़ नही किया जाएगा।

"वह दफ़्तर जिसका लिखा अल्लाह तआला माफ नही फरमाएगा, वह शिर्क (का गुनाह) है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: जिसने अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराया बिला शुबाह उस पर जन्नत हराम है और उसका ठिकाना दोज़ख है। और जिस दफ्तर का नविश्ता अल्लाह तआला माफ़ फरमा देगा वह हुकूक अल्लाह हैं यानी वह ज़ुल्म जो उसने अपने और अपने रब के हुकूक के माबैन अपनी जान पर किये है, और तीसरा दफ्तर जिसका नविश्ता बगैर बदला के नही रहेगा वह हुकूकूल

इबाद हैं यानी बन्दों की बाहम हक तलफी है, हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फरमाया, जानते हो कि कयामत के दिन मेरी उम्मत में से कौन मुफ़लिस होगा सहाबा करामं ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह हम में से मुफ़लिस वह है जिसके पास माल व दौलत न हो, नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मेरी उम्मत में से मुफ़लिस वह होगा जो अपने रोज़ों और नमाज़ के साथ तो आएगा लेकिन उसने किसी को गाली दी होगी, किसी पर तोहमंत लगाई होगी, किसी का माल खाया होगा, किसी का खून (ना हक) बहाया होगा और किसी को मारा होगा पस वह मज़लूम ज़ालिम की नेकियों से बदला हासिल करेगा और ज़ालिम की नेकियां उसकी होंगी, अगर नेकियां (बदला के लिये) ख़त्म हो जाएंगी तो मज़लूम की बुराईयां उसके नामाए आमाल में लिख दी जाएंगी, फिर उस (मुफ़लिस) को जहन्नम में फेंक दिया जाएगा इसलिये जालिम के लिये ज़रुरी है कि तौबा में जल्दी करे ।

गुनाह से नुक़सानात:

गुनाह इन्सान को अल्लाह से दूर सवाब से महरूम और अज़ाब का हकदार बना देता है। हदीस शरीफ में आया है कि गुनाह करने से इन्सान के दिल पर एक स्याह नुक्ता पैदा होता है जो तौबा करने पर दूर होता है लेकिन अगर कोई शख्स़ गुनाह करता है और तौबा ना करे तो वह स्याह नुक्ता दिन ब दिन कसरत गुनाह से बढ़ जाता और यहां तक फैलता है कि तमाम दिल को स्याह कर देता है जब नौबत यहां तक पहुंची है तो फिर उसके दिल पर वआज़ व नसीहत का कोई असर नही होता। (तंबीहूल गफीलिन, जिल्द 1, पेज 157)

हर मुसलमान पर लाज़िम है कि हमेशा हर गुनाह से बचता रहे।

कुरआन में अल्लाह फरमाता है :

तर्जमा : छोड़ दो खुला और छुपा गुनाह करना, वो जो गुनाह करते हैं जल्द ही अपनी किये की सज़ा पाएंगे (सूरह - अनआम, आयत न. 120)

और फरमाता है :

तर्जमा : तुममें जो कोई नादानी से कुछ बुराई कर बैठे फिर उसके बाद तौबा करें और संवर जाए तो बेशक अल्लाह बख्शने वाला मेहरबान है। (सूरह - अनआम, आयत न 54)

गुनाह के असरात:

गुनाहों की कसरत की वजह से ईमान बर्बाद होने का डर है। अज़ाब गुनाह के वजह से, जालिम बादशाह गुनाह के वजह से, बीमारी गुनाह के वजह से, रूहानी बीमारी गुनाह के वजह से, रंज व गम गुनाह के वजह से, दुश्मनों का डर गुनाह के वजह से, गुमराही गुनाह के वजह से, हर परेशानी गुनाहो के वजह से और आख़िरत का अज़ाब भी गुनाहो के वजह से। सलामती इसी में है कि दुनिया की मोहब्बत दिल से लिकाल दे, सिर्फ दौलत के लिये न जिये, ख़्वाहिसात की पैरवी न करे (1) इसी लिये खाया जाय कि भूक मिट जायेए(2) कपड़े इसी लिये इस्तेमाल में लाये जायें जो सतर के लिये काफी हो (3) मकान इसी के लिये बनाया जाय जो सर्दी व गर्मी से पनाहगाह साबित हो सके। ज़रूरियात को बहुत ही महदूद यानी कम से कम कर दें तो असराफ फजूल खर्ची, तसन्नो और रियाकारी से महफूज रह सकते हैं। इन्सान की ज़रूरियात कम हो जायें तो मुख्तसर आमदनी में घरेलू अख़राजात की तकमील मुमकिन हो जाती है। नाजायज़ और हराम तरीक़ों से कमाने की हाजत उसी वक्त महसूस होती है जब इन्सान के अख़राजात में ज़बरदस्त इजाफा हो जाता है। इन हालात में हुदूद से तजावुज़ करते हुए मुबाहात के मैदान में कदम रखने और आराम व आसायश की वुसअत के दरवाज़े खोलना मुश्तहबात व मकरुहात तक पहुंचा देता है। रफ्ता रफ्ता इन्सान मुहर्रमात का इरतेकाब करने से भी बाज़ नही रहता। इस्लाम की सरहदें यहां तक ख़त्म हो जाती हैं आगे कुफ्र की वादी जुल्मात है।

बन्दगी रब का तकाज़ा यह है कि वाजिवात, सुन्नत और नवाफिल अदा किये जायें और मरते दम तक इस पर कायम रहें। जवाले नेमत उस वक्त

शुरू होता है जब इन्सान मुश्तहबात और हराम में पड़ जाता है। सलामती और ईमान की हिफाज़त तो खौफ व उम्मीद के दरम्यान है।

गुनाह की दो किस्में है- गुनाहे सगीरा (छोटे छोटे गुनाह) गुनाहे कबीरा (बड़े बड़े गुनाह) गुनाहे सगीरा नेकियों और इबादतों की बरकत से माफ हो जाते हैं। लेकिन गुनाहे कबीरा उस वक्त तक माफ नही होते जब तक कि आदमी सच्ची तौबा करके अहले हुकूक से उनके हुकूक माफ न करा ले।

गुनाहे कबीरा किस को कहते हैं? गुनाहे कबीरा हर उस गुनाह को कहते है जिस से बचने पर खुदावन्दे कुद्दूस ने मगफिरत का वादा फरमाया है। (हाशिया बुखारी स. 36) और बाज उलमाए किराम ने फरमाया कि हर वह गुनाह जिसके करने वाले पर अल्लाह व रसूल ने वईद सुनाई या लानत फरमाई, या अजाब व गजब का जिक्र फरमाया वह गुनाहे कबीरा है (फुयूजुलबारी जि. 1. स. 405) गुनाहे कबीरा कौन कौन है?:- गुनाहे कबीरा की तादाद बहुत ज्यादा है मगर

उनमें से चन्द मशहूर गुनाहे कबीरा को हम यहां जिक्र करते हैं जो ये है (1) शिर्क करना (2) जादू करना (3) खूने नाहक करना (4) सूद खाना (5) यतीम का माल खाना (6) जिहादे मैदान से भाग जाना (7) पाक दामन मोमिन औरतों, मर्दों पर जिना की तोहमत लगाना (8) जिना करना (9) इगलाम बाजी करना (10) चोरी करना (11) शराब पीना (12) झूट बोलना और झूटी गवाही देना (13) जुल्म करना (14) डाका डालना (15) मां बाप को तकलीफ देना (16) हैज व निफास की हालत में बीवी से सोहबत करना (17) जुआ खेलना (18) सगीरा गुनाहों पर इसरार करना (19) अल्लाह की रहमत से ना उम्मीद हो जाना (20) अल्लाह के अज़ाब से बे खौफ हो जाना (21) नाच देखना (22) औरतों का बे पर्दा होकर फिरना (23) नाप तौल में कमी करना (24) चुगली खाना (25) गीबत करना (26) मुसलमानों को आपस में लड़ा देना (27) अमानत में खियानत करना (28) किसी का माल या जमीन व सामान वगैरह गसब कर लेना (छीन लेना) (29) नमाज रोजा और हज व जकात

वगैरह फराइज को छोड़ देना (30) मुसलमानों को गाली देना, उनसे नाहक तौर पर मार पीट करना वगैरह वगैरह सैकड़ों गुनाहे कबीरा है- जिन से बचना हर मुसलमान मर्द व औरत पर फर्ज है और साथ ही दूसरों को भी उन गुनाहों से रोकना लाजिम और जरूरी है।

हदीस शरीफ में है कि अगर किसी मुसलमान को कोई गुनाह करते देखे तो उस पर लाजिम है कि अपना हाथ बढ़ा कर उसको गुनाह करने से रोक दे और अगर हाथ से उसको रोकने की ताकत नही रखता, तो ज़बान से मना करदे और को अगर इसकी भी ताकत न हो तो कम से कम अपने दिल से उस गुनाह बुरा समझ कर उससे बेज़ारी ज़ाहिर करदे। और यह ईमान का निहायत ही कमजोर दर्जा है। (मिश्कात जि. 2 स 436)

और एक हदीस में यह भी आया है कि कोई आदमी किसी कौम में रह कर गुनाह का काम करे और वह कौम कुदरत रखते हुए भी उस आदमी को गुनाह से न रोके तो अल्लाह तआला उस एक आदमी के गुनाह के सबब पूरी कौम को उनके मरने से पहले अजाब में मुब्तला फरमाएगा। (मिश्कात जि. 2 स. 437)

गुनाहों से दुनियावी नुकसान:- गुनाहों से नुकसान आखिरत और अज़ाब जहन्नम की सजायें और कब्र में क़िस्म क़िस्म के अजावों में मुब्तला होना इससे तो हर मुसलमान बाक़िफ है। मगर याद रखो कि गुनाहों की नहूसत इन्सान को दुनिया में भी तरह तरह के नुकसान पहुंचते रहते हैं जिनमें से चन्द यह हैं। (1) रोज़ी कम होना (2) बलाओं का हुजूम होना (3) उम्र घट जाना (4) दिल में और बाज़ मरतबा तमाम बदन में अचानक कमज़ोरी पैदा होकर सेहत खराब हो जाना (5) इबादतों से महरूम हो जाना (6) अक्ल में फतूर पैदा हो जाना (7) लोगों की नज़रों में ज़लील व ख्यार हो जाना (8) खेतों और बाग़ों की पैदावार में कमी हो जाना (9) नेमतों का छिन जाना (10) हर वक्त दिल का परेशान रहना (11) अचानक ला इलाज बीमारी में मुब्तला हो जाना (12) अल्लाह तआला और उसके फरिश्तों और उसके नेक बन्दों की लानतों में गिरफ्तार हो जाना (13)

चेहरे से ईमान का नूर निकल जाने से चेहरे का वे रौनक हो जाना (14) शर्म व गैरत का जाता रहना (15) हर तरफ से जिल्लत, रूसवाईयों और नाकामियों का शिकार हो जाना (16) मरते वक़्त मुंह से कलमा न निकलना वगैरा गुनाहों की नहूसत से बड़े बड़े दुनियावी नुकसान हुआ करते हैं।

हर गुनाह की दस बुराईयां हैं:-

गुनाह से दस बुराईयां होती हैं। (1) जब बन्दा कोई गुनाह करता है तो अल्लाह तआला को गुस्सा दिलाता है और वह अपने गुस्सा को इस्तेमाल करने पर क़ादिर है। (2) गुनहगार इब्लीस मलउन को खुश करता है। (8) गुनाह के सबब जन्नत से दूर हो जाता है। (4) दोज़ख़ के क़रीब हो जाता है। (5) इसने अपनी जान को तकलीफ पहुंचाई। (6) अपने बातिन को नापाक कर दिया (7) अपने मुत्तालिका फरिश्तों को अज़ियत पहुंचाई (8) हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ग़मगीन किया। (9) अपने गुनाह पर आसमान ज़मीन और दिगर मख़्लूक़ात को गवाह बनाया (10) उसने अज़्मते इन्सानियत की बेक़दरी और रब तआला की नाफरमानी की। (तफ़सील के लिये देखें हमारी किताब "गुनाह और अज़ाबे इलाही")
।

दुनियादारी का नाम ही गुनाह है

मुसलमानों की परेशानी दुनियादारी के वजह से: कुरआन में अल्लाह फरमाता है : **"यही (दुनियादार) लोग हैं जिन्होंने खरीद (अपना) ली आखिरत के बदले दुनिया की जिन्दगी तो उनसे ना आजाब हल्का किया जाएगा और ना वह (उसे) मदद किए जाएंगे"** (सुरह: बकरा, आयत न 86)

दुनिया की मुहब्बत सब से बड़ा गुनाह है:-

अल्लाह तआला ने हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ वही की ऐ मूसा!

दुनिया की मुहब्बत में मशगूल न होना, मेरी बारगाह में इस से बड़ा कोई गुनाह नहीं है। रिवायत है कि हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम एक रोते हुए शख्स के पास से गुजरे, जब आप वापस हुए तो वह शख्स वैसे ही रो रहा था, मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से अर्ज़ किया या अल्लाह! तेरा बन्दा तेरे डर से रो रहा है, अल्लाह तआला ने कहा, ऐ मूसा! अगर आँसू के रास्ते उस का दिमाग़ बाहर निकल आए और उसके उठे हुए हाथ टूट जायें तब भी मैं उसे नहीं माफ करूँगा, क्योंकि यह दुनिया से मुहब्बत रखता है। *(मुकाशिफतुल कुलूब, बाब 31)*

दुनिया की मुहब्बत तमाम गुनाहों की जड़ है :-

हदीस : दुनिया की मोहब्बात तमाम गुनाहों की जड़/असल है।

गुनाह शैतान कराता है

कुरआन : क़सम है मैं (शैतान) ज़रूर उन्हें (इंसानो को) बहकादुंगा और ज़रूर उन्हें आरजुऐं दिलाऊंगा और ज़रूर उन्हें कहूंगा कि वो चौपायों के कान चीरेंगे और ज़रूर उन्हें कहूंगा कि वो अल्लाह की पैदा की हुई चीज़ें बदल देंगे और जो अल्लाह को छोड़कर शैतान को दोस्त बनाये वह सलीम टोटे में पड़ा (सुरह : निसा, आयात न 119)

परहेजगारी सीधा रास्ता है

कुरआन : यह (परहेजगारी) है मेरा सीधा रास्ता तो इसपर चलो, और दुसरी राहें न चलो कि तुम्हें उसकी राह से जुदा कर देंगी यह तुम्हें हुक्म फ़रमाया कि कहीं तुम्हें परहेज़गारी मिले (सूरह अनाम, आयत न 153)

शैतान के रास्ते

हज़रते अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमारे सामने एक लकीर खीची और फ़रमाया यह अल्लाह का रास्ता है, फिर आपने उस लकीर के दायें बायें

कुछ और लकीरें खींची और फरमाया यह शैतान के रास्ते हैं जिन के लिए वह लोगों को बुलाता रहता है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 16, पेज 107)

शैतान के 4, खास रास्ते

खुदा तआला ने शैतान को जब अपनी बारगाह से निकाल दिया और उसे मरदूद व मलऊन कर दिया तो शैतान ने खुदा से कहा कि मुझे क्यामत तक के लिए मुहलत दे, खुदा ने फरमाया अच्छा मैंने मुहलत दी, शैतान ने मुहलत मिलने का वअदा लेकर फिर कसम खाकर कहा कि मैं सीधे रास्ते पर बैठ जाउँगा तेरे बंदों आदम की औलाद को चारों तरफ से घेर लूँगा, इस तरह उन पर सामने से भी हमला कर दूँगा, पीछे से भी, और उन के दाहिने और उन के बाएं से भी उन पर हमला आवर होंगा, और उन्हें तेरे शुक्र गुज़ार बन्दे न रहने दूँगा। खुदा तआला ने फरमाया, मलऊन तू यहाँ से निकल जा! और जा लोगों को बहका, मेरा भी यह एलान है जो तेरे कहे पर चला में उसे भी तेरे साथ जहन्नम में दाख़िल करूँगा। (कुरअन पा:8, रू. 6)

गौर व फ़िक्र : मेरे (मुसन्निफ) ईल्म के मुताबिक शैतान जो चारो तरफ से हमलावार की बात कही उसमें एक तरफ **दौलत** है जिसका लालच देकर मुसलमानों को दीन से दूर कर दिया है , दूसरी **औरत** है जिसके जरिये शैतान मर्दो को गुनाह कराने में कामयाब रहा है खासकर बदकारी , तीसरी **शोहरत यानी खुद को बेहतर समझना या दिखावा** है जिसे अपनावा कर मुसलमानों को सुन्नत से दूर कर दिया है आज आप देख रहै है, चौथी **ख़्वाहीसात यानी लंबी उम्मीदे** है जिसके वजह से मुसलमान मौत, आाखिरत और अल्लाह को भूल बैठा है ।

वासवास का दरवाजा इंसान के दिल में: इमाम सुयूती इब्ने अबिददुनिया हज़रत यहयाह बिन अबी काशिर से रिवायत करते है वो फरमाते है के इंसान के सीने(दिल) में वासवासा का एक दरवाजा है जिस से (शैतान) वासवासा डालता है।`(जिन्नो की दुनिया , हदीस 270)

इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाअलैह अवने किताब मुकाश्फतुल कुलूब बाब न 16 में लिखतें है :

इन्सान का दिल एक किला है

इन्सानी क़ल्ब की मिसाल एक किला जैसी है और शैतान एक दुश्मन है जो किला पर हमला करके उस पर कब्जा जमाना चाहता है, किला की हिफाजत दरवाजों को बन्द किये बगैर और तमाम रास्तों और सूराखों की निगरानी के बगैर नामुमकिन है और यह फरीजा वही सर अंजाम (पूरा करना) दे सकता है जो उन रास्तों से अच्छी तरह वाकिफ हो। लिहाजा दिल को शैतानी वसवसों के हमले से महफूज रखना हर अक्लमन्द के लिए जरूरी ही नही बल्कि एक फर्जे ऐन है, चूँकि शैतान के हमले का मुकाबला उस वक्त तक नामुमकिन है, जब तक उस के तमाम रास्तों की जानकारी न हो। लिहाजा उन रास्तों की जानकारी सबसे पहली जरूरत है और यह रास्ते इन्सान ही के पैदा किये हुए होते हैं, जैसे गुस्सा, शहवत, क्योंकि गुस्सा अक्ल को खत्म कर देता है लिहाजा जब अक्ल कम हो जाती है तो शैतानी लश्कर इन्सान पर जबरदस्त हमला कर देता है, जैसे ही इन्सान गजबनाक होता है, शैतान उस से ऐसे खेलता है जैसे बच्चा गेंद से खेलता है।

एक बन्दए खुदा ने शैतान से पूछा, यह बतला तू इन्सान पर कैसे काबू पा लेता है?

शैतान ने कहा मैं उसे गुस्सा और उस की शहवत के वक्त जेर करता हूँ। शैतान के रास्तों में एक रास्ता हिर्स (लालच) और हसद का भी है क्यों कि हिर्स इन्सान को अंधा और बहरा कर देती है। लिहाजा शैतान उस फुर्सत को गनीमत समझते हुए तमाम बुराईयो को हिर्स के सामने बेहतरीन अन्दाज में पेश करता है और वह उसे खूबियाँ समझ कर कबूल करता चला जाता है।

ग़ाफ़िल इंसान का दिल शैतान का घर है

खुदा तआला ने शैतान को हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की ख़ातिर जब अपनी बारगाह से निकाल दिया तो शैतान ने खुदा से दरख्वास्त की कि इलाही तूने मुझे मरदूद तो कर ही डाला है अब इतना कर कि मुझे आदम की औलाद पर पूरी कुदरत और क़ाबू दे दे, ताकि उन्हें मैं गुमराह कर सकूँ खुदा ने फ़रमाया जा तू उन पर काबू याफ़ता है और मैंने तुझे उन पर कुदरत दे दी कहने लगा, इलाही! कुछ और ज़्यादा कर फ़रमाया तू उन के मालों में शिरकत करले, यअनी फिजूलखर्ची करवा सकेगा कहने लगा कुछ और ज़्यादा कर, फरमायां जा उनके दिल तेरे रहने के घर होंगे! (नुज़हतुल मजालिस, जिल्द 2, पेज 31-32)

फिजूलखर्ची वाले शैतानों के भाई

अल्लाह फरमाता है : बेशक उड़ाने (फिजूलखर्ची) वाले शैतानों के भाई हैं और शैतान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है (सुरह: बनी इस्राएल, आयत न.27)

ग़ाफ़िल इंसान शैतान का साथी है

अल्लाह फरमाता है : **जिसे रतौंद (भुलना) आए रहमान के ज़िक्र से हम उस पर एक शैतान तैनात करें कि वह उसका साथी रहे** *(सुरह: जुखरूफ़, आयत न. 36)*

शैतान इन्सान के दिल में

सईद बिन मंसूर और अबू बकर बिन अबी दाऊ़द "ज़िम्मूल वसवसा" में हज़रत अ़रवह बिन रुवैम से रिवायत करते हैं के हज़रत ईसा बिन मरयम अलैहिस्लाम ने अपने परवरदिगार की बारगाह में अर्ज कि के उन (हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम) को इन्सानों में शैतान के रहने की जगह दिखाए चुनांचे अल्लाह ताअ़ला ने उन पर ज़ाहिर फरमा दिया तो हज़रत ईसा

अलैहिस्सलाम ने देखा कि शैतान का सर सांप की सिर की तरह है जिसने अपना सिर दिल के दहाने पर रखा हुआ है जब इंसान अल्लाह ताअ़ला का ज़िक्र करता है तो ये अपना सिर हटा लेता है और जब बंदा अल्लाह का ज़िक्र छोड़ देता है तो शैतान उसे आज़माता है और वसवसे डालने लगता है याअ़नी उसकी तरफ वापिस आ कर वसवसे डालता है।

ग़ाफिल आदमी के दिल में शै़तान वसवसा डालता है:-

इब्ने अबीददुनिया "मकाईदुश्शशै़तान" में और अबु याअ़ला और बैहक़ी "शुबउल इमान" में हज़रत अनस रदि अल्लाहु अन्ह से रिवायत करते हैं वो फरमाते हैं के नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया (तर्जमा: बेश़क शैतान ने अपनी सूंढ़ इंसान के दिल पर रखी हुई है जब आदमी अल्लाह ताअ़ला का ज़िक्र करता है तो वो पीछे हट जाता है और जब अल्लाह को भूल जाता है तो शै़तान उसके दिल में चुपके चुपके बातें करता है।

शैतान दिल में कब्जा करता है

रिवायत है कि जब हजरते नूह अलैहिस्सलाम ने खुदा के हुक्म से पहले हर जिन्स का एक-एक जोड़ा कश्ती में सवार किया और खुद भी सवार हुये तो आपने एक अजनबी बूढ़े को देख कर पूछा, तुम्हें किस ने कश्ती में सवार किया है? उस ने कहा, मैं इसलिए आया हूं कि आप के साथियों के दिलों पर कब्जा कर लूँ, उस वक्त उन के दिल मेरे साथ और बदन आप के साथ होंगे।

हजरते नूह अलैहिस्सलाम ने फरमाया ऐ अल्लाह के दुश्मन! ऐ मलऊन निकल जा इबलीस बोला ऐ नूह! पाँच चीजे ऐसी है जिन से मैं लोगों को गुमराही में डालता हूँ, तीन तुम्हे बतलाऊँगा और दो नही बतलाऊँगा। अल्लाह तआला ने हजरते नूह अलैहिस्सलाम की तरफ वही की, आप कहें कि मुझे तीन से आगाही की जरूरत नही तू मुझे सिर्फ वही दो बतला दे। शैतान बोला, वह दो ऐसी है जो मुझे कभी झूटा नही करती और न ही कभी नाकाम लौटाती है और उनही से मैं लोगों को तबाही के दहाने पर

ला खड़ा करता हूं। उन मे से एक **हसद (जलन)** है और दूसरी **हिर्स (लालच)** है। इसी हसद की वजह से तो मैं रांदये बारगाह और मलऊन हुआ हूँ और हिर्स के सबब आदम अलैहिस्सलाम को ममनूआ चीज की ख्वाहिश पैदा हुई और मेरी आरजू पूरी हो गई।

शैतान का एक रास्ता इन्सान का पेट भरा होना है अगरचे यह हलाल रोजी से ही भरा गया हो क्योंकि पेट का भर जाना शहवतों (ख्वाहिशों) को उभारा करता है और शैतान का यही हथियार है।

पेट भर का खाना भी इन्सान को शैतान के फन्दे में फंसाता है।

रिवायत है कि हज़रते यहया अलैहिस्सलाम ने एक बार शैतान को देखा वह बहुत से फन्दे उठाये हुए था आप ने पूछा. यह क्या है? शैतान ने जवाब दिया यह वह फन्दे हैं जिन से में इन्सान को फासता हूँ। आपने पूछा, कभी मुझ पर भी तूने फन्दा डाला है? शैतान ने कहा- आप जब भी पेट भर खा लेते हैं मै आप को जिक्र व नमाज से सुस्त कर देता हूँ। आप ने पूछा और कुछ? कहा बस तब आपने कसम खाई कि मैं आइन्दा कभी पेट भर कर नही खाऊँगा। शैतान ने भी जवाब में कसम खाई में भी आइन्दा किसी मुसलमान को नसीहत नही करूंगा।

शैतान का एक रास्ता माल व सामाने दुनिया पर दीवानगी है क्यों कि शैतान जब इन्सान का दिल इन चीजों की तरफ माइल देखता है तो उन्हें और ज्यादा खूबसूरत अन्दाज में उस के सामने पेश करता है और इन्सान को हमेशा मकानों की तामीर छत व दरवाजा की आराइश व जीबाइश (सजावट) में उलझाये रखता है और उसे खूबसूरत लिबास, अच्छी-अच्छी सवारियों और लम्बी उम्र की झूटी उम्मीदों में मुब्तला कर देता है और जब कोई इन्सान इस मंजिल पर पहुँच जाता है तो फिर उस की राहे खुदा पर वापसी दुशवार और मुश्किल हो जाती है, क्यों कि वह एक उम्मीद के बाद दूसरी उम्मीद बढ़ाता चला जाता है। यहाँ तक कि उस का वक्ते मुकर्रर आ जाता है और वह इसी शैतानी रास्ते पर चलते हुए और ख़्वाहिशों को पूरा करते हुए इस नापाइदार दुनिया से उठ जाता है।

शैतान का एक रास्ता लोगों से उम्मीदें रखना है। हजरते सफवान बिन सुलैम फरमाते है कि शैतान जनाब अब्दुल्लाह बिन हन्जला के सामने आया और कहने लगा, मैं तुम को एक बात बताता हूं, इसे याद रखना। उन्हों ने कहा मुझे तेरी किसी नसीहत की जरूरत नही है। शैतान ने कहा तुम सुनो तो सही अगर अच्छी बात हो तो याद रखना वरना छोड़ देना बात यह है कि अल्लाह तआला के सिवा किसी इन्सान से अपनी आरजूओं का सवाल न करना और यह देखना कि गुस्से में तुम्हारी क्या हालत होती है क्यों कि मैं गुस्से की हालत में ही इन्सान पर काबू पाता हूँ।

शैतान का एक रास्ता साबित कदमी की इन्सान में कमी और जल्द बाजी की तरफ उस का झुकाव है। फरमाने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) है, जल्द बाजी शैतानी काम है और सब्र य बुर्दबारी अल्लाह की देन है।

जल्दबाजी में इन्सान को शैतान ऐसे तरीके से बुराई पर माइल करता है कि इन्सान महसूस ही नही करता। रिवायत है कि जब हजरते ईसा अलैहिस्सलाम की पैदाइश हुई तो शैतान के तमाम शागिर्द उस के यहां जमा हुए और कहने लगे, आज तमाम बुतों ने सर झुका लिए हैं, शैतान ने कहा मालूम होता है कि कोई बड़ा हादसा हो गया है। तुम यहीं ठहरो मैं मालूम करता हूँ, चुनान्चे उस ने पूरब व पच्छिम का चक्कर लगाया मगर कुछ भी पता न चला, यहाँ तक कि वह हजरते ईसा अलैहिस्सलाम की जाए विलादत पर पहुँचा और यह देख कर हैरान रह गया कि फरिश्ते हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम को घेरे हुए हैं। वह वापस अपने शागिर्दो के पास पहुँचा और कहने लगा कि कल की रात एक नबी की पैदाइश हुई है। मैं हर बच्चे की पैदाइश के वक्त मौजूद होता हूं मगर मुझे इन की पैदाइश का बिल्कुल इल्म नही हुआ। लिहाजा इस रात के बुतों की इबादत (पूजा) खत्म हो जाएगी इस लिए अब इन्सान पर जल्दबाजी और लापरवाही के वक्त हम्ला करो (इन हथियारों से काम लो)

एक रास्ता जर व जीमन का है क्यों कि जो चीज इन्सान की जरूरत से ज्यादा हो वह शैतान का ठिकाना बन जाती है। हज़रत सावितुलबनानी रज़ियल्लाहु अन्हु का कौल है कि जब अल्लाह तआला ने नबीए करीम

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मबऊस फरमाया तो शैतान ने अपने शागिर्दो से कहा आज कोई बड़ा वाकिआ रूनुमा हुआ है, जाओ देखो तो क्या हाल है? वह सब तलाश में निकले मगर नाकाम लौट कर कहने लगे हमें तो कुछ भी मालूम न हो सका। शैतान ने कहा तुम ठहरो मैं अभी तुम्हे आकर बताता हूँ, शैतान ने वापस आकर बताया कि अल्लाह तआला ने (हजरत) मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को मबऊस फरमाया है। चुनान्चे शैतान ने अपने तमाम चेलों को सहाबए किराम (रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अजमईन) के पीछे लगाया कि उन लोगों को गुमराह करें। मगर वापस जाकर कहते उस्ताद! हम ने आज तक ऐसी नाकामी का मुँह नही देखा, जब यह नमाज शुरू करते हैं तो हमारा सब किया धरा खाक में मिल जाता है, तब शैतान ने कहा घबराओ नही अभी कुछ और इन्तेजार करो जल्द ही उन पर दुनिया अरजों (सस्ती) और फ़ावों (ज्यादा) हो जाएगी और उस वक्त हमें अपनी उम्मीदें पूरी करने का ज्यादा मौका मिल जाएगा।

रिवायत है कि हजरत ईसा अलैहिस्सलाम एक दिन पत्थर से टेक लगाये हुए थे। शैतान का वहाँ से गुजर हुआ उसने कहा ऐ ईसा (अलैहिस्सलाम) तुमने दुनिया को मरगूब (पसन्दीदा) समझा है? ईसा अलैहिस्सलाम ने उसे पकड़ लिया और उस की गुड़ी में मुक्का मार करके फरमाया, यह लेजा, यह तेरे लिए दुनिया है। एक रास्ता फक्र व फाका का डर और बखीली है। क्यों कि यह चीजें इन्सान को अल्लाह के रास्ते में खर्च करने से रोकती हैं और उसे माल व दौलत जमा करने और दर्दनाक अजाब की दावत देती है। बुख़ल का सब से बड़ा नुकसान यह होता है कि बखील माल व दौलत हासिल करने के लिए बाजारों के चक्कर लगाता रहता है जो कि शैतान की आमाजगाहें (ठिकाने) है। (शैतान अपनी जगहों पर घात लगाये बैठा होता है।)

एक रास्ता मजहब से नफरत, ख्वाहिशात की पैरवी अपने मुखालिफीन से बुग्ज व हसद और उन्हें हकारत (गिरी नजर से देखना है और यह चीज चाहे आबिद हो या फासिक सब को हलाक कर देती है। हजरत हसन

रज़ियल्लाहु अन्हु का इरशाद है कि शैतान ने कहा मैंने उम्मते मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गुनाहों की भूल भुलैयों में भटकाया मगर उन्होंने इस्तिगफार से मुझे शिकस्त दे दी. तब मैं उन्हें ऐसे गुनाहों की तरफ ले गया जिन के लिए वह कभी इस्तिगफार नही करते और वह उन की नाजाइज़ ख्वाहिशात है और शैतान की यह बात हकीकत में बिल्कुल सचाई है क्यों कि आम तौर पर लोग यह नही समझ सकते कि यह ख्वाहिशात ही अस्ल में गुनाहों की तरफ रागिब (खींचना) करती है लिहाजा वह अल्लाह से इस्तिगफार करे। एक रास्ता मुसलमानों के बारे में बदगुमानी का है लिहाजा इस से और बद-बख्तों की तुहमतों से बचना चाहिए। अगर आप कभी किसी ऐसे इन्सान को देखें जो लोगों के ऐब ढूँडता है और बद गुमानियाँ फैलाता है तो समझ लीजिए कि वह शख्स खुद ही बद बातिन है और यह अमर उस की बद बातिनी के इजहार का एक तरीका है लिहाजा हर मुसलमान के लिए जरूरी है कि वह शैतान के दाखिल होने के इन तमाम रास्तों को बन्द कर दे और अल्लाह तआला की याद से अपने दिल को एक महफूज किला बना ले। (मुकाशफतुल कुलूब , बाब 16 , पेज 109)

'इंसान के दिल मे पहुचने के लिए शैतान के दरवाज़े:'

कुछ बुजूर्ग का कहना है मैने इस बात पर ग़ौर व फिक्र किया कि शैतान इंसान के दिल मे किन दरवाज़ों से आता है तो मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि इंसान तक आने के लिए शैतान 10 दरवाज़ों को इस्तेमाल करता है।

'पहला दरवाजा' : हिर्स (एक दूसरे से आगे बढ़ना) और बदगुमानी के रास्ते से आता है चुनांचे मैने इसका मुक़ाबला ज़ाते इलाही पर भरोसे और क़नाअत (सब्र) के ज़रिये किया। मैंने सोचा कि कुरान की कौन सी आयात इसकी ताईद करती है तो मैंने इस आयत को पाया:

"और ज़मीन पर चलने वाला कोई ऐसा नही जिसका रिज़्क़ अल्लाह के ज़िम्मा ए करम पर न हो"

मैने इस तरह शैतान की कमर तोड़ दी।

'दूसरा दरवाज़ा:' मैन देखा कि वो तवील ज़िन्दगी (गफलत) और लंबी उम्मीदों का दरवाज़ा इस्तेमाल करता है। मैंने उसका मुकाबला मौत के अचानक आ जाने से किया। मैंने कहा कि देखो कौन सी आयत इसकी ताईद करती है तो इस आयत को मैंने इसकी ताईद में पाया:

"और कोई जान नही जानती कि वो किस ज़मीन में मरेगी"

'तीसरा दरवाज़ा:' मैने देखा कि शैतान दुनियावी सामान से आराम तलबी (Facility) के दरवाज़े से आता है सो मैने ज़वाले नेमत और बुरे हिसाब के ख़ौफ़ से मुक़ाबला किया जिसकी ताईद मुझे इस आयते मुक़द्दसा से मिली:

" जो दुनियाँ की ज़िन्दगी और उसकी आराइश चाहता है हम उसे दुनियाँ में पूरा फल देंगे और कुछ भी कमी न करेंगे लेकिन आखिरत में उनका कोई हिस्सा नहीं होगा और उनके लिये आग (जहन्नम) है और उनके आमाल जो वहाँ (दुनिया मे) करते थे सब अकारत (बर्बाद) गये। (सुरह हूद, आयत न. 15-16)

सो मैंने जिस्म को आराम पहुंचाने वाले सामान से परहेज करके उस दरवाज़े से आने से भी उसकी उम्मीदों का बांध तोड़ दिया।

'चौथा दरवाज़ा:' मैने ग़ौर किया तो इस नतीजे पर पहुंचा कि वो खुद पसंदी (खुद की तारीफ) का दरवाज़ा भी इस्तेमाल करता है सो मैंने एहसानाते इलाही और आख़िरत के ख़ौफ़ से उसका मुक़ाबला किया। इस आयत से इसकी ताईद मुझे मिली:**"तो उनमें से कोई बदबख्त है और कोई खुशनसीब"**

मुझे नहीं मालूम कि मेरा सुमार किस गिरोह में हो सो उस तरह भी उसकी उम्मीद पाश-पाश हो गई

'पांचवी दरवाजा:' मैंने गौर व फिक्र किया तो देखा कि मुसलमान भाई

को हकीर जानने और उनकी इज्जत और एहतराम न करने के दरवाजे को भी व इस्तेमाल करता है सो मैंने मुसलमान भाइयों के हुकुकू और उनकी इज्जत व एतराम को अदा करके उसका मुकाबला करके उस दरवाजा को बंद कर दिया उसकी खुलासा मुझे उस फरमान ए इलाही से मिली " **हालांकि सारी इज्जत तो सिर्फ अल्लाह के लिए उसके रसूल के लिए और ईमान वालों के लिए है"** (अल मुनाफिकून, आयत न. 8) उस तरह मैंने यह रास्ता भी उसका बंद कर दिया

'छठा दरवाजा:' मैंने ग़ौर और फिक्र किया तो देखा कि वह हसद का दरवाजा भी इस्तेमाल करता है मैंने उसका मुकाबला मखलूक के दरमियान अल्लाह ताला की तकसीम, अदल और इंसाफ से किया जिसकी ताईद मैंने उस आयत तैयबा से पाई " **हमने उनमें उनकी जिन्दगी का सामान दुनिया की जिन्दगी में बाँटा और उनमें एक दूसरे पर दर्जो बलन्दी दी** "(सुरह: अल जुखरुफ़, आयत न. 32)

मैंने उसके साथ शैतान की उम्मीदों को खत्म कर दिया,.

'सातवां दरवाजा:' मैंने ग़ौर और फिक्र किया तो उस नतीजे पर पहुंचा की रियाकारी और लोगों से तारीफ सुनने को भी वह अपना दरवाजा बनाए बैठा है सो मैंने अखलाक नियत से उसका मुकाबला किया मुझे कुरान पाक की यह आयत उसके ताईद में मिली " **तो जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो तो उसे चाहिए कि नेक काम करें और अपने रब की बंदगी में किसी को शरीक ना करे** " (सुरह: अल काफ, आयत न. 110)

'आठवां दरवाजा :' मैंने गौर और फ़िक्र किया तो उस नतीजे पर पहुंचा की बुख्ल और कंजूसी के दरवाजे से शैतान इंसान तक पहुंचता है मैंने उसका मुकाबला उस तरह किया की जो कुछ मखलूक के हाथ में है वह सब फना खत्म होने वाला है और जो कुछ ख़ालिक के कुदरत वाली हाथ में है वह हमेशा और बाकी रहने वाला है, मैंने अल्लाह का उस फरमान से इसकी ताईद पाई " **जो तुम्हारे पास है हो चुकेगा (खत्म हो जाएगा)और जो अल्लाह के पास है हमेशा रहने वाला है**"(सुरह: नहल, आयत न 96)

'नवा दरवाजा :' मैंने गौर और फिक्र क्या तो देखा शैतान ख्वाहिशात और लालच का दरवाजा इस्तेमाल करता है मैंने लोगों से मायूसी और अल्लाह ताला की जांच पर भरोसा के जरिए उसका मुकाबला किया और उसके ताईद में यह आयत पाई " **और जो खुशनसीब है डरता रहता है अल्लाह पाक से, बना दिया है अल्लाह उसके लिए जन्नत का रास्ता** (सुरह: तलाक, आयत न. 2)।

'दसवां रास्ता:' मैंने गौर और फिक्र किया तो उस नतीजे पर पहुंचा कि शैतान तकब्बुर का दरवाजा इस्तेमाल करता है चुनांचे मैंने तवज्जो व इनकसारी से उसका मुकाबला किया और उस आयत से उसकी ताईद पाई "ऐ लोगों हमने तुम्हें एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम्हें शाखें और क़बीले किया कि आपस में पहचान रखो बेशक अल्लाह के यहाँ तुम में ज़्यादा ईज़्ज़त वाला वह जो तुम में ज़्यादा परहेज़गार हैं बेशक अल्लाह जानने वाला ख़बरदार है" (सुरह: हुजरात, आयत न. 13) (तंबीहूल गफीलिन, जिल्द 2, सफ़ा 416)

गुनाह कराने वाले शैतानी खानदान

कुरआन : ख़बरदार तुम्हें शैतान फ़ितने (मुसीबत) में न डाले जैसा तुम्हारे मां बाप को बहिश्त (स्वर्ग) से निकाला उतरवा दिये उनके लिबास कि उनकी शर्म की चीज़ें उन्हें नज़र पड़ी, बेशक वह (शैतान) और उसका कुम्बा (शयातीन) तुम्हें वहां से देखते हैं कि तुम उन्हें नही देखते बेशक हमने शैतानों को उनका दोस्त किया है जो ईमान नही लाते *(सुरह: अराफ, आयत न 27)*

हदीस : मकातिल ने बरिवायत जहरी बवासता उमर, हजरत आइशा से बयान किया कि उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा कराम एक रात हुजूर की तलाश में आए. उन सहाबा में हजरत अबू बकर सिद्दीक, हजरत उमर फारूक, हजरत उस्मान, हजरत अली, हजरत सलमान और अम्मार बिन यासिर शामिल थे। उन असहाब के पहुंचने पर रसूलुल्लाह बाहर तशरीफ लाए और हालत यह थी

कि बुखार की वजह से आप की मुबारक पेशानी पर पसीने के कतरात मोतियों की तरह चमक रहे थे फिर हुजूर ने अपनी मुबारक पेशानी पर हाथ फेर कर फरमाया: अल्लाह तआला मलऊन पर लानत करे आप ने तीन मरतबा फरमाया इसके बाद सरे अकदस झुका लिया, हजरत अली मुर्तजा ने अर्ज किया मेरे मां बाप आप पर कुरबान हों, इस वक्त आप ने किस पर लानत फरमाई? हुजूर ने फरमाया खुदा के दुशमन इब्लीस ख़बीस पर! उसने अपनी दुम दुबुर (पीछे के मकाम) में डाल कर सात अंडे निकाले और उनसे उसकी औलाद हुई फिर उनको बनी आदम के बहकाने पर उसने मामूर किया उन सात में से **एक का नाम मदहश** है जिस को उलमा (के वरगलाने) पर मुकर्रर किया गया चनान्चे वह उलमा को मुख्तलिफ ख्वाहिशात की तरफ ले जाता है, **दूसरे का नाम हदबस** है जो नमाज़ पर मुकर्रर हैं नमाजियों को जिक्रे इलाही से हटा कर इधर उधर लहव व लइब में लगा देता है और उनको जमाही और औघ में मुब्तला कर देता है। पस इस तरह नमाज़ियों में से कोई सो जाता है और जब कोई कहता है कि सो गए? तो वह कहता है नही मैं तो नही सोया! इस तरह वह नमाज में बगैर वजू के रह जाता है कसम है उस जात की जिस के कब्जा में मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जान है कि उनमें से कोई नमाज़ी इस हाल में निकलता है कि उसको आधी नमाज क्या बल्कि चौथाई नमाज़ के दसवें हिस्से का भी सवाब नही मिलता बल्कि ऐसी नमाज का गुनाह सवाब से बढ़ जाता है।**शैतान की तीसरी** औलाद का नाम **जलबनून है**। बाजारों में मुकर्रर है वह लोगों को कम तोलने और झूट बोलने पर उकसाता है, माल बेचते वक्त दुकानदारों को माल की झूटी तारीफ पर उभारता है ताकि अपना माल फरोख्त कर के रोजी कमाए। **चौथे का नाम बतर्रर** है वह लोगों को गिरेबान चाक करने, मुंह नोचने और मुसीबत के वक़्त वावैला कराने पर मुकर्रर है (लोग मुसीबत पड़ने पर हाए वावैला करते हैं) ताकी मुसीबत के अज व सवाब को (फरयाद व गां करा के) जाया करा दे। **पांचवें का नाम मनशूत** है यह दरोग गोई, चुगुल खोरी, तअन व तशनीअ करने पर मुकर्रर है। **छटे का नाम वासिम है**। यह शर्मगाहों पर मुकर्रर है। चुनान्चे यह मर्द और औरत की शर्मगाहों पर फूंक मारता है ताकि वह एक दूसरे के साथ जिना में

मुब्तला हों, **सातवें का नाम अऊर है,** यह चोरी पर मामूर है यह चोर से कहता है कि (माल चोरी कर) कि चोरी तेरे फाका को दूर कर देगी, तेरा कर्ज अदा हो जाएगा और तेरे तन पोशी भी हो जाएगी बाद को तौबा कर लेना, लिहाजा हर मुसलमान का का फर्ज़ है कि वह किसी हालत में भी शैतान से गाफिल न रहे और अपने कामों में उससे बे खौफ हो कर न बैठ जाए। एक हदीस में आया है कि हजुर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि वजू पर एक शैतान मुकर्रर है जिस का नाम वलहान है तुम उससे अल्लाह की पनाह मांगो। नमाज़ की सफ़ों में मिल कर खड़े होने की भी आप ने हिदायत फ़रमाई है ताकि शैतान बकरी के बच्चे की (हज़फ़) की तरह सफ़ों में न घुस आए।

हजफ़ हिजाज़ की उन छोटी छोटी बकरियों को कहते हैं जिनके न दुम होती है और न कान, ऐसी बकरियां यमन के मकाम जर्श में पैदा होती हैं।

हज़रत उसमान बिन आस ने फरमाया कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया मेरी नमाज़ और मेरी किरअत में शैतान ख़लल डालता है, हुजूर ने इरशाद फरमाया, उसका नाम खनज़ब है जब तुम को उसका एहसास हो तो अल्लाह की पनाह मांगो (अऊज़ोबिल्लाह पढ़ो) और बाईं तरफ को तीन बार थुतकार दो। हज़रत उसमान ने अर्ज किया कि मैंने ऐसा ही किया है और अल्लाह ने उसको मझ से दूर कर दिया है।

एक मशहूर हदीस में रसूलुल्लाह का इरशाद इस तरह आया है कि तुम से हर एक के लिए एक शैतान है सहाबा कराम ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह क्या हुजूर के लिए भी है? फरमाया मैं भी उसके बगैर नही मगर अल्लाह तआला ने उसके मुकाबला में मेरी मदद फ़रमाई है और मुझे उससे महफूज़ व मामून कर दिया है। एक दूसरी हदीस में है कि हुजूर ने फरमाया तुम में से हर एक पर उसका एक जिन्न साथी मुकर्रर है अर्ज किया गया कि क्या हुजूर भी उसके बगैर नही हैं? हुजूर ने इरशाद फरमाया हां मैं भी उसके बगैर नही मगर अल्लाह ने उसके मुकाबला में मेरी मदद फरमाई है और वह मेरा ताबेअ हो गया है अब मुझे वह नेकी के

सिवा मशवरा नही देता। कुछ और

मन्कूल है कि जब अल्लाह तआला ने अपनी बारगाह से इब्लीस को निकाल दिया तो उसकी शैतान बीवी को उसी की बाई पसली से पैदा किया जिस तरह हव्वा को हज़रत आदम से पैदा किया गया था। फिर उस औरत से शैतान ने जिमाअ किया वह हामला हो गई और उसने इकत्तीस अन्डे दिये उसकी सारी नस्ल की असल यही 31 अन्डे हैं फिर उस से शैतान की तमाम जुरियत फैली जिस से खुश्की और समन्दर भर गए यहां तक कि हर अन्डे से दस हजार नर व मादा पैदा हुए जिन्होंने पहाड़ों पर, जज़ीरों वीरानों, जंगलों, दरियाओं, रेगिस्तानों, बयाबानों, चश्मों, चौराहों, हम्मामों, पाखानों, फुरजों, जंग व ऋृजदाल के मैदानों, करना फूंकने के मैदानों, क़ब्रस्तानों, घरों, काठियों, बहुओं के खेमों गर्ज़ कि जुमला जगहों को भर दिया।

सीधे रास्ते पर कायम रहो

अबु हुरैरा रदिअल्लाहु अन्हु फरमाते है के एक मर्तबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम सहाबा की एक जमाअत के पास से गुजरे वो लोग हंस रहे थे, आप(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया जो कुछ मैं जानता हूँ (यानी अल्लाह के कहर वो गज़ब के बारे में) अगर तुम भी जानते हो बहुत कम हंसते और बहुत ज्यादा रोते, तो हुजूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के पास हज़रत जिब्राइल अलैहिस्सलाम तसरीफ लाए और इरशाद फ़रमाया दुरुस्त (इस्लामी) रास्ते इख्तियार किए रहो तुम्हारे लिए(रहमत और मगफिरत और जन्नत की) खुशखबरी है। (सही इब्ने हिब्बान)

अल्लाह तआला फरमाता है

तो क्या तुम शैतान और उसकी जुरियत को मेरे सिवा दोस्त बनाते हो, हालांकि वह तुम सब का दुश्मन है और ज़ालिमों के लिए कितना बड़ा बदला है।

हलाकत है उन लोगों के लिए जो शैतान और उसकी जुरियत की इताअत, अल्लाह की इबादत के बजाए इख़्तियार करते हैं। बिला शुबहा उन्ही के साथ यह भी दोज़ख़ में रहेंगे बशर्ते कि उन्होंने तौबा न की, नसीहत को क़बूल नही किया अपने नफ़्स की रिहाई और ख़लासी की कोशिश न की। बुरे आमाल, बुरे रूफ़का और शैतानी लशकर को न छोड़ा पस लाज़िम है अल्लाह की तरफ रूजूअ करे और इताअते इलाही की पाबन्दी करे, उन औलमा और अहले मारफत की सोहबत इख़्तियार करे जो अल्लाह के हुक्म के मुवाफिक अमल करने वाले और अल्लाह की तरफ बुलाने के वाले, उसकी रज़ा की तरफ रागिब करने वाले, उसके फ़ज़्ल के उम्मीदवार और उसके कहर से डरने वाले हैं और जिन को अल्लाह की पकड़ का ख़ौफ रहता है, दुनिया से रगबत नही रखते, आख़रत के तालिब रहते हैं। जो रातों को नमाज़ों में खड़े रहने वाले दिन को रोज़ा रखने वाले और गुज़िश्ता बेकार ज़िन्दगी पर नौहा करने वाले, आइन्दा के लिए तौबतुन नसूह करने वाले, तमाम गुनाहों और ख़ताओं से तौबा करने वाले, खालिके काइनात पर तवक्कुल करने वाले, शब व रोज़ के औकात में इबादत करने वाले हैं। यही वह लोग हैं जो तौक़ व सलासिले दुनियवी मसाइब और जहन्नम की आग की ख़ौफ़ से महफूज़ व मामून हैं इस लिए कि उन्होंने शैतान की पैरवी से मुंह मोड़ा और ज़ाहिर व बातिन में अल्लाह के अहकाम की पैरवी की। पस जज़ा दने वाला उनके आमाल के मुताबिक उनको जज़ा और एहसान फरमाने वाला अल्लाह उनको सवाब अता फरमाएगा वैसा ही सवाब जैसा कि उसने खुद इरशाद फ़रमाया है।

पस अल्लाह तआला ने उन लोगों को उस दिन के शर से बचा लिया, खुशहाल ताज़गी और सुरूर उनके सामने लाया और सब्र रखने के एवज़ उनको जन्नत और हरीर का लिबास अता फ्रमाया ।

गुनाह जहालत की वजह से

हिकायत : एक रोज़ अस्र के बाद शैतान ने अपना तख्त बिछाया, और शयातीन ने अपनी अपनी कार गुज़ारी की रिपोर्ट पेश करना शुरू की किसी ने कहा कि मैंने इतनी शराब पिलाई, किसी ने कहा मैंने इतने ज़िना

कराए, शैतान ने सब की सुनी, एक ने कहा कि मैने एक तालिबे इल्म को पढ़ने नही दिया, शैतान सुनते ही तख़्त पर से उछल पड़ा और उस को गले से लगा लिया और कहा, "अन्ता तूने काम किया तूने काम किया, दूसरे शयातीन यह कैफियत देख कर जल गए कि उन्होंने इतने बड़े काम किये, उन पर तो शैतान खुश नहीं हुआ और इस मअमूली से काम करने वाले पर इतना खुश हो गया। शैतान बोला तुम्हें नहीं मालूम जो कुछ तुमने किया सब इसी का सदक़ा है उन्हें इल्म होता तो वह गुनाह नहीं करते, लो मैं तुम्हें दिखाता हूँ, वह कौनसी जगह है जहाँ सब से बड़ा आबिद रहता है मगर वह आलिम नहीं और वहाँ एक आलिम भी रहता हो तो उन्होंने एक मक़ाम का नाम लिया, सुबह को सूरज निकलने से पहले शयातीन को लिए हुए शैतान उस मकाम पर पहुँचा, शयातीन छुपे रहे और यह इन्सान की शक्ल बनकर रास्त में खड़ा हो गया, आबिद साहिब की नमाज़ तहज्जुद के बद फर्ज़ के वास्ते मस्जिद की तरफ तशरीफ लाए रास्ते में शैतान खड़ा था, अस्सलामु अलैकुम, व अलैकुम सलाम के बाद कहा हज़रत मुझे एक मसला पूछना है आबिद साहिब ने कहा जल्दी पूछों, मुझे नमाज़ के लिए मस्जिद में जाना है, शैतान ने जेब से एक छोटी सी शीशी निकाली और पूछा, क्या अल्लाह क़ादिर है कि उन सारे आसमानों और ज़मीनों को इस छोटी सी शीशी में दाखिल करदे, आबिद साहिब ने सोचा और कहा कहाँ इतने बड़े आसमान और ज़मीन और कहाँ यह छोटी सी शीशी बोला बस यही पूछना था तशरीफ़ ले जाईए और शयातीन से कहा, देखो मैंने इस की राह मार दी उसको अल्लाह की कुदरत पर ही ईमान नहीं इबादत किस काम की, फिर सूरज निकलने के क़रीब एक आलिम जल्दी जल्दी करते हुए तशरीफ़ लाए शैतान ने कहा अस्सलामु अलैकुम मुझे एक मसला पूछना है आलिम ने फ़रमाया, पूछो जल्द पूछो नमाज़ का वक़्त कम है, उसने शीशी दिखाकर वही सवाल किया, आलिम साहिब ने फ़रमाया मलऊन तू शैतान मालूम होता है, अरे वह क़ादिर है कि यह शीशी तो बहुत बड़ी है एक सुई के नाके के अंदर अगर चाहे तो करोड़ों आसमान व ज़मीन दाखिल करदे, "इन्नल्लाह अला कुल्लि शै इन क़दीर आलिम साहिब के तशरीफ़ ले जाने के बद शैतान ने शयातीन से कहा, देखा यह इल्म ही की बरकत है और वह जिसने इल्म हासिल करने वाले

को पढ़ने से रोका उसने बहुत बड़ा काम किया ताकि वह न पढ़े और न आलिम बन सके। (मलफ़ूज़ाते आला हज़रत जि:3, स:21-22)

सबक: अब तो शैतान को खुश करने वाले न बनो, दीन की किताबों को पढो, शैतान से इल्म के ज़रिये लड़ो, ईमान बचाने के लिए दीन का इल्म बहुत बड़ी ज़रूरी और मुफीद चीज़ है, शैतान ऐसे इल्म वालो से बहुत डरता है क्यों कि इल्म वाले अपने इल्म की मदद से शैतान के जाल में नहीं फंसते, बिगैर इल्म के जुहद व इबादत भी ख़तरे में रहती है, खूद हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है "फ़क़ीहुन वाहिदुन अशहु अल-शैतानि मिन-अल्फि आबिदिन" यअ़्नी शैतान पर एक आलिम हज़ार आबिद से भी ज़्यादा भारी है।"

बाब 2

तौबा का बयान

तौबा से मुतअल्लिक अल्लाह का फ़रमान

आयत 1 : छोड़ दो खुला और छुपा गुनाह करना, वो जो गुनाह करते हैं जल्द ही अपनी किये की सज़ा पाएंगे (सूरह- अनआम, आयत न 120)

आयत 2: मगर वो जो तौबह करें और संवारें और ज़ाहिर करें तो मैं उनकी तौबह कुबूल फ़रमाऊंगा और मैं ही हूँ बड़ा तौबह कुबूल फ़रमाने वाला मेहरबान (सूरह- बक़रह, आयत न 160)

आयत 3: अल्लाह से माफ़ी मांगो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(सूरह- बक़रह, आयत न 199)

आयत 4 : बेशक अल्लाह पसन्द करता है बहुत तौबह करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को। (सूरह- बक़रह, आयत न 222)

आयत 5 : ऐ मेहबूब, तुम फ़रमा दो कि लोगो अगर तुम अल्लाह को दोस्त रखते हो तो मेरे फ़रमाँबरदार हो जाओ अल्लाह तुम्हें दोस्त रखेगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (सूरह- इमरान, आयत न 31)

आयत 6 : वो कि जब कोई बेहयाई या अपनी जानों पर ज़ुल्म करें अल्लाह को याद करके अपने गुनाहों की माफ़ी चाहें और गुनाह कौन बख़्शे सिवा अल्लाह के और अपने किये पर जान बूझकर अड़ न जाएं। (सूरह- इमरान, आयत न 135)

आयत 7 : और तुम में जो मर्द औरत ऐसा (बदकारी) काम करें उनको ईज़ा (कष्ट) दो फिर अगर वो तौबह कर लें और नेक हो जाएं तो उनका पीछा छोड़ दो बेशक अल्लाह बड़ा तौबह कुबूल करने वाला मेहरबान है) (सूरह- निशा, आयत न 16)

आयत 8 : वह तौबह जिसका कुबूल करना अल्लाह ने अपने फ़ज़्लें(पा) से लाज़िम कर लिया है वह उन्ही की है जो नादानी से बुराई कर बैठें फिर थोड़ी देर में तौबा करलें ऐसो पर अल्लाह अपनी रहमत से रूजू (तवज्जुह)करता है और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है. (सूरह- निसा, आयत न 16)

आयत 9 : अगर बचते रहो कबीरा गुनाहों से जिनकी तुम्हें मुमानेअ़त है तो तुम्हारे और गुनाह हम बख़्श देंगे और तुम्हें इज़्ज़त की जगह दाख़िल करेंगे (सूरह- निसा, आयत न 31)

आयत 10 : जब वह अपनी जानों पर जुल्म करें तो ऐ मेहबूब तुम्हारे हुजूर हाज़िर हों और फिर अल्लाह से माफ़ी चाहें और रसूल उनकी शफ़ाअत फ़रमाए तो ज़रूर अल्लाह को बहुत तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान पाएं .(सूरह- निसा, आयत न 64)

आयत 11 : जो अल्लाह की राह में घरबार छोड़ कर निकलेगा वह ज़मीन में बहुत जगह और गुंजाइश पाएगा और जो अपने घर से निकला अल्लाह व रसूल की तरफ़ हिजरत करता फिर उसे मौत ने आ लिया तो उसका सवाब अल्लाह के ज़िम्मे पर हो गया और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है (सूरह- निसा, आयत न 100)

आयत 12 : अल्लाह से माफ़ी चाहो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है (सूरह- निसा, आयत न 106)

आयत 13 : जो कोई बुराई करे या अपनी जान पर जुल्म करे फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहे तो अल्लाह को बख़्शने वाला मेहरबान पाएगा (सूरह- निसा, आयत न 110)

आयत 14 : मगर वो जिन्होंने तौबह की और संवरे और अल्लाह की रस्सी मज़बूत थामी और अपना दीन ख़ालिस अल्लाह के लिये कर लिया तो ये मुसलमानों के साथ है और अन्करीब अल्लाह मुसलमानों को बड़ा सवाब देगा (सूरह- निसा, आयत न 146)

आयत 15 : तो जो अपने जुल्म के बाद तौबह करे और संवर जाए तो अल्लाह अपनी मेहर (रहमत) से उस पर रूजू फ़रमाएगा बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (सूरह- माएदा, आयत न 39)

आयत 16 : तुममें जो कोई नादानी से कुछ बुराई कर बैठे फिर उसके बाद तौबा करें और संवर जाए तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है । (सूरह- अनआम, आयत न 54)

आयत 17 : वही है जिसने ज़मीन में तुम्हें नाइब किया और तुम में एक को दूसरे पर दर्जों बलन्दी दी कि तुम्हें आज़माए उस चीज़ में जो तुम्हें अता की बेशक तुम्हारे रब को अज़ाब करते देर नही लगती और बेशक वह ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है। (, सुरह अनाम, आयत न. 165)

आयत 18 : फिर उसके बाद अल्लाह जिसे चाहेगा तौबह (का मौका) देगा और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है. (सूरह तौबा, आयत न 27)

आयत 19 : अगर वो तौबह करें तो उनका भला है और अगर मुंह फेरें तो अल्लाह उन्हें सख़्त अज़ाब करेगा दुनिया व आख़रित में, (सूरह तौबा, आयत न 74)

आयत 20 : क्या उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह ही अपने बन्दों की तौबह कुबूल करता और सदक़े खुद अपने दस्ते कुदरत में लेता है और यह कि अल्लाह ही तौबह कुबूल करने वाला मेहरबान है। (सूरह तौबा, आयत न 104)

आयत 21 : बेशक मैं बहुत बख़्शने वाला हूँ उसे जिसने तौबह की और ईमान लाया और अच्छा काम किया फिर हिदायत पर रहा (सूरह ताहा, आयत न 82)

आयत 22 : जो तौबह करे और अच्छा काम करे तो वह अल्लाह की तरफ़ रूजू लाया जैसी चाहिये थी। (सूरह फुरकान, आयत न 70)

आयात 23 : जो कोई ज़ियादती करे फिर बुराई के बाद भलाई से बदले तो बेशक मैं बख़्शने वाला मेहरबान हूँ। (सूरह नमल, आयत न 11)

तौबा से मुतअल्लिक फ़रमाने मुस्तफा : किताब इहयाउल उलूम से नकल

बेशक अल्लाह तौबा कुबूल करने और रहम फ़रमाने वाला है।

(1) रसूलुल्लाह अकसर येह पढ़ा करते: या'नी ऐ अल्लाह! तेरी ज़ात पाक है और सब तारीफें तेरे लिये है ऐ अल्लाह! मगफिरत फरमा बेशक तू तौबा कुबूल करने वाला और रहम फ़रमाने वाला है।

तौबा हर परेशानी, तंगी और बेरोजगारी से नजात का जरिया

(2) जो इस्तिगफार की कसरत करेगा अल्लाह उस की हर परेशानी दूर फ़रमाएगा, हर तंगी से उस के लिये नजात की राह निकालेगा और ऐसी जगह से रिज़्क अता फरमाएगा जहां से उसे गुमान (सोचा)भी न होगा ।

हमारे आक़ा ने तौबा का तरीका बता दिया

(3) बिला शुबा मैं रोज़ाना 70 मरतबा अल्लाह से इस्तिगफार और तौबा करता हूं। हालांकि आपके सदके अगले पिछले लोगों ने भी मगफ़िरत की नेमत पाई।

दिल साफ करे (4) मेरे दिल पर कभी (अन्वारे इलाही के ग़लबे से अब्र छा जाता है) और मैं रोज़ाना 10 0 बार इस्तिगफार करता हूं।

सोते वक्त तौबा

(5)..... सोते वक्त जो येह कलिमात : " या'नी मैं अज़मत व बुजुगऍ वाले परवर दिगार से मगफिरत तलब करता हूं उस के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं, वोह आप ज़िन्दा और दूसरों को काइम रखने वाला है और मैं उस की बारगाह में तौबा करता हूं।" तीन मरतबा पढ़ ले अल्लाह उस के गुनाह बख्श देगा अगर्चे समन्दर की झाग या रेत के ज़र्रात या दरख़्त के पत्तों या दुन्या के दिनों के बराबर हों।

एक और रिवायत में है कि जो शख़्स मज़कूरा कलिमात पढ़ लेगा अल्लाह उस के गुनाह बख़्श देगा अगर्चे वोह मैदाने जिहाद से ही क्यूं न भागा हो। यानी जिहाद के मैदान से भागना मुनाफ़िक़ होने की अलामत है फिर भी अल्लाह बख्श देगा, जबकि मुनाफ़िक़ नही बख्शा जाएगा।

हमारे आक़ा ने इस्तिगफार करना सिखा दिया

(6) हज़रते सय्यदुना हुज़ैफा बिन यमान फरमाते हैं, मैं अपने अहले खाना के साथ सख्त कलामी किया करता था। (एक रोज़) बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर अर्ज की : "या रसूलल्लाह मुझे ख़ौफ़ आता है कि कहीं मेरी ज़बान मेरे लिये जहन्नम ले जाने का वजह न बन जाए।" येह सुन कर महबूबे खुदा ने इरशाद फ़रमाया: "तुम इस्तिगफार क्यूं नहीं करते ! मैं तो रोज़ाना 100 मरतबा इस्तिगफार करता हूं।"

तौबा किसका नाम है

(7) उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका से इरशाद फ़रमाया: "अगर कोई गुनाह हो जाए तो अल्लाह से मगफिरत तलब करो और उस की बारगाह में तौबा करो, बेशक नदामत और तलबे मगफिरत का नाम तौबा है। "

तौबा से दिल की सफाई

(8)बन्दा जब कोई गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक सियाह नुक्ता लगा दिया जाता है फिर अगर वोह तौबा करे और उस गुनाह से बाज़ आ जाए और इस्तिगफ़ार करे तो उस का दिल चमका दिया जाता है और अगर वोह मज़ीद गुनाह करे तो उस सियाही में इज़ाफा कर दिया जाता है यहां तक कि उस के दिल पर छा जाती है। येह वही ज़ंग है जिसे अल्लाह ने कुरआने पाक में यूं जिक्र फ़रमाया है : तर्जमए कन्जुल ईमान : कोई नहीं बल्कि उन के दिलों पर जंग चढ़ा दिया है उन की कमाइयों (बुरे आमाल) ने ।

इस्तिगफ़ार के बदले दर्जा

(9) अल्लाह , जन्नत में बन्दे को एक दर्जा अता फरमाएगा, बन्दा अर्ज करेगा : "ऐ मौला येह दर्जा मुझे कैसे मिला ?" अल्लाह इरशाद फ़रमाएगा: "उस इस्तिगफ़ार के बदले जो तेरे बेटे ने तेरे लिये किया

मगफिरत तलब करने वाले लोगों का साथ

(10)उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका रिवायत करती हैं कि सरकारे वाला तबार, शफ़ीए रोजे शुमार ने बारगाहे रब्बुल इज्ज़त में यूं अर्ज़ की या'नी या अल्लाह मुझे उन लोगों में शामिल फरमा जो नेकी कर के खुश होते हैं और अगर खता कर बैठें तो मगफिरत तलब करते हैं।"

गुनाहो पर पकड़

(11).....बन्दा जब कोई गुनाह कर बैठे फिर कहे : यानी या अल्लाह मुझे मुआफ़ फ़रमा।" तो अल्लाह फ़रमाता है: "मेरे बन्दे से गुनाह हो गया, और वोह जानता है कि उस का रब है जो गुनाह पर पकड़ भी फ़रमाता है और बख़्श भी देता है। ऐ मेरे बन्दे ! जो चाहे कर मैं ने तेरी बख़्शिश फ़रमा दी।"

(12).मुआफी मांग लेने वाला गुनाह पर अड़ा रहने वाला नहीं अगर्चे दिन में 70 बार गुनाह करे।

अल्लाह ने बख़्श दिया

(15) एक शख़्स जिस ने कभी कोई नेकी न की थी एक रोज़ आस्मान की तरफ निगाह उठा कर कहने लगा : "बेशक मेरा एक परवरदिगार है, ऐ मेरे अल्लाह मेरी मगफिरत फ़रमा।" अल्लाह ने इरशाद फ़रमाया: "मैं ने तुझे बख़्श दिया। "

दिल से माफी

(16)जिस से कोई गुनाह सरज़द हो जाए और वोह यकीन रखे कि अल्लाह , मेरी इस खता पर मुत्तलअ है तो उस की मगफिरत कर दी जाती है अगर्चे वोह इस्तिग़फ़ार भी न करे।

पहले माफी फिर बख़्शिश

(17) फ़रमाया, रब्ब तआला फ़रमाता है: "ऐ मेरे बन्दो! तुम सब गुनाहगार हो सिवाए उस के जिसे मैं महफूज़ रखूं, लिहाजा मुझ से मगफिरत का सुवाल करो मैं तुम्हारी मगफिरत फ़रमा दूंगा और तुम में से जो येह जान ले कि मैं बख्श देने पर कादिर हूं तो मैं उस की मगफिरत फरमा दूंगा और मुझे कुछ परवाह नहीं। "

बन्दा को पहले माफी मांगनी चाहिए

(18)जो शख्स येह कलिमात कहे : "तर्जमा या अल्लाह तेरी जात पाक है, मैं ने अपनी जान पर जुल्म किया और बुरे अमल किये, पस तू मुझे बख्श दे कि तेरे सिवा गुनाहों को बख्शने वाला कोई नहीं।" तो उस के गुनाह बख्श दिये जाते हैं अगर्चे चूंटियों की तादाद के बराबर हों।

मेरे गुनाह बख्स दे

(19)..... रिवायत में है कि अफ्ज़ल इस्तिगफार येह है : या'नी ऐ अल्लाह - तू मेरा रब्ब है, मैं तेरा बन्दा हूं, तू ने मुझे पैदा किया और मैं बक़दरे ताकत तेरे अहदो पैमान पर काइम हूं, मैं अपने किये के शर से तेरी पनाह मांगता हूं, तेरी दी हुई ने 'मत और अपनी जान के ख़िलाफ़ गुनाहों का भी इकरार करता हूं, बेशक मैं ने अपनी जान पर जुल्म किया, मुझे अपने गुनाहों का ए'तिराफ़ है, पस मेरे अगले पिछले गुनाहों को बख्श दे कि तेरे सिवा बख्शने वाला कोई नहीं।

अल्लाह के महबूब बंदे :

हुज़रते सय्यिदुना खालिद बिन मादानका बयान है कि अल्लाह इरशाद फ़रमाता है: "मेरे महबूब बन्दे वोह है जो मुझ से महब्बत के सबब आपस में महब्बत रखते हैं, उन के दिल मसाजिद में लगे रहते हैं और रात की तिहाई हिस्से में इस्तिगफार करते हैं। जब मैं अहले ज़मीन को अज़ाब देने का इरादा करता हूं तो इन्हीं लोगों की वजह से उन से फेर देता हूं।

तौबा की फज़ीलत पर मुश्तमिल अक्वाले बुजुर्गाने दीन:

बीमारी का इलाज

(1) हुज़रते सय्यदुना कतादा फ़रमाते हैं: "कुरआने पाक तुम्हारी बीमारी की तशखीस करता और इस के लिये दवा तजवीज फ़रमाता है, गुनाह तुम्हारी बीमारी है इस्तिगफार इस का इलाज है।"

सामाने नजात क्या है ?

(2).....अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यदुना अलिय्युल मुर्तज़ा ने इरशाद फ़रमाया: "तअज्जुब है उस शख्स पर जो सामाने नजात रखने के बा वुजूद हलाक हो जाता है।" पूछा गया : "सामाने नजात क्या है ?" फ़रमाया: "इस्तिगफ़ार ।

तौबा की तौफीक नहीं देता

" (3)अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यदुना अलिय्युल मुर्तजा ने इरशाद फ़रमाया: " "अल्लाह जब्बार व कहार जिसे अज़ाब देने का इरादा फ़रमा लेता है उसे तौबा की तौफीक नहीं देता।"

मुझे बख़्श दे

(4)..... हजरते सय्यदुना फुज़ैल बिन अयाज़ फ़रमाते हैं: बन्दा कहता है उस का मतलब है कि "(मौला !) मुझे बख़्श दे।"

बन्दा गुनाह और ने' मत के दरमियान

(5).औलमाए किराम फरमाते हैं: बन्दा गुनाह और ने' मत के दरमियान होता है। इन दोनों के लिये और है (या'नी हुसूले ने'मत पर हम्दो षना और इरतकाबे गुनाह पर तौबा व इस्तिगफार करे) ।

इस तरह न मांगे

(6).... हजरते सय्यदुना रबीअ बिन खुषैम फरमाते हैं: तुम में से कोई इस तरह न कहे : या'नी मैं अल्लाह से मगफिरत तलब करता हूं और तौबा करता हूं। क्यूंकि अगर तुम ने ऐसा न किया (या'नी इस्तिगुफार न किया) तो येह झूट और गुनाह होगा। हां ! यूं कहना चाहिये : "यानी या अल्लाह मेरी मगफिरत फरमा और तौबा कुबूल फ़रमा।"

झूटों की तौबा

(7)हजरते सय्यिदुना फुज़ैल बिन अयाज़ फरमाते हैं: "तर्के गुनाह के बिगैर तौबा झूटों की तौबा है।"

तौबा के बाद भी तौबा

(8) हज़रते सय्यिदतुना राबिआ अदविय्या फ़रमाती हैं: हमारी तौबा को भी बहुत सी तौबा की जरूरत है।"

अल्लाह से मज़ाक़

(9).हुकमा का कहना है: नादिम (शर्मिंदा) हुए बिगैर ज़बानी तौबा करने वाला गोया (जिहालत के वजह से) अल्लाह रब्बुल इज्जत से मज़ाक़ करने वाला है।

तौबा का अश्आर

(10) एक आ' राबी को गिलाफ़े का 'बा से लिपट कर येह कहते सुना गया : या'नी ऐ अल्लाह - अगर मैं गुनाह पर इसरार के बा वुजूद तुझ से

मगफिरत तलब करूं तो येह मलामत है और तेरे अफ्वो दरगुज़र की वस्अतों का यकीन रखते हुए इस्तिगुफार न करूं तो येह मेरी कमज़ोरी है। तू मुझ पर कितने ही इन्आम व इकराम फरमा कर मुझे दोस्त रखता है हालांकि तुझे मेरी कोई जरूरत नहीं जब कि मैं तेरा मोहताज होने के बा वुजूद तेरी नाफरमानियां कर के तेरे गज़ब का शिकार होता हूं। ऐ वादा पूरा करने वाले ! वईद सुना कर मुआफ़ करने वाले ! ऐ रहम करने वाले मौला! मेरे बड़े जुर्मों को अपने अजीम अफ्व से मिटा दे

दिल से ये दुआ कर

(11) हजरते सय्यदुना अबू अब्दुल्लाह वक फरमाते हैं, अगर तेरे गुनाह पानी के कतरों और समन्दर की झाग के बराबर भी हो जाएं तो बारगाहे इलाही में खुलूस दिल से ये दुआ कर तेरे गुनाह मिटा दिये जाएंगे :

तर्जमा : या'नी : ऐ अल्लाह - मैं तुझ से अपने हर गुनाह की बख्शिश तलब करता हूं और तेरे हुजूर उन ख्ताओं से तौबा करता हूं जिन के तर्क का तुझ से वादा कर के फिर उन में मुब्तला हो जाता हूं। मैं तुझ से हर उस अमल से भी तौबा करता हूं जो करना तो तेरी रिज़ा के लिये चाहता हूं लेकिन उस में गैर का ख्याल शामिल हो जाता है। मैं उस बात से भी तौबा करता हूं कि तू मुझे ने'मत अता करता है और मैं इस से तेरी ही नाफरमानी पर मदद हासिल करता हूं। ऐ ज़ाहिरो बातिन को जानने वाले ! ऐ हिल्म वाले ! मैं तुझ से सब गुनाहों की मुआफ़ी का तलबगार हूं चाहे वोह दिन की रोशनी में किये हों या रात की तारीकी में, जलवत में हों या खलवत में, ऐलानिया हों या पोशीदा ।

मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना आदम व हज़रते सय्यदुना खिज़्र अलैहिस्सलाम की दुआए इस्तिगफार भी येही है।

सबक: अल्लाह अज़ाब भी देता है और बख्स भी देता है लेकिन अज़ाब उसे देता है जो गुनाहो से तौबा नही करता है और बख्स उसे देता है जो गुनाहो से सच्ची तौबा करता है

तौबा फर्ज़े ऐन है

तौबा हर शख्स के हक में फर्जे ऐन सबसे पहला फर्ज है क्योंकि कोई शख्स भी हाथ पांव के गुनाहों से खाली नही (वह आलिम हो कि आम) और अगर कोई उन आज़ा के गुनाह से खाली है तो दिल ही से उसने गुनाह किया होगा और अगर यह भी न होगा तो उन शैतानी वसवसों से खाली न होगा जो अल्लाह के याद से गाफिल कर देने वाले होंगे और अगर ऐसा भी न होगा तो अल्लाह तआला की ज़ात व सिफात की मारफत हासिल करने में कोताही और ग़फ़लत बरतने से तो कोई भी खाली नही होगा। यह तमाम सूरतें अहले ईमान के अहवाल व मक़ामात के एतबार से अला कदर मरातिब हैं। लिहाजा हर हाल के लिये ताअत, गुनाह और हुदूद व शरायत जुदा जुदा हैं, उन्ही हुदूद की (जो जिसके लिये मोअय्यन हैं) पाबन्दीए ताअत व बन्दगी है और उनसे गफलत या उनकी मुखालफत गुनाह है। इसलिये हर शख्स तौबा का मोहताज है। (गुनियतुत्तालिबीन, बाब-10)

पहले तौबा फिर इबादत

फिर ऐ इबादत के तालिब ! तुझ पर इबादत में मश्गुल होने से कब्ल अपने गुनाहों से तौबा करना लाज़िम है और येह दो वजह से लाज़िम है : एक तो इस लिये ताकि तौबा के बाइस तुम्हें ताअत व इबादत की तौफ़ीक़ नसीब हो क्यूंकि गुनाहों की नुहूसत बन्दे को ताअत व इबादात बजा लाने से महरूम कर देती है और इस पर ज़िल्लत व रुस्वाई मुसल्लत कर देती है, यकीन जानो ! कि गुनाह एक ऐसी जंजीर है जो बन्दे को ताअत व नेकी की तरफ चलने से रोक देती है और गुनाहों के होते हुवे उमूरे खैर में जल्दी नही हो सकती क्यूंकि गुनाहों का भारीपन और बोझ नेकियों के सुकून को पैदा नही होने देता और न ही ताअत में निशात व खुशी पैदा होने देता है और गुनाहों पर इसरार और अड़ा रहना दिल को सियाह कर देता है। इस तरह इन्सान दिल की सख़्ती और गुनाहों की तारीकी में मुब्तला हो जाता है, न उस में खुलूस पैदा हो सकता है और न ही दिल की

सफाई(3) और न ही इबादत में लज़्ज़त व मिठास पैदा हो सकती है, जो शख़्स गुनाहों से तौबा करने वाला नही होगा, अगर खुदा का फ़ज़्ल उस के शामिले हाल न हुवा तो धीरे-धीरे येह गुनाह उसे कुफ्र तक पहुंचा देंगे। ऐसे शख़्स पर बदनसीबी और बद बख़्ती ग़ालिब आ जाएगी, तो ऐसे शख़्स पर तअज्जुब है कि इस नुहूसत व सख़्त दिली के होते हुवे इसे ताअते इलाही की

तौफ़ीक़ किस तरह मिल सकती है? और गुनाहों पर अड़ने वाला शख़्स ताअते खुदावन्दी का दा'वा कैसे कर सकता है और ख़िलाफ़ शरअ उमूर को अपनाते हुवे वोह इबादते खुदावन्दी कैसे बजा ला सकता है ? इसी तरह जो शख़्स गुनाहों की गन्दगी और पलीदी से आलूदा हो वोह अल्लाह तआला की मुनाजात का कुर्ब कैसे हासिल कर सकता है? इसी लिये हुजूरे अकरम ने फ़रमाया :

तर्जमा: जब इन्सान झूट बोलता है तो दोनों किरामन कातिबीन (आमाल लिखने वाले फरिशते) झूट की बदबू की वजह से उस से अलाहिदा हो जाते हैं। और झूट व गीबत के होते हुवे ज़बान ज़िक्रे इलाही के लाइक कैसे हो सकती है? इस लिये गुनाहों पर इसरार करने वाले आदमी को नेक काम की तौफीक मिलना बहुत मुश्किल है और न ही इबादत करते वक्त ऐसे शख़्स के आ'ज़ा में चुस्ती और सुकून पैदा हो सकता है ऐसा शख़्स अगर कुछ टूटी फूटी इबादत करेगा तो वोह भी मशक्कत के साथ फिर ऐसी इबादत में लज्जत व सफ़ाई वगैरा कुछ न होगी येह सब कुछ गुनाहों की नुहूसत और तर्के तौबा से होगा। उस शख़्स ने सच फ़रमाया है जिस ने कहा है कि अगर तू रात को नमाज़े तहज्जुद पढ़ने की और दिन को रोज़ा रखने की कुव्वत नही रखता तो समझ ले कि तू मन्हूस हो चुका है और गुनाहों की नुहूसत तुझ पर मुसल्लत हो चुकी है।

तौबा के ज़रूरी होने की दूसरी वजह येह है कि बिगैर तौबा के इबादात क़बूल नही होती, जिस तरह कर्ज ख़्वाह का कर्ज अदा करने से पहले उस के सामने हदिये और तोहफे कोई अहम्मिय्यत नही रखते और न वोह इन्हें क़बूल करता है, इसी तरह पहले गुनाहों से तौबा लाज़िम है इस के

बाद आम इबादाते नाफ़िला, इसी तरह जब फ़राइज़ किसी के ज़िम्मे लाज़िम हों तो उस के नवाफिल वगैरा कैसे क़बूल हो सकते हैं? यूं ही अगर कोई शख़्स हराम व ममनूअ काम तो तर्क न करे मगर मुबाह व हलाल अश्या में परहेज़ व एहतियात करे तो उस का ऐसा परहेज़ क्या वक्अत रख सकता है? और वोह शख़्स खुदा तआला से मुनाजात, उस की दरगाह में पसन्दीदा और उस की सना करने के लाइक कैसे हो सकता है जिस पर खुदा तआला नाराज़ हो, गुनाहों पर इसरार करने वालों का अकसर यही हाल है।

सुवाल : तौबतुन्नुसूह के क्या मा'ना हैं, इस की तारीफ़ क्या है और बन्दे को क्या करना चाहिये जिस से उस के तमाम गुनाह मुआफ़ हो जाएं ?

जवाब : दिल के कामों में से एक काम तौबा है और आम औलमा ने इस की तारीफ़ येह की है: दिल को गुनाहों से पाक करना, और हमारे शैख़ ने येह तारीफ़ की है :

आइन्दा के लिये ऐसे गुनाह को तर्क कर देने का क़स्द करना जिस दरजे का पहले गुनाह हो चुका हो, और येह तर्क महज़ खुदा की ता'ज़ीम और उस की नाराज़गी के डर के बाइस हो।(मिन्हाजुल आबेदीन, बाब 3)

ज़ाहिरी बातिनी तौबा

तौबए नसूह यह है कि इन्सान ज़ाहिर व बातिन से तौबा करे और आइन्दा गुनाह न करने का पुख़्ता इरादा करे, जो शख़्स ज़ाहिरी तौर पर तौबा करता है उस की मिसाल ऐसे मुर्दार की तरह है जिस पर रेशम व जरी की चादरें डाल दी गई हों और लोग उसे हैरत और तअज्जुब से देख रहे हों, जब उस से चादरें हटा ली जायें तो लोग मुँह फेर कर चल दें। इसी तरह देखावे की इबादत करने वालों को लोग तअज्जुब की निगाह से देखते रहते हैं लेकिन कियामत का दिन होगा तो उनके धोके का पर्दा चाक कर दिया जाएगा और फरिश्ते मुँह फेर कर चल देंगे। चुनान्चे रसूले अकरम

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अल्लाह तआला तुम्हारी सूरतों को नही देखता बल्कि तुम्हारे दिलों को देखता है।

तौबा के मुताल्लिक अहादीस

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से मरवी है कि जुमा के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने खुत्बा में हम से इरशाद फरमाया कि ऐ लोगों! मरने से पहले तौबा करो और कब्ल इस के कि ज़ोअफ या बीमारी की वजह से आजिज़ हो जाओ नेक आमाल में उजलत करो, अल्लाह से अपना ताल्लुक जोड़ लो कामयाब हो जाओगे। खैरात ज्यादा करो तुम्हारे रिज़्क में अफजूनी होगी, दूसरों को भलाई का हुक्म दो महफूज़ रहोगे, बुरी बातों से लोगों को रोको तुम्हारी मदद की जायेगी। हुजूरे अकदस अकसर यह दुआ फरमाया करते थे इलाही मुझे बख्श दे और मेरी तौबा कबूल फरमा बेशक तू ही तौबा करने वाला और मेहरबानी करने वाला है। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि इब्लीस को जब जमीन पर उतारा गया तो कहने लगा इलाही तेरी इज्जत और जलाल की कसम! आदमी के बदन में जब तक जान रहेगी बराबर उसको बहकाता रहूंगा, परवर दिगार ने फरमाया मुझे अपने इज्जत व जलाल की कसम जब तक मौत की आखिरी हिचकी उसे न आ जाये और वो तौबा करे तो मैं उसकी तौबा भी क़बूल फरमाऊंगा।

बार-बार तौबा

हज़रत मोहम्मद बिन मतरफ फरमाते हैं कि अल्लाह तआला फरमाता है कि आदमी पर रहमत हो कि वह गुनाह करता है और मुझसे माफी मांगता है और मैं उसको बख्श देता हूं उस पर रहमत हो कि वह दोबारा गुनाह करता है और मुझ से मगफिरत तलब करता है और मैं उसे माफ कर देता हूं रहमत हो उस पर कि न तो वह गुनाह के इरतेकाब से बाज़ आता है और न मेरी रहमत से मायूस होता है मैं तुम को गवाह बनाता हूं कि मैंने तुम को बख्श दिया!

तौबा से शैतान ज़लील व ख्वार होता है

हजरत अनस ने फरमाया कि आयते करीमा "व अनिस तगफेरू रब्बकुम सुम्मा तुबू अलैहे" के नूजूल के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और सहाबा कराम सौ मरतबा इस्तिगफार करते और कहते थे हम अल्लाह से मगफिरत चाहते हैं और तौबा करते है। हज़रत अनस ने फरमाया कि एक शख्स हुजूर की मजलिस में हाजिर हुआ और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मुझसे एक बड़ा गुनाह सरज़द हो गया है, आप ने फरमाया कि अल्लाह तआला से इस्तिगफार करो उसने अर्ज किया मैं इस्तिगफार कर लेता हूं फिर दोबारा वैसा करता हूं आपने फरमाया जब भी गुनाह का इरतेकाब किया करे तोबा किया कर यहां तक कि शैतान जलील व ख्वार हो जाये उसने अर्ज किया कि या रसूलल्लाह अगर मेरे गुनाह ज्यादा हो जायें तो? हुजूर ने फरमाया अल्लाह तआला की माफी तेरे गुनाहों से बहुत ज्यादा है। (गुनियतुत्तालिबीन,309)

'बूढ़े और जवान की तौबा' में फर्क

'हिकायत' : नबी अकरम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की खिदमत में एक बूढ़ा और एक जवान हाजिर थे कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम आए और कहा उस नौजवान को मेरा सलाम कहो, आपने फरमाया बूढ़े को सलाम ना कहने में क्या है हिकमत है जिब्राइल अलेहीस्सलाम अर्ज़ गुजार हुए उसने बुढ़ापे में अगर तौबा की है जबकि जवान अभी जवानी से ही तौबा का दामन थाम लिया है (अनिसुल वायजीन,पेज 279)

'जवानी की तौबा की अहमियत और बरक़तें'

'जवानी की मेहमानी करो'

नबी अकरम सल्लल्लाहो वसल्लम ने फरमाया जवानी मेहमान की तरह है लिहाजा मेहमान कि जिस तरह इज़्ज़त व तौकीर (सम्मान) करते हो उस तरह जवानी की भी इज्जत करो, चंद नौजवानों की अल्लाह तआला ने

कुरान करीम में यूं तारीफ फरमाया तर्जुमा -हम उन नौजवानों का किस्सा बयान करते हैं जो अपने रब पर ईमान लाए और हमने उन्हें और ज्यादा हिदायत से नवाजा- , (अनिसुल वायज़िन, पेज 280)

'जवानी में तौबा करने वाले अल्लाह का हबीब:'

'हदीस 1 :' नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिस तरह मैं अल्लाह का हबीब हूं जवानी में तौबा करने वाला भी अल्लाह का हबीब है। (अनिसुल वायज़िन, पेज 280)

'जवानी की तौबा बूढ़ों की तौबा से 1000 गुना बेहतर

'हदीस 2.' नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला को एक नौजवान की तौबा एक हजार बूढ़ों की तौबा से ज्यादा महबूब है। -(अनिसुल वायज़िन, पेज 280)

जवानी की तौबा 1000 शहीदों का सवाब के बराबर

'हदीस 3.' नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया : नौजवान तौबा करने वाले के नामए आमाल में एक हजार शहीदों का सवाब लिखा जाता है। -(अनिसुल वायज़िन, पेज 280)-

'हदीस 4.' हुजूर सल्लल्लाहो अलैहिवसल्लम ने फरमाया जवान की 1 रकात बूढ़े की 10 रकात से अफजल व आला है उसी तरह जवानी की तौबा अल्लाह को बहुत पसंद है,. -(अनिसुल वायजीन, पेज 279)-

जवानी की तौबा से 40 दिन अजाबे कब्र का रुकना

'हदीस 5 :' हुजूर सल्लल्लाहो अलेही वसल्लम फरमाते हैं बूढ़े आदमी की तौबा क़बूल हो जाती है मगर जब जवान तौबा करता है तो उसकी बरकत से पूरब और पश्चिम के कब्रिस्तानो में दफन किए गए इमानदारो पर 40 दिन तक आजाब रोक दिया जाता है (अनिसुल वायजीन, पेज 279)

कब्र में उस नवजवान से सवाल नही होगा

'हदीस 6 :' नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब जवान इबादत गुजार फौत होता (मरता) है तो फरिश्ते सवालात के लिए कब्र में आते हैं तो हुक्म होता है छोड़ दो उस जवान को, फ़िर अल्लाह तआला का ईरशाद होता है तर्जमा : 'उस पर रहम करो उसने तो अपनी जवानी भी पूरी नहीं की थी' (अनिसुल वायज़ीन,पेज 280)

तौबा की चार शर्तें हैं

(1) गुनाह तर्क कर देने का इरादा, इसका मतलब येह है कि अपने दिल को इस बात पर पुख़्ता और मज़बूत कर ले कि आइन्दा कभी गुनाहों की तरफ रुजूअ नही करूंगा, लेकिन अगर कोई शख्स बिल फे'ल गुनाह छोड़ दे मगर दिल में ख़याल हो कि फिर कभी करूंगा, या इब्तिदाअन गुनाह छोड़ने का इरादा ही मुतरद्दिद) हो तो ऐसा शख्स बा'ज़ अवकात फिर गुनाहों में मुब्तला हो जाता है, ऐसा शख्स अगचें वक्ती तौर पर गुनाहों से रुक जाता है मगर इसे ताइब नही कहा जा सकता।

(2) दूसरी शर्त यह है कि जिस गुनाह से तौबा कर रहा हो उस मर्तबे का गुनाह पहले कही इस से सादिर हो चुका हो क्यूंकि अगर पहले से ऐसा गुनाह सादिर नही हो सिर्फ आइन्दा के लिये इस से बचता है तो ऐसे शख्स को ताइब नही कहेंगे बल्कि मुत्तकी कहेंगे, क्या तुम्हें मा'लूम नही कि नबिय्ये करीम को कुफ़ से बचने वाला तो कह सकते हैं मगर कुफ़ से तौबा करने वाला नही कह सकते क्यूंकि कुफ्र तो कभी भी आप से सादिर नही हुवा, और हज़रते उमर को कुफ़ से ताइब कहेंगे क्यूंकि आप पहले हालते कुफ़ में रह चुके थे।

3) तीसरी शर्त यह है कि वोह गुनाह रुत्बे में पहले गुनाह की तरह हो न कि सूरत में, क्या तुम्हें मालूम नही कि जिस पुराने बुड्ढे ने जवानी के ज़माने में ज़िना या डाका ज़नी का इरतिकाब किया हो, वोह अब बुढ़ापे में तौबा तो कर सकता है क्यूंकि तौबा का दरवाज़ा

बन्द नही मगर अब उसे ज़िना या डाकाज़नी के तर्क का र नही क्यूंकि अब वोह अमली तौर पर येह गुनाह नही कर सकता तो चूंकि अब वोह ज़िना या डाकाज़नी पर कादिर नही, इस लिये येह नही कह सकते कि वोह अपने इख़्तियार से इन्हें छोड़ रहा है या इन से रुक रहा है क्यूंकि अब वोह आजिज़ हो चुका है और इसे अब इन पर कुदरत नही रही मगर वोह इस वक्त भी ज़िना या डाकाज़नी जैसे दूसरे हराम व ममनूअ अफ्आल पर कादिर है जैसे झूट बोलना, किसी पर ज़िना की तोहमत लगाना, किसी की ग़ीबत या चुगली करना वगैरा उमूर येह सब गुनाह हैं अगर्चे हर एक में अपनी अपनी नौइय्यत के ए'तिबार से फ़र्क है लेकिन येह तमाम गुनाह एक ही रुत्बे के शुमार होते हैं मगर येह गुनाह बिदअत की पैरवी से कम हैं और बिदअत की पैरवी कुफ़ से कम है तो येह तौबा जो ज़िना या डाकाज़नी से होगी सूरतन तौबा होगी।

(4) चौथी शर्त यह है कि गुनाहों से तौबा अल्लाह तआला की ता'ज़ीम के लिये और उस के दर्दनाक अज़ाब से डर कर हो, किसी दुन्यवी गरज़ या लोगों से डर कर या तलबे सना के लिये या अपनी मशहूरी या जिस्मानी लागरी की वजह से या मोहताजी और किसी और रुकावट की वजह से न हो।

जब तौबा के येह अरकान व शराइत पाए जाएंगे तौबा मुकम्मल तौर पर होगी और इसे तौबए सादिका कहा जाएगा। तौबा के मुक़द्दमात तीन अम्र हैं या'नी जिन चीज़ों का तौबा से पहले होना ज़रूरी है :

पहला : येह कि अपने गुनाहों को बहुत बुरा काम समझे तसव्वुर करे ।

दूसरी: येह कि अल्लाह तआला के अज़ाब की शिद्दत और उस के गज़ब की सख्ती को दिल में हाज़िर करे।

तीसरी : येह कि अपनी कमज़ोरी और गुनाह के बारे में अपनी बेहयाई को महसूस करे और इस का ए'तिराफ़ करे।

क्यूंकि जो शख्स सूरज की तेज़ीूप, चोकीदार के थप्पड़ और च्यूंटी के

डंक को बरदाश्त नही कर सकता वोह दोजख की शदीद गमएँ, जहन्नम के फ़िरिश्तों की मार और इन्तिहाई जहरीले सांपों के डंक कैसे बरदाश्त कर सकता है! दोज़ख़ में बिच्छू खच्चर जितने बड़े और वहां के सांप ऊंट की गर्दन जितने मोटे होंगे और येह सांप और बिच्छू वगैरा दोज़ख़ की आग के होंगे। इस वक्त वोह गज़ब और गुस्से के मकान में रखे हुवे हैं, हम बार बार खुदा के ग़ज़ब और अज़ाब से पनाह मांगते हैं।

तुम अगर इन दहशत नाक उमूर को याद रखोगे और हर दिन रात में किसी वक्त इन की याद ताज़ा करते रहोगे तो ज़रूर तुम्हें गुनाहों से खालिस तौबा नसीब हो जाएगी। अल्लाह तआला हर एक को अपने फज़्ल से तौबा की तौफीक दे। (मिन्हाजुल आबेदीन, बाब 3)

तौबा 4 बातों से मुकम्मल होती है:

1. ज़बान- जबान को बेहूदा बातों, गीबत, चुगलखोरी और झूठ से रोक लो ।

2. दिल - अपने दिल में हसद और ख़्वाहिशात न रखें।

3 दिमाग- आपने दिमाग और अपने आप को उन कामों से अलग रखें जिनका ज़िम्मा खुद अल्लाह ने लिया है जैसे-रिज़्क, ज़िन्दगी और मौत

4. जिस्म- अपने आप को बुरे लोगों से दूर रखें क्योंकि बुरे लोग बुराई की तरफ ले जाते हैं। बुरे जगहों से भी दूर रखो क्योंकि बुरे जगह मे हिफाज़त के फरिशते नही जाते। (गुनियतुत्तालिबीन)

तौबा करने के 2 रास्ते

खुदा तआला ने शैतान को मरदूद फरमा दिया तो शैतान ने कहा मैं तेरे बन्दों को गुमराह करने के लिए सीीी राह पर बैठ जाऊँगा, फिर उन बंदों पर आगे से हमला करूँगा पीछे से भी और दाएँ से भी बाएं से भी उन पर हमला करूँगा। शैतान ने चारों तरफ से घेर कर बनी आदम (इंसानो) को

गुमराह करने का एलान कर दिया और चारों तरफ पर कब्ज़ा जमा लिया तो फरिश्तों के दिलों में रिक्क़त (नमएँ) पैदा हुई और उन्हों ने अर्ज किया इलाही! शैतान मरदूद इन्सानों को गुमराह करने के लिए चारों सिमतों पर कब्ज़ा कर दिया है, उस मरदूद से दो सिमतें रह गई हैं, नीचे की और ऊपर की फ़रमाया चारों सिमतें उसकी और दो मेरी, वह चारों तरफ से मेरे बन्दे को गुमराह करने को आ जाए, लेकिन मेरा बन्दा जब नादिम होकर सर सज्दे में सर नीचे डाल देगा, और तलबे मगफिरत (तौबा) की खातिर के लिए हाथ ऊपर उठा लेगा तो मैं उस के सब गुनाह मुआफ़ कर दूँगा ! (नुजहतुल - मजालिस जि.2, स. 24)

तौबा करने वालो का पहचान

सवाल:- किसी आलिम से पूछा गया कि जब बन्दा तौबा करता है तो क्या उसे अपनी तौबा के मक़बूल या गैर मक़बूल होने का पता चल जाता है?

जवाब:- आलिम ने जवाब दिया ऐसी मुकम्मल बात तो नही अलबत्ता कुछ निशानियां हैं, जिन से तौबा की क़बूलियत का पता चलता है, वह अपने आप को गुनाहों से पाक रखता है, उस के दिल से खुशी गाइब हो जाती है, हर दम अल्लाह को मौजूद समझने लगता है, नेकों के करीब और बुरों से दूर रहने लगता है। दुनिया की थोड़ी सी निअमत को बड़ी और आख़रित के लिए ज़्यादा नेकियों को भी थोड़ी समझता है। अपने दिल को हर वक़्त फराइज़े खुदावन्दी में मसरूफ़ और अपनी ज़बान को बन्द रखता है, हमेशा अपने पहले गुज़रे गुनाहों पर गौर व फिक्र करता रहता है और ग़म और परेशानी को अपने लिए ज़रूरी कर लेता है। (मुकाशफतुल कुलूब)

तौबा की कबुलियत की 4 अलामतें

किसी दाना (इल्म वाले) से पूछा गया कि क्या तौबा करने वाली कोई अलामत (पहचान) है जिससे यह पहचाना जा सके कि उसकी तौबा क़बूल हो चुकी है उन्होंने कहा हां 4 अलामतों से पहचाना जा सकता है

1. बुरे दोस्तों से अलग हो जाए और सच्चो की संगत यानी दोस्ती अपना ले

2. हर किस्म के गुनाहों से कटकर अल्लाह ताआला की इताअत की जानिब तवज्जो करे

3. दिल को हर किस्म की दुनियवी ख़्वाहिशात से खाली करके फ़िक्र ए आख़िरत से दिल आबाद रखे

4. अल्लाह पाक ने जिस रिज्क की जिम्मेवारी ले रखी है दिल को उन फ़िक्र से खाली कर ले और हुक्मे इलाही के बजाआवरी (अमल) में कोई सुस्ती और बहाना न मारे जिस शख्स में यह चार अलामते पाई जाए तो यकीनन वह उन लोगों में से होगा जिससे अल्लाह राजी हो जाता है

'अल्लाह फरमाता है' बेशक अल्लाह पसन्द करता है बहुत तौबा करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को (सूरह- बक़रह, आयत न 222) (तंबीहूल ग़ाफ़िलीन, जिल्द 1, सफा 159)

बुजुर्गों के नज़दीक तौबा का माना :

हज़रत अबुल हसन बूशन्जा रहमतुल्लाह अलेहि फ़रमाते हैं कि तौबा यह है कि जब तुम गुनाह को याद करो तो उसकी याद में तुम्हें लज्ज़त व सुरूर न मालूम हो तो ऐसी तौबा सहीह है इसलिये कि गुनाह याद या तो हसरत से होगी या इरादए ख़्वाहिश से। अगर कोई हसरत व नदामत से अपनी मासियत याद करता है तो वह ताइब है और अगर इरादा व ख़्वाहिश से उसे याद करता है तो वह गुनाहगार है। क्योंकि इर्तेकाबे मासियत में इतनी आफ़त नहीं जितनी इसके इरादा ख़्वाहिश में है। इसकी वजह यह है कि इर्तेकाबे गुनाह कुछ लम्हा का होता है लेकिन इसका इरादा व ख़्वाहिश मुस्तकिल और दायमी है जिसका जिस्म एक लम्हा के लिये गुनाह में रहे वह वैसा नहीं है बमुक़ाबला इसके जिस का दिल दिन रात उसकी सोहबत में रहे। (कशफूल महजूब, पेज न. 401)

हज़रत जुन्नून मिसरी रहमतुल्लाह अलैहि फरमाते हैं कि तौबा दो तरह की होती है एक तौबा इनाबत दूसरी तौबा इस्तेहया तौबए इनाबत यह है कि बंदा अज़ाबे इलाही के ख़ौफ़ से तौबा करे। और तौबा इस्तेहया यह है कि बंदा हक़ तआला की फज़ल व करम से हया करके तौबा करे। लिहाज़ा ख़ौफे इलाही वाली तौबा, जलाले इलाही के कस्फ से है और हया वाली तौबा जमाले इलाही के नज़ारा से है। यानी एक जलाले इलाही में उसके ख़ौफ़ की आग से जलता है और दूसरा अजमाले इलाही में हया व शर्म के नर से रौशन होता है। इन दोनों में से एक बहालते सुकर व दूसरा बहालते सुहव है अहले हया असहाबे सुकर और अहले ख़ोफ असहाबे सुहव से ताल्लुक रखते हैं। (कशफूल महजूब, पेज न. 401)

गफ़लत से बेदारी

ऐ ग़ाफ़िलो ! बेदार हो जाओ, ऐ गुनाहों पर क़ाइम रहने वालो ! बाज़ आ जाओ और नसीहत हासिल करो, ... खुदा के वासिते जरा मुझे येह तो बताओ कि इस से बुरा हाल किस का होगा जिसे उस की ख़्वाहिशात ने (फ़िक्रे आखिरत से) दूर कर दिया हो,...... उस से ज़्यादा खसारा पाने वाला कौन होगा जिस ने अपनी आखिरत दुन्या के बदले बेच डाली। येह कैसी ग़फ्लत है जो तुम्हारे दिलों पर छा गई है....... येह कैसी जहालत है जिस ने तुम्हारे ऐबों को तुम्हारी निगाहों से ओझल कर दिया है ?...... क्या तुम अपने इर्द गिर्द मौत की तलवारों को चमक्ते हुए नही देखते हालां कि मौत की आहटें तुम्हारे दरमियान वाकेअ होती रहती हैं और उस की निगाहें तुम पर जमी हुई हैं और उस की आज़्माइश तुम्हारे उज़्र को मिटाने वाली हैं और उस के तीर तुम में से बहुत सारों को लग चुके हैं और येह तुम्हें भी घेरे में ले चुकी है....... तो कब तक और किस लिये तुम पीछे रह गए ?... क्या तुम हमेशा बका की तमअ रखते हो ?...... हरगिज़ नही वाहिद व समद की कुसम ! मौत ताक में है येह न किसी बाप को छोड़ती है और न बेटे को । अल्लाह तुम पर रहूम फ़रमाए अपने मौला की इबादत में खूब कोशिश करो और गुनाहों से दूर हो जाओ ताकि वोह तुम से महब्बत फ़रमाए ।

तौबा की अहमियत

"तौबा" एक अज़ीम दौलत और कीमती खुदाई तोहफा है। इसके ज़रिये बन्दा अपनी बदआमालियों और गुनाहो को ोोकर अल्लाह तआला का कुर्ब हासिल कर सकता है। हर ज़माने में तौबा के ज़रिये गुनाहगारों ने भरपूर फाइदा उठाया है, लेकिन जूँ जूँ कियामत करीब आती जा रही है इस नेमते खुदावन्दी को लोग फरामोश करते (भूलते जा रहे हैं और इन्तिहा दर्जे की ग़फ़लत बरत रहे हैं जबकि आज के लोगों को पिछले लोगों के मुकाबले तौबा की ज्यादा ज़रुरत है क्योंकि आज पहले के मुकाबले गुनाह ज़्यादा आम है। कुरआने करीम को गहराई से पढ़ें तो अन्दाज़ा होगा कि अल्लाह तआला ने तौबा की कितनी ताकीदें फरमाई हैं । अल्लाह फरमाता है:

गुनाहों से तौबा

ऐ गुनाहों पर काइम रहने और अहकामे खुदा वन्दी को छोड़ देने वाले ! फ़ितने और गुमराही की पैरवी करने वाले ! तू अपने जुर्म पर कब तक इसरार करता रहेगा ? और तू रब के कुर्ब का जरीआ बनने वाले आमाल से कब तक भागता रहेगा ? तू दुन्या से ऐसी चीज़ तलब करता है जो तुझे मिलने वाली नही, क्या तुझे अल्लाह की तक्सीम कर्दा रिज़्क पर भरोसा नही है कि तू उस के हुक्म पर अमल नही करता ।

मेरे इस्लामी भाई ! खुदा की क़सम ! अगर तेरा येही हाल रहा तो नसीहत तुझ पर असर न करेगी और हवादिसात तुझे रोक न सकेंगे और न ही ज़माना तुझे आवाज़ देगा और न ही मौत का क़ासिद तुझे ख़बरदार करेगा, ऐ मिस्कीन ! गोया तू येह समझता है कि तू हमेशा ज़िन्दा रहेगा और कभी न भुलाया जाएगा। खुदा की क़सम ! गुनाहों से डरने वाले काम्याब हो गए और परहेज़ गार जहन्नम के अज़ाब से महफूज़ हो गए जब कि तू जुर्म और गुनाह कमाने में लगा हुवा है।

'अक्सामे तौबा'

हज़रते फरीदुद्दीन मसऊद गंजे शकर अलैहिर्रहमा ने फरमाया है के तौबा छः किस्म की है, (1). दिल की तौबा, (2). जबान की तौबा, (3). कान की तौबा, (4). हाथ की तौबा, (5). पैर की तौबा, (6). नफ्स की तौबा।

(1). दिल की तौबा: वो फरमाते है के तौबा को दिल से तस्लीम नही करोगे और ज़बान से तौबा का इकरार नही करोगे तो तौबा दुरुस्त नही होगी। इस लिए के जब तक कोई दिल को दुनिया और उसकी लज़्ज़तों और उसकी दोस्ती से और हसद वो फ़हश, रिया(दिखावा), और लहवो लइब की गंदगियों से साफ न करे और सच्चाई के साथ इन म'आमलात से ताइब(तौबा करने वाला) नही होगा उसकी तौबा तौबा न होगी। जैसे कोई गुनाह करता जाए और तौबा भी करता जाए तो वो तौबा तौबा न होगी, अपनी ख्वाहिशे नफसानी के मुताबिक गुनाह करे और फिर तौबा करे तो इस तरह की तौबा दुरुस्त न होगी

हिकायत : हज़रते उमर रज़ियल्लाहु अन्हु एक मर्तबा मदीना मुनव्वरा की एक गली से गुज़र रहे थे, आप ने एक जवान को देखा जो कपड़ों के नीचे शराब की बोतल छुपाये चला आ रहा था। आप ने पूछा ऐ जवान! इस बोतल में क्या लिए जा रहे हो? जवान बहुत शरमिन्दा हुआ कि मैं कैसे कहूं इस बोतल में शराब है। उस वक्त उस जवान ने दिल ही दिल में दुआ मांगी "ऐ अल्लाह! मुझे हज़रते उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने शर्मिन्दगी और रुसवाई से बचा! मेरे ऐब को ढांप ले, मैं फिर कभी शराब नही पीऊंगा जवान ने हज़रते उमर को जवाब दिया अमीरुल मोमिनीन यह सिरका है। आपने फ़रमाया मुझे देखाओ तो सही चुनान्चे आप ने देखा तो वह सिरका था।

ऐ इन्सान! ज़रा गौर कर एक बन्दा बन्दे के डर से खुलूसे दिल से तौबा करता है तो अल्लाह ने उस की शराब को सिरका में बदल दिया। उसी तरह अगर कोई गुनहगार अपने गुनाहों पर शमिन्दा होकर तौबा कर लेता है तो अल्लाह तआला उस की नाफरमानियों की शराब को फ़रमांबरदारी

के सिरका में तबदील कर देता है।

2) ज़बान की तौबा: जबान की तौबा ये है के हर नामुनासिब कलमे से जबान को दूर रखो और बेहुदा गुफ्तुगु ना करो,गाना न गाओ, झूठ न बोलो, गाली मत बको, गीबत न करो और दुनियावी गुफ्तुगू से तौबा करो। सिवाए अल्लाह जिक्र के कोई दूसरी चीज जबान से न निकलने दे और ऐसी वाहियात बाते जिन में तेरी रजा मंदी न हो मेरे जबान से न निकले। जबान की हिफाजत से इंसान हिलाकत से बच जाता है।

हिकायत : गाना गाने से तौबा

हमारे पीर हुजूर गौसे आजम, शैख अब्दुल कादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि हजरत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु शहर कूफा की एक गली से गुजर रहे थे कि एक फ़ासिक के घर में बहुत से ओबाश जमा थे और शराब पी जा रही है थी, उन लोगों में एक गाने वाला भी था जिस का नाम जादान था वह बरबत पर उमदह आवाज से गा रहा था, हजरत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस की उमदह आवाज को सुन कर फरमाया कैसी अच्छी आवाज़ है काश यह शख्स अपनी उमदह आवाज से कुरआने मजीद की तिलावत करता तो कितना अच्छा होता फिर आप चले गए, जादान ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की आवाज़ सुन ली थी लोगों से पूछा कि यह कौन साहब थे लोगों ने बताया कि यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सहाबी हजरत अब्दुल्लाह विन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु है, जादान ने कहा यह क्या कह रहे थे, तो लोगों ने बताया कि वह कह गए हैं कि कितनी उमदह आवाज है काश गाने की बजाए कुरआन मजीद की तिलावत की जाती तो कितना अच्छा होता यह सुनते ही जादान के दिल पर खौफ़ व हैबत तारी हो गई और उसी वक्त बरबत को तोड़ डाला और दोड़ता, भागता हुआ हजरत अब्दुल्लाह विन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की खिदमत में हाजिर हो गया और रोने लगा, आप ने जादान को

गले लगा लिया और उस के साथ खुद भी रोने लगे और फ़रमाया, मैं कैसे उस से मुहब्बत न करूँ जिस से अल्लाह तआला को मुहब्बत है, उस के बाद जादान ने गाने बजाने से तौबा कर ली और हजरत अब्दुल्लाह विन मस्ऊद रजियल्लाहु तआला अन्हु की खिदमत में रहने लगा। यहाँ तक कि कुरआन पाक पढ़ लिया और इतना इल्म हासिल किया कि इमाम बन गया, चुनांचे हजरत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बहुत सी हदीसें हजरत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत सलमान फारसी रजियल्लाहु तआला अन्हु से जादान ने रिवायत की है। (गुनियतुतालिबीन, स. 262)

3. आंख की तौबा: आंख की तौबा के बारे में अपने फरमाया के आंख की तौबा ये है के इंसान नहा ीाो कर साफ सुथरा हो जाए, फिर दो रकात नफिल नमाज अदा करे और काबा रुख़ हो कर बैठ जाए और दुआ के लिए हाथ उठा कर इल्तिजा करे के खुदावंद तआला तमाम नादिरानी चीजों के देखने से मैंने तौबा की। जिस चीज को देखने का तेरा हुक्म होगा उसके अलावा कोई नामुनासिब चीज नही देखूंगा।

हिकायात : अल्लाह के डर से एक आंख निकाल दी

मन्कूल है कि एक मरतबा हज़रते सयदुना ईसा रुहुल्लाह बारिश की दुआ मांगने के लिये निकले। जब आप सहरा में पहुंचे तो ए'लान फ़रमायाः "मेरे साथ ऐसा शख़्स न आए जिस ने कोई गुनाह किया हो।" यह सुन कर सिवाए एक शख़्स के सब लौट गए। हज़रते सयदुना ईसा ने उस से पूछा : "तुम ने कोई गुनाह नही किया ?" उस ने जवाब दियाः "हुजूर! मुझे अपना कोई गुनाह याद नही सिवाए इस के कि एक दिन मैं नमाज़ पढ़ रहा था पास से एक औरत गुज़री तो मैं ने उसे इस आंख से देखा, उस के गुज़र जाने के बाद मुझ पर अल्लाह के डर से नदामत शमिंदगी) गालिब आई और मैं ने उंगली से वोह आंख निकाल कर उस औरत के पीछे फेंक दी।" येह सुन कर हज़रते सयदुना ईसा ने फरमायाः "तुम अल्लाह से दुआ करो मैं तुम्हारी दुआ पर आमीन कहूंगा।" जब उन्हों ने दुआ मांगी

तो आस्मान पर बादल छा गए, बारिश बरसने लगी और लोग सैराब हो गए। (इहयाउल उलूम)

4. हाथ की तौबा : हाथ की तौबा यह है कि हाथ से होने वाले गुनाह जैसे चोरी, डकैती, क़त्ल, हस्त मैथून, गैर महरम लड़की को छूना और तमाम हराम काम जो हाथ से होने वाले है उसे अल्लाह के डर से छोड़ देना और दुबारा न करने का इरादा कर लेना

हिकायात : डकैती से तौबा : हज़रत सयिदुना फुज़ेल बिन अयाज़ अलैहिर्रहमा 187 हिजरी बहुत नामवर मुहद्दिस और मशहूर बुजुर्ग गुज़रे हैं। ये पहले डाकू थे। एक मरतबा डाका डालने की गरज से किसी मकान की दीवार पर चढ़ रहे थे कि मकान मालिक कुरआन मजीद की तिलावत में मशगूल था, उसने ये आयत पढ़ी: **तर्जमा: क्या ईमान वालों के लिये अभी वो वक्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह की याद के लिये झुक जाएं।** । जूही ये आयत आपके कान से टकराई, आप खुदा खौ़फ़ से का। पने लगे और बे- इख़्तियार मुंह से निकला: "क्यों नहीं मेरे परवरदिगार ! अब इसका वक्त आ गया है।" चुनान्चे रोते हुए दीवार से उतर पड़े और रात को एक सुनसान बे- आबाद खन्डरनुमा मकान में जाकर बैठ गए। थोड़ी देर बाद वहा एक काफिला पहुचा तो काफिले के लोग आपस में कहने लगे: "रात को सफ़र मत करो, यहा रुक जाओ, फुज़ेल बिन अयाज़ डाकू इसी तरफ रहता है।" आपने काफिले वालों की बातें सुन लीं तो और ज्यादा रोने लगे कि अफ़सोस ! मैं कितना गुनाहगार और पापी हू कि मेरे खौ़फ़ से काफिले रात में सफर नहीं करते और घर में औरतें मेरा नाम लेकर बच्चों को डराती हैं। आप मुसलसल रोते रहे यहां तक कि सुबह हो गई फिर आपने सच्ची तौबा करके ये इरादा किया कि अब सारी ज़िन्दगी काबतुल्लाह की मुजावरी और अल्लाह तआला की इबादत में गुज़ारूगा। चुनान्चे आपने इल्मे हदीस पढ़ना शुरु किया और थोड़े ही अर्से में साहिबे फजीलत मुहद्दिस हो गए और हदीस का सबक देना शुरु कर दिया (तजकिरतुल औलिया, 81)

(5) पांव की तौबा : पांव की तौबा यह है कि ना मुनासिब जगहों पर जाने

से तौबा की जाए और उसकी ख्वाहिश पर पैर बाहर ना निकालें ताकि उसकी तौबा क़बूल हो

हिकायात : ख्वाजा जुन्नून मिश्री रहमतुल्लाहअलैह एक मरतबा सफर कर रहे थे। सफर करते हुए एक वीराने में पहुंच गए जहां एक ग़ार था उस ग़ार में एक बुजुर्ग और साहबे नेअमत दरवेश से उनकी मुलाकात हो गई उस दरवेश का एक पैर बाहर था और एक घर के अंदर और दोनों आंखे हवा में, ग़ार के बाहर जो पैर था वह कटा हुआ पढ़ा था ख्वाजा जुनून मिश्री राहमतुल्लाह अलैह उनके और नजदीक हो गए और सलाम के बाद उन्होंने पूछा क्या बात है जो उस पैर को आपने काट दिया उस बुजुर्ग ने जवाब दिया की ऐ जुन्नून मेरा किस्सा बड़ा तवील है लेकिन पैर काटने का हाल अलबत्ता सुन लो एक रोज मैं घर से बाहर निकला हुआ था एक औरत किसी जरूरत से घर के सामने से गुजरी ख्वाहिश नफ्सानी ने तकाजा किया उस वक्त उस औरत को पकड़ने के लिए मैंने उस पैर को बाहर निकाला वह औरत मेरे सामने से लापता हो गई फौरन मैंने उस पैर को काटकर बाहर फेंक दिया पस ऐ दरवेश आज 40 बरस हो गए कि मैं एक पैर पर खड़ा हूं एकदम नदामत से हैरान हुआ कि कल कयामत के दिन क्या मुंह दिखाऊंगा

(6) नफ्स की तौबा : नफ्स की तौबा यह है कि जिसमें नफ्स को तमाम लज़ीज़ गिज़ा, शहवात और ख्वाहिशों से दूर रखना चाहिए और तमाम चीजों से तौबा करनी चाहिए और नफ्सानी ख्वाहिशात के मुताबिक़ काम नही करना चाहिए। कलामुल्लाह और हदीस शरीफ में है कि जो शख्स ख्वाहिशे नफ्स से अपने आप को रोकेगा वोह बहिश्ती है और उसकी जगह बहिश्त है। कलामुल्लाह में आया है कि जो अपने परवरदिगार से डरता है और गुनाह सरज़द हो जाने के बाद अपने नफ्स को ख्वाहिशात से रोकता है और तौबा करता है वह यक़ीनन जन्नती है और उसका ठिकाना बेशक बहिश्त है।

हिकायत : हज़रत जुन्नुन मिश्री रहमतुल्लाह अलैह एक नवजवान से मुलाकात के लिए और उससे नसीहत हासिल करने पहुंचे तो देखा कि वह

एक दरख़्त पर उलटा लटका हुआ अपने नफ्स से मुसलसल यह कह रहा है कि जब तक तू इबादते इलाही में मेरी हमनवाई नहीं करेगा मैं तुझे यूंही अजीयत देता रहूंगा हत्ता की तेरी मौत वाके हो जाए। यह वाकेआ देखकर आपको उस पर ऐसा तरस आया कि रोने लगे। जब नौजवान आबिद ने पूछा कि यह कौन है जो एक बेहया मासियतकार तरस खा कर रो रहा है। यह सुनकर आपने उसके सामने जाकर सलाम किया और मिजाज़ पुसएँ की। उसने बताया कि चूंकि यह बदन इबादते इलाही पर आमादा नहीं है इसीलिए यह सजा दे रहा हूँ। आपने कहा कि मुझे तो यह गुमान हुआ कि शायद तुमने किसी को कत्ल कर दिया है या कोई गुनाहे अज़ीम सरज़द हो गया है। उसने जवाब दिया कि तमाम गुनाह मखलूक से इख्तलात की वजह से जन्म लेते हैं। इसलिए मैं मखलूक से रस्म व राह को बहुत बड़ा गुनाह तसव्वुर करता हु। तुम वाकई बहुत बड़े ज़ाहिद (परहेजगार) हो। (तजकिरतुल औलिया, 104)

7. कान की तौबा : कान की तौबा ये है के तमाम नामुनासिब बातों के सुनने से तौबा करें और बेहूदा बात ना सुने इस वक़्त इसकी तौबा हो गयी फिर फरमाया के ए दरवेश! इंसान को सुनने की ताकत इसलिए दी गयी है के वह खुदा ए ताला का ज़िक्र सुने और जिस जगह अल्लाह पाक का कलाम सुने इसको कान मे महफूज़ रखे.

क्या हुक्म में बारी होता है इसलिए इसको सुनने की ताकत नही दी गयी है के हर जगह गाली गलोच,हँसी,ठठहा,गाना बजाना,और नुहा सियूँ की आवाज़ सुनता फिरे...जैसा कि हदीश शरीफ में आया है कि जो शक़्स मज़कूरा वाली चीजों को सुनेगा और कान में रखेगा कल क़यामत के दिन इसके कान में शीशा पिघला कर डाला जाएगा।

हिकायात : एक दफा हज़रत अब्दुल्लाह ख़फ़ीफ रहमतुल्लाह तआला अलैहि किसी रास्ते से गुज़र रहे थे के नोहा की आवाज़ इनके कान के पड़ी, फौरन कान में उंगली डाल ली जब घर आये तो आदमी से कहा के थोड़ा शीशा पिघला कर लाओ इनके हुक्म के मुताबिक लोग ले आये आप ने फरमाया इसको मेरे कान में डाल दो आज न सुनने के लायक आवाज़

मेरे कान में पड़ी है आज इस गुनाह का कफ्फ़ारा अदा कर लेता हूँ कल क़यामत का अज़ाब मुझ पर न हो.. आप फरमाते है के फुक़रा ने इसी वजह से अपने को दुनिया और इसकी सोहबत से दूर रखा और गोशा नाशिनी इखतेयार कर ली ताके कुछ भी वाहियात न सुने और यही कान की तौबा है।

दिल की पाकीज़गी

नापाक नफ्स इंसान के दर पै आज़ार है, हर इबादत गुज़ार व हर आरिफ को हर सूरत में रियाकारी, मखलूक के दिखावे और खुद से बचना चाहिए क्योंकि यह ख़बीस नफ्स हर इंसान के दर पै है। यह नफ्स गुमराह करने वाली पसन्दी ख्वाहिशात, तबाह व बर्बाद करने वाली रगबतों और उन लज़्ज़तों का सर चश्मा और मम्बा है जो खुदा और बन्दे के दमियान एक हिजाब (पर्दा) बन जाती हैं। जब तक बदन में रूह मौजूद है। उसकी तबाह कुन ख्वाहिशात से बचना बहुत मुशकिल है ख़्वाह इंसान अबदाल या सिद्दीकीन के भरतबा पर पहुंच जाये ख़्वाह उसकी मौजूदा हालत उसकी साबिका हालत के मुकाबले में ज़्यादा अमन व सलामती की हो (ऐसे दर्जा पर हो जहां नफ्स की फरेब कारियों से अमन हासिल रहता हो) खैर ग़ालिब हो, नूरे मारफत की फरावानी हो, हिदायत शरीके हाल और तौफीके इलाही मुद्दि व मुआविन हो और अल्लाह तआला की हिफाजत मयस्सर हो बई हमा गुनाह से मामून व मसून रहना हमारी खुसूसियत नही है (अवामुन्नास का ख़ास्सा नही है) बल्कि मासूम अनिल ख़ता तो अंबिया अलैहिमुस्सलाम है नबुव्वत और विलायत का फर्क उसी से होता है (यानी नबी मासूम होता है वली मासूम नही)। (गुनियतुत्तालिबीन, 503)

अल्लाह को राज़ी करने वाले लोगः

हज़रते जुन्नून मिस्री रहमतुल्लाह अलैह ने कहा है, अल्लाह तआला के बहुत से ऐसे बन्दे हैं जिन्हों ने गलतियों के पौंधे लगाये, उन्हें तौबा का पानी दिया और हसरत व नदामत का फल खाया। वह दीवानगी के बगैर दीवाने कहलाये और बगैर किसी मशक्कत के लज्जतें हासिल की। यह

लोग अल्लाह और उस के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मअरेफत रखने वाले फसीह व बलीग़ हज़रात हैं और बे-मिसाल हैं, इन्हों ने मुहब्बत के जाम पिये और मुसीबतों पर सब्र करने की दौलत से माला माल हुए फिर आलमे मलकूत में उनके दिल गमज़दा हो गए और आलमे जबरूत के हिजाबात की सैर ने उनके अफकार को जिला बख़्शी, उन्हों ने शमिन्दगी के खेमों में बसेरा किया, अपनी ख़ताओं के सहीफों को पढ़ा और गिरया व ज़ारी (रोने गिड़गिड़ाने) में मशगूल हो गये, यहां तक कि वह अपनी परहेज़गारी की बदौलत जुहद के ऊँचे मरातिब पर फ़ाइज़ हुए, उन्होंने दुनिया को छोड़ने की कड़वाहट को मीठा समझा और सख़्त बिस्तरों को इन्तेहाई नर्म जाना, यहां तक कि उन्हों ने नजात की राह और सलामती की बुनियादों को पा लिया, उन की रूहों को जन्नत के बाग़ों में जगह मिली और हमेशा की ज़िन्दगी के मुस्तहिक करार पाये। उन्हों ने रोनें िोने की ख़न्दको को पाट दिया और ख़्वाहिशात के पुलों को पार कर गये यहां तक कि वह इल्म के हमसाए हुए और हिकमत व दानाई के तालाब से सैराब हुए, वह अकलमन्दी व समझदारी की कश्तियों में सवार हुए, उन्हों ने सलामती के दरिया में नजात की दौलत से किले बनाये और राहत के बाग़ों और इज्ज़त व करामत के ख़ज़ानों के मालिक बन गये। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 17)

गुज़री हुई जिन्दगी पर गौर व फिक्र:

तफ़सीर अबिल्लैस रहमतुल्लाह अलैह में है, जब कोई बन्दा आखिरत की चाहत की वजह से अपनी गुजरी हुई जिन्दगी पर गौर व फिक्र करता है तो यह फिक्र करना उस के दिल के लिए गुस्ल का काम देता है जैसा कि फरमाने नबवी है, एक घड़ी का ग़ौर व फ़िक्र साल भर की इबादत से बेहतर है। लिहाजा हर अकलमन्द के लिए जरूरी है कि अपने पिछले गुनाहों की मगफिरत तलब करे जिन चीजों का इकरार करता है उन में तफ़क्कुर (ग़ौर व फ़िक्र) करे और कियामत के दिन के लिए तोशा बनाये उम्मीदों को कम करे, तौबा में जल्दी करे, अल्लाह तआला का जिक्र करता रहे, हराम चीजो से बचे और नफ्स को सब्र पर आमादा करे।

नफ्स की ख्वाहिशों की पैरवी न करे क्योंकि नफ्स एक बुत की तरह है जो नफ्स की पैरवी करता है वह गोया बुत की इबादत करता है और जो इख्लास से अल्लाह की इबादत करता है, वह अपने नफ्स पर जब्र करता है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 4, पेज 52)

गुनाहों से डरने वालो की फ़ज़ीलत

यह बात अच्छी तरह ज़हन में बैठा लीजिए कि गुनाहों से मुतनब्बह करने वाली बातों में खुदा का खौफ, उस के इन्तिकाम (काम का बदला) का अन्देशा, उस की हैबत और शान व शौकत, उस के अज़ाब का डर और उस की गिरिफ्त बहुत नुमायाँ हैसियत रखती हैं। (मुकाशफुतुल कुलूब, बाब 52)

फरमाने इलाही है कि

"जो लोग अल्लाह तआला के अहकामात की मुखालिफत करते हैं वह इस अमर से डरें कि उन्हें फितना या दर्दनाक अज़ाब पहुँचे।" (मुकाशफुतुल कुलूब, बाब 52)

हिकायत और इब्रत

मरवी है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक जवान के पास तशरीफ लाये जो नज़अ के आलम में था. आप ने फरमाया अपने आप को किस हालत में पाते हो? अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं अल्लाह की रहमत का उम्मीदवार हूँ और अपने गुनाहों से खौफजदा हूँ। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह सुन कर फरमाया कि किसी बन्दे के दिल में ऐसी दो बातें जमा नही होती मगर अल्लाह तआला उस बन्दे की उम्मीद पूरी कर देता है और गुनाहों के खौफ से उसे बे-नियाज़ कर देता है। (मुकाशफुतुल कुलूब, बाब 52)

जहन्नम का डर

वहब इब्नुलवरद से मरवी है, हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि जन्नत की मुहब्बत और जहन्नम का डर मुसीबत के वक्त सब्र देता है, और यह दो चीजें दुनियावी लज़्ज़तो, ख्वाहिशात और नाफरमानियों से दूर कर देती है। (मुकाशफुतुल कुलूब, बाब 52)

कम हंसते और ज़्यादा रोते

फ़माने नबवी है कि जो कुछ मैं सुनता हूँ, क्या तुम सुनते हो? आसमान चर-चराता है और उस का हक है कि वह चरचराये, अल्लाह तआला की कसम आसमान में चार अंगुल जगह नही है जिस में फ़रिश्ता बारगाहे इलाही में सज्दा-रेज, कियाम करने वाला या रुकूअ करने वाला न हो, जो कुछ मैं जानता हूँ अगर तुम जानते तो कम हंसते और ज़्यादा रोते और निकल जाते या पहाड़ों पर चढ़ जाते और अल्लाह तआला के शदीद इन्तेकाम और हैबत व जलाल के डर से अल्लाह तआला की पनाह ढूँढते । (मुकाशफुतुल कुलूब, बाब 52)

दुनिया मे हँसने वाला आख़िरत में रोयेगा

एक रिवायत में जनाबे बकर बिन अब्दुल्लाह मज़नी रहमतुल्लाह अलैह का कौल है जो लोग हंसते हुए गुनाह करते हैं, वह रोते हुए जहन्नम में जाएंगे। (मुकाशफुतुल कुलूब, बाब 52)

हदीस शरीफ में है कि अगर मोमिन अल्लाह तआला के तैयार किये हुये तमाम अज़ाबों को जानता तो कभी भी जहन्नम से बे डर न होता (यानी गुनाह नही करता)। (मुकाशफुतुल कुलूब, बाब 52)

सहीहैन में है, जब यह आयत नाज़िल हुई कि "और अपने करीबी रिश्तेदारों को डरा"तो आप खड़े हो गये और फरमाया ऐ गिरोहे कुरैश! अल्लाह तआला से अपने नफ्सों को खरीद लो, मैं तुम्हें अल्लाह तआला के मामलात में किसी चीज से बे-परवाह नही करूँगा, ऐ बनी अब्दे मनाफ

(हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रिश्तेदार) मैं तुम्हें खुदा के हुक्मों में से किसी चीज़ से बे-परवाह नही करूँगा, ऐ अब्बास! (रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा) मैं आप को अल्लाह तआला के अज़ाब से किसी चीज़ से बे-परवाह नही करूँगा, ऐ सफिय्या! (रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फूफी) मैं तुम को अल्लाह के सामने किसी चीज़ से बेपरवाह नही करूँगा, ऐ फातिमा! (हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेटी) मेरे माल से जो चाहे माँग लो मगर मैं अल्लाह के सामने तुम्हें किसी चीज़ से बेपरवाह नही करूंगा।

हज़रते आइशा सिद्दीका रजियल्लाहु अन्हा ने यह आयत पढ़ी और जो लोग अल्लाह की अता कर्दा चीजों से देते हैं और उन के दिल इस बात से डरते हैं कि वह अल्लाह तआला की तरफ लौटने वाले हैं।

और पूछा या रसूलल्लाह! क्या यह वह शख्स है जो ज़िना करता है, चोरी करता है, शराब पीता है, मगर खुदा का डर भी रखता है? आपने फरमाया ऐ अबू बकर की बेटी! ऐसा नही है बल्कि इस से मुराद वह शख्स है जो नमाज पढ़ता है, रोजा रखता है. सदक़ा देता है मगर इस बात से डरता है कि कही वह ना-मक़बूल न हो। इसे अहमद ने रिवायत किया है।

जनाबे हसन बसरी रदीयल्लाहु अन्हु से कहा गया, ऐ अबू सईद! तुम्हारी क्या राय है, हम ऐसे लोगों की मजलिस में बैठते हैं जो हमें खुदा की रहमत से उम्मीदें लगाये रखने की ऐसी बातें सुनाते हैं कि हमारे दिल खुशी से उड़ने लगते हैं। आप ने फ़रमाया ब-खुदा तुम अगर ऐसी कौम में बैठते जो तुम्हें खुदा के डर की बातें सुनाते और तुम को अज़ाबे इलाही से डराते यहाँ तक कि तुम अम्न पालो, वह तुम्हारे लिए बेहतर है उस चीज़ से कि तुम ऐसे लोगों में बैठो जो तुम को निडर और उम्मीद में रखें यहाँ तक कि तुम को ख़ौफ़ आ घेरे ।

फारूके आज़म और खौफे खुदा

हज़रते फारूके आज़म उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को जब नेज़े से ज़ख्मी कर दिया गया और उन की वफात का वक्त करीब आया तो उन्हों ने अपने बेटे से कहा बेटे! मेरा चेहरा ज़मीन पर रख दो अफसोस और शदीद अफसोस! अगर अल्लाह ने मुझ पर रहम न फरमाया। हज़रते इबने अब्बास रजियल्लाहु अन्हुमा ने कहा अमीरुल मोमिनीन! आप को किस चीज़ का डर है? अल्लाह तआला ने आप के हाथ से फुतूहात कराई, शहर आबाद कराये, उन्होंने कहा मैं इस बात को पसन्द करता हूँ कि मुझे बराबर ही में छोड़ दिया जाये यानी न नुकसान और न नफा दिया जाए। हजरते ज़ैनुल आबिदीन बिन अली बिन हसन रज़ियल्लाहु अन्हुम जब वजू से फारिग होते तो कापने लग जाते, लोगों ने सबब पूछा तो आप ने फरमाया तुम पर अफसोस है, तुम्हें पता नही मैं किस की बारगाह में जा रहा हूँ और किस से मुनाजात का इरादा कर रहा हूँ। (मुकाशफुतुल कुलूब, बाब 52)

हज़रते अहमद बिन हम्बल रदीयल्लाहु अन्हु ने फरमाया खुदा के डर ने मुझे खाने पीने से रोक दिया, अब मुझे खाने पीने की ख्वाहिशात नही होती। (मुकाशफुतुल कुलूब, बाब 52)

सहीहैन की रिवायत है, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन सात आदमियों का जिक्र किया कि जिस दिन कोई साया नही होगा तो उन्हें अपने अर्श के साया में जगह देगा, उन में से एक वह आदमी है जिस ने तन्हाई में अल्लाह तआला के अज़ाब और वईद को याद किया और अपनी गलतियों को याद करके खुदा के डर से उस की आँखों से आँसू बह निकले और खुदा के डर की वजह से वह नाफरमानी करना छोड़ दिया। (मुकाशफुतुल कुलूब, बाब 52)

अज़ाबे जहन्नम से महफूज़ दो आँखें

हज़रते इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है हुजूर सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम ने फरमाया दो आँखें ऐसी हैं जिन्हें आग नही छूएगी. एक वह आँख जो रात में अल्लाह के डर से रोई और दूसरी वह आँख जिस ने खुदा की राह में निगहबानी करते हुए रात गुज़ारी। (मुकाशफुतुल कुलूब, बाब 52)

हदीस़ : क़यामत में नही रोने वाली आंख

हज़रते अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कियामत के दिन हर वह आँख रोएगी मगर जो आँख अल्लाह की हराम की हुई चीज़ों से रुक गई, जो आँख खुदा की राह में बेदार रही और जिस आँख से खुदा के डर की वजह से मक्खी के सर के बराबर आँसू निकला वह रोने से महफूज़ रहेगी। (मुकाशफुतुल कुलूब, बाब 52)

हिकायत : ख़ौफ़े खुदा से रोने का इन्आम :

हज़रते सयदुना अबू बक्र सैदलानी कहते हैं कि मैं ने हज़रते स,यदुना सुलैमान बिन मन्सूर बिन अम्मार को फरमाते हुए सुना कि मैं ने ख़्वाब में अपने द्य वालिद को देखा तो पूछा : "या'नी आप के रब ने आप के साथ क्या मुआ-मला किया ?" उन्हों ने जवाब दिया कि रब ने मुझे अपना कुर्ब अता फरमाया फिर मुझ से पूछा : "ऐ बदकार बुड्ढे! क्या तू जानता है कि मैं ने तुझे क्यूं बख़्शा ?" मैं ने अर्ज की: "मैं नहीं जानता।" फ़रमाया: "एक दिन तूने एक द्य इज्तिमाअ में लोगों को रुलाया था उन में मेरा एक ऐसा बन्दा भी रो पड़ा था जो मेरे ख़ौफ़ से कभी नहीं रोया तो मैं ने उस की द्य मफिरत फ़रमा दी और उस के सदके तमाम अहले मजलिस की द्य मरिफ़रत फ़रमा दी तुम भी उन में शामिल थे जिन की मैं ने उस के सदके मफिरत फ़रमाई ।"

हदीस : खुदा के डर से रोने वाला जहन्नम से आज़ाद है

तिमिज़ी ने हसन और सही कह कर हज़रते अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से

रिवायत की है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया वह शख़्स जहन्नम में हरगिज़ दाखिल नही होगा जो अल्लाह के डर से रोया यहाँ तक कि दूीा दोबारा थन में लौट आये और खुदा की राह का गुबार औरीुवाँ एक जगह नही होंगे।

हिकायत : खुदा के डर से रोने वाला गुनाहगार बख़्शा गया

एक आदमी जो गुनाहों में मुनहमिक रहता था. वह मर गया, वह बसरा के करीब रहता था मगर जब वह मरा तो उसकी औरत ने ऐसा कोई आदमी न पाया जो जनाज़े उठाने में उसका हाथ बटाता क्योंकि उसके हमसाए उसके कसरते गुनाह के सबब किनारा कश हो गए चुनान्चे उसने दो मज़दूर उजरत पर लिये और वह उसे जनाज़ा गाह में ले गए मगर किसी ने उसकी नमाजे जनाजा न पढ़ी और वह उसे सहरा में दफन करने के लिए ले गए। उस इलाके के नजदीक पहाड़ में एक बहुत बड़ा जाहिद रहता था, औरत जब अपने शौहर का जनाजा उठवा कर ले गई तो ज़ाहिद को मुन्तजिर पाया चुनान्चे ज़ाहिद ने उसकी नमाजे जनाजा पढ़ाने का इरादा किया तो शहर में यह खबर फैल गई कि जाहिद पहाड़ से उतरा है ताकि फलां शख़्स की नमाज़े जनाजा पढ़ाए चुनान्चे शहर के सब लोग वहां रवाना हो गए और उन्होंने ज़ाहिद की इक्तेदा में उसकी नमाजे जनाजा पढ़ी।

लोगों को ज़ाहिद के इस फेअल से सख्त हैरत हुई। ज़ाहिद ने कहा कि मुझ से ख्वाब में कहा गया है कि फलां जगह जाओ, वहां तुम्हें एक जनाज़ा नज़र आएगा जिसके साथ सिर्फ एक औरत होगी, तुम उस शख्स की नमाज़े जनाज़ा पढ़ो क्योंकि वह बख़्सा गया है, यह बात सुन कर लोगों के तअज्जुब में और इज़ाफा हुआ। ज़ाहिद ने औरत से उस मर्द के हालात पूछा और उसकी बख्शिश के असबाब की तहकीक करना चाही तो औरत ने कहा जैसा कि मशहूर है उसका सारा दिन शराब खाने में गुज़रता और शराब में मस्त रहते गुजरता था। ज़ाहिद ने कहा कि क्या तुम इसकी किसी नेक आदत को भी जानती हो? औरत ने कहा हां तीन चीजें जानती हूं, जब वह सुबह के वक्त मदहोशी से इफाका पाता तो कपडे तब्दील

करता, वुज़ू करता, और सुबह की नमाज जमाअत से पढ़ा करता था फिर शराब खाने में जाता और बदकारियों में मशगूल रहता, दूसरे यह कि उसके घर में हमेशा एक या दो यतीम रहा करते थे, उनसे वह औलाद से भी ज्यादा मेहरबानी से पेश आया करता था। तीसरे यह कि जब वह रात की तारीकी में नशा की मदहोशी से इफाका पाता तो रोता और कहता ऐ रब्बे करीम जहन्नम के कोनों में से कौन से कोने को मेरे इस ख़बीस नुफ्स से तू पुर करेगा? ज़ाहिद यह सुनते ही लौट गया और उसकी बख्शिश का राज़ खुल गया। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 108, पेज 558)

हज़रते अब्दुल्लाह बिन अमर बिन अल-आस रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ौल है कि हज़ार दीनार खुदा की राह में खर्च करने से मुझे खुदा के डर से एक आँसू बहा लेना ज्यादा पसन्द है।

जनाबे औन बिन अब्दुल्लाह रदीयल्लाहु अन्हु कहते हैं, मुझे यह रिवायत मिली है कि इंसान के खुदा के डर से बहने वाले आँसू इंसान के जिस्म के जिस हिस्से पर लगते है उस हिस्से को अल्लाह तआला जहन्नम पर हराम कर देता है और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सीनए अनवर रोने की वजह से ऐसे जोश मारता था जैसे हांडी उबलती और जोश मारती है (यानी जैसे भड़कती आग पर हाँडी जोश मारती है)

किन्दी का कौल है कि अल्लाह के डर से रोने वाले का एक आँसू समुन्दरों जैसी तूल व अरीज़ आग को बुझा देता है।

इब्ने सिमाक की अपने नफ्स को सरजनिश

जनाबे इब्ने सिमाक रहमतुल्लाह अलैह अपने नफ्स को सरजनिश करते और फ़रमाते कि कहने को तू जाहिदों जैसी बातें करते हो और अमल मुनाफिकों जैसा करते हो और इस कज रवी के बावजूद जन्नत में जाने का सवाल करते हो, दूर हो! जन्नत के लिए दूसरे लोग हैं जिन के आमाल हमारे आमाल से क़तई मुख़्तलिफ हैं। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 52)

हज़रते जाफ़र की नसीहतें

हजरते सुफियान सौरी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रते जाफर सादिक रजियल्लाहु अन्हु की खिदमत में मैं हाज़िर हुआ और अर्ज की ऐ रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लख़्ते जिगर! मुझे वसीयत कीजिए! आप ने फ़रमाया सुफियान! झूटे में मुरव्वत नही होती, हासिद में खुशी नही होती, ग़मगीन में भाई-चारा नही होता और बद-खुल्क के लिए सरदारी नही होती। मैं ने कहा ऐ रसूले खुदा के फरज़न्द! कुछ और नसीहत फरमाइये! आप ने फरमाया ऐ सुफियान अल्लाह तआला की मना की हुई चीजों से रुक जा तो आबिद होगा, अल्लाह की तक़सीम पर राज़ी हो तो मुसलमान होगा, जैसी तुम लोगों से दोस्ती चाहते हो तुम भी उन के साथ वैसी दोस्ती रखो, तब तुम मोमिन होगे, बुरों से दोस्ती न रख वरना तू भी बुरे अमल करने लगेगा, चुनान्चे हदीस में है कि आदमी अपने दोस्त के तरीके पर होता है, तुम यह देखो कि तुम्हारी दोस्ती किस से है, और अपने कामों में उन लोगों से मशवरा लो जो खुदा का डर रखते हों, मैं ने अर्ज किया ऐ रसूले खुदा के फरज़न्द! कुछ और नसीहत कीजिए! आप ने फरमाया जो बगैर क़बीला के इज़्ज़त और बगैर हुकूमत के हैबत चाहे उसे चाहिए कि खुदा की नाफरमानी की ज़िल्लत से निकल कर अल्लाह की फ़रमाबरदारी में आ जाये।

मैने कहा ऐ रसूले खुदा के फरज़न्द! कुछ और नसीहत फरमाइए! आपने फरमाया मुझे मेरे वालिद ने तीन बेहतरीन अदब की बातें सिखलाई और फ़रमाया ऐ बेटे! जो बुरों की सोहबत इख़्तियार करता है, सलामत नही रहता, जो बुरी जगह जाता है मुत्तहिम (बदनाम) होता है और जो अपनी ज़बान की हिफाजत नही करता शर्मिन्दगी उठाता है।

इब्ने मुबारक रज़ियल्लाहु अन्हु का कहना है कि मैंने वहीब बिन वरद रदीयल्लाहु अन्हु से पूछा कि जो शख़्स अल्लाह की नाफ़रमानी करता है, क्या वह इबादत का मज़ा पाता है? उन्होंने कहा नही और मसियत का इरादा करने वाला भी नही।

इमाम अबुल फर्ज बिन जौज़ी रहमतुल्लाह अलैह का क़ौल है कि ख़ौफ़ ख़्वाहिशाते नफ्सानी को जलाने वाली आग है, जिस कदर यह आग शहवात को जलाएगी और गुनाहों से रोकेगी, उस कदर यह बेहतरीन होगी, इसी तरह जिस क़दर यह ख़ौफ़ इबादत पर वर-अंगेख्ता करेगा उसी कदर यह बेहतरीन होगा और खौफ साहिबे इज्ज़त कैसे नही होगा, इसी से ही तो पाकदामनी, तकवा, परहेज़गारी, मुजाहिदात और ऐसे उम्दा आमाल का ज़हूर होता है जिन से अल्लाह तआला का कुर्ब हासिल होता है जैसा कि आयतों और हदीसों से साबित होता है चुनान्चे इरशादे इलाही हैउन लोगों के लिए हिदायत और रहमत है जो अपने रब से डरते हैं। और फ़रमाने इलाही है अल्लाह उन से राजी हुआ और वह अल्लाह से राजी हुए, यह उस के लिए है जो अपने रब से डरा। नीज फरमाने इलाही है और मुझ से डरो अगर तुम ईमानदार हो। मज़ीद इरशाद फरमाया और जो शख़्स अपने परवरदिगार के आगे खड़े होने से डरता है, उस के लिए दो जन्नतें हैं। और इरशाद फरमाया अलबत्ता नसीहत हासिल करेगा जो शख़्स डरता है। फरमाने इलाही है सिवाए इस के नही कि अल्लाह के बन्दों में से आलिम डरते हैं। और हर वह आयत या हदीस जो इल्म की फ़ज़ीलत पर दलालत करती है वह खौफ की फजीलत पर भी दलालत करती है क्यों कि ख़ौफ इल्म ही का फल है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 52)

गुनाह कैसे झड़ते है

इब्ने अबिदुनिया की रिवायत है हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब खुदा के डर से बन्दे का जिस्म काँपता है और उसके रोंगटे खड़े हो जाते हैं तो उस के गुनाह ऐसे झड़ते हैं जैसे सूखे पेड़ से पत्ते झड़ते हैं।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला फरमाता है मुझे इज्ज़त व जलाल की क़सम! मैं अपने बन्दे पर दो ख़ौफ़ और दो अमन जमा नही करता, अगर वह दुनिया में मुझ से अमन में (बे ख़ौफ़)

होता है तो मैं कियामत के दिन ख़ौफ़ज़दा करूँगा और अगर दुनिया में वह मुझ से डरता है तो मैं उसे कि़यामत के दिन बे-ख़ौफ़ कर दूँगा।

अबू सुलैमान दुर्रानी रहमतुल्लाह अलैह का क़ौल है कि हर वह दिल जिस में खुदा का डर नही है, वीराना है। और फ़रमाने इलाही है पस खुदा की तदबीर से बेख़ौफ़ नही होते हैं मगर ख़सारा पाने वाली क़ौम ही बेख़ौफ़ होती है।

शैतान के रास्ते पर न चलो

अल्लाह फ़ामरता है : ऐ ईमान वालो शैतान के क़दमों पर न चलो, और जो शैतान के क़दमों पर चले तो वह तो बेहयाई और बुरी ही बात बताएगा और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत तुम पर न होती तो तुम में कोई भी कभी सुथरा न हो सकता हाँ अल्लाह सुथरा कर देता है जिसे चाहे और अल्लाह सुनता जानता है (सूरह- नूर, आयात न 21)

हिकायत : तौबा का दरवाज़ा कब तक खुला रहेगा

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत हैं उन्होंने कहा जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम हिदुस्तान की सर ज़मीन पर उतारे गए उस वक्त उनका सर आसमान को छू रहा था, ज़मीन ने अपने रब से आदम अलैहिस्सलाम के शक्ल की शिकायत की तो अल्लाह तआला ने अपना दस्ते कुदरत उनके सर पर रखा तो वह 70 गज़ कम हो गए और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम अपने साथ खजूर, केला और लीमूँ लेकर आये तो जब वह ज़मीन पर तसरीफ ले आये शैतान के तरफ इशारा करते हुए अपने रब से अर्ज़ किया ए मेरे रब तूने उसको और मेरे दरमियान अदावत पैदा कर दी है अगर तू उसके खिलाफ मेरी मदद नही करेगा तो मैं उस पर कादिर ना हो सकूंगा तो अल्लाह ने फरमाया: मैं तुमसे पैदा होने वाले हर बच्चे यानी हर इंसान के साथ एक फरिश्ता मुकर्रर कर दूंगा' उन्होंने अर्ज़ किया ऐ रब उस पर कुछ इज़ाफा फरमा दे अल्लाह ने फरमाया 'जब तक जिस्म में रूह रहेगी उस वक्त तक उसके लिए तौबा का

दरवाजा खुला रहेगा' फिर अर्ज़ किया या इलाही उस पर कुछ इजाफा फरमा दे तो अल्लाह ने फरमाया 'मैं एक गुनाह पर एक गुनाह और एक नेकी पर 10 गुना अज्र या जितना मैं चाहूं लिखूंगा' उसके बाद इब्लीस ने बारगाह ए इलाही में अर्ज किया ऐ रब यह तेरा मुकर्रम बन्दा है अगर तू उसके खिलाफ मेरी मदद नही फ़रमाएगा तो मैं उस पर क़ाबू नही पा सकूंगा तो अल्लाह ने फ़रमाया 'आदम के लड़कों के बराबर तेरे भी लड़के होंगे' उसने अर्ज़ किया ऐ रब इस पर कुछ इज़ाफा फ़रमा दे अल्लाह ने फरमाया 'तू उनकी रगों में खून की तरह दौड़ेगा और उनके दिल मे अपना घर (कब्जा) बना लेगा,' इब्लीस ने फरमाया ऐ रब इस पर कुछ और इजाफ़ा फ़रमा तो अल्लाह ने फरमाया : '"और उन पर लाम (लश्कर) बां ला अपने सवारों और अपने प्यादों का और उनका साझी(शरीक) हो मालों और बच्चों में"।' (मकाईदुश्शैतान, इब्ने अबिद्दुनिया)

मेरी बारगाह में तौबा करो

हज़रते मालिक बिन दीनार फ़रमाते हैं कि तौरेत शरीफ़ में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि बादशाहों के दिल मेरे क़ब्ज़े में हैं जो मेरी इताअत करेगा मैं उस के लिये बादशाहों को रहमत बनाऊंगा और जो मेरी मुखालफत करेगा उस के लिये उन को अज़ाब बनाऊंगा फिर तुम बादशाहों को बुरा कहने में मशगूल न हो बल्कि मेरी बारगाह में तौबा करो मैं उन को तुम पर महरबान कर दूंगा। (तम्बीहुल मुग्तरीन, अल बाबुल अव्वल, सब्रहम अला जोरुल हुक्काम, स. 43)

अल्लाह बन्दो के तौबा से राज़ी होता है

फ़रमाने नबवी है कि रहमते खुदावन्दी को उस इन्सान की तौबा से ज्यादा खुशी होती है जो हलाकत खेज़ ज़मीन में अपनी सवारी पर खाने पीने के सामान लादे सफर कर रहा हो और वहां आराम की गरज़ से रुक जाए, वह सर रखे तो उसे नीद आ जाये, जब सो कर उठे तो उस की सवारी सामान के साथ गाइब हो और वह उस की तलाश में निकले यहां तक कि

सख्त गमएँ और प्यास से बद-हाल होकर उसी जगह वापस आ जाये जहां वह पहले सोया था और मौत के इन्तेज़ार में अपने बाज़ू का तकिया बना कर लेट जाये, अब जो वह जागा तो उसने देखा उस की सवारी सामान के साथ उस के करीब मौजूद है। अल्लाह तआला को बन्दे की तौबा से उस सवारी वाले शख्स से भी ज्यादा खुशी होती है जिस का सामान जागने के बाद उस को मिल गया है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 17)

हजरते हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि जब अल्लाह तआला ने हज़रते आदम अलैहिस्सलाम की तौबा कबूल फ़रमाई तो फ़रिश्तों ने उन्हें मुबारकबाद पेश की। जिबरील व मीकाईल अलैहिमुस्सलाम हाज़िर हुए और कहा, ऐ आदम! आपने तौबा कर के अपनी आँखों को ठन्डा कर लिया। आदम अलैहिस्सलाम ने फरमाया अगर इस तौबा की कबूलियत के बाद अल्लाह तआला से फिर सवाल करना पड़ा तो क्या होगा? अल्लाह तआला ने आदम अलैहिस्सलाम पर वह्यी नाज़िल फरमाई कि ऐ आदम! तू ने अपनी औलाद को मेहनत और दुख तकलीफ का वारिस बनाया और हम ने उन्हें तौबा बख्शी, जो भी मुझे पुकारेगा मैं तेरी तरह उस की पुकार को सुनूंगा, जो मुझ से मगफिरत का सवाल करेगा मैं उसे नाउम्मीद नही करूंगा, क्यों कि मैं करीब हूं दुआओं को कबूल करने वाला हूं, मैं तौबा करने वालों को उन की कब्रों से इस तरह उठाऊंगा कि वह हंसते मुस्कराते हुए आयेंगे, उन की दुआयें मक़बूल होंगी। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 17)

फरमाने नबवी (अला साहेबिहिस्सलातु वस्सलाम) है, अल्लाह तआला का दस्ते रहमत रात के गुनहगारों के लिए सुबह तक और दिन के गुनहगारों के लिए रात तक फैला रहता है उस वक्त तक कि जब पच्छिम से सूरज निकलेगा और तौबा का दरवाजा बन्द हो जाएगा (यानी कियामत तक अल्लाह तआला बन्दों की तौबा कबूल फरमाएगा) (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 17)

ज़मीन भर के गुनाह माफ:

हदीस : रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है कि अगर तुम ने आसमान के बराबर गुनाह कर लिए और फिर शर्मिन्दा होकर तौबा कर ली तो अल्लाह तआला तुम्हारी तौबा कबूल कर लेगा। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 17)

हिकायत : बहुत दर्दअंगेज़ तौबा :

हजरते मूसा अलैहिस्सलाम के जमाने में एक शख्स ऐसा था जो अपनी तौबा पर कभी काइम नही रहता था, जब भी वह तौबा करता उसे तोड़ देता यहां तक कि उसे इस हाल में बीस साल गुजर गये। अल्लाह तआला ने हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ वही की, मेरे उस बन्दे को कह दो मैं तुझ से सख्त नाराज हूं। जब हजरते मूसा अलैहिस्सलाम ने उस आदमी को अल्लाह का पैगाम दिया तो बहुत ग़मगीन हुआ और जंगलों की तरफ निकल गया, वहां जाकर अल्लाह तआला के दरबार में अर्ज किया ऐ रब्बे जुलजलाल! तेरी रहमत जाती रही या मेरे गुनाहों ने तुझे नाराज किया? तेरी बख्शिश के ख़ज़ाने ख़त्म हो गये या बन्दों पर तेरी निगाहे करम नही रही? तेरे माफी व दरगुज़र से कौन सा गुनाह बड़ा है? तू करीम है, मैं बखील हूं। क्या मेरा बुख़्ल तेरे करम पर ग़ालिब आ गया है? अगर तू ने अपने बन्दों को अपनी रहमत से महरूम कर दिया तो वह किस के दरवाज़े पर जायेंगे? अगर तू ने उन्हें दरबार से निकाल दिया तो वह कहां जायेंगे? ऐ रब्बे कादिर व कहहार! अगर तेरी बख़्शिश जाती रही और मेरे लिए अज़ाब ही रह गया है तो तमाम गुनाहगारों का अज़ाब मुझे दे दे, मैं उन पर अपनी जान कुर्बान करता हूं। अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम से फ़रमाया जाओ और मेरे बन्दे से कह दो कि तू ने मेरे कमाले कुदरत और अफ़्व व दरगुज़र की हकीकत को समझ लिया है। अगर तेरे गुनाहों से ज़मीन भर जाये तब भी मैं बख़्श दूंगा। (मुकाशफतुल कुलूब , बाब 17, पेज 127)

फरमाने नबवी है- आदमी गुनाह करता है फिर उसी गुनाह की वजह से

जन्नत में दाखिल होता है। पूछा गया हुजूर वह कैसे? आपने फ़रमाया गुनाह के बाद फ़ौरन उस की आँखें अल्लाह तआला के दरबार में आंसू बहाती हैं।

फरमाने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है कि नदामत गुनाहों का कफ़्फ़ारा है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 17)

नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है, गुनाहों से तौबा करने वाला ऐसा है जैसे उस ने कोई गुनाह न किया हो।(मुकाशफतुल कुलूब, बाब 17)

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में एक हबशी हाज़िर हुआ और अर्ज की या रसूलल्लाह मैं ख़तायें करता हूं, क्या मेरी तौबा कबूल होगी? आपने फरमाया हाँ! वह कुछ दूर जाकर वापस लौट आया और दरियाफ्त किया कि जब मैं गुनाह करता हूं तो अल्लाह तआला देखता है? आपने इरशाद फरमाया हाँ! हबशी ने इतना सुनते ही एक चीख मारी और उस की रूह परवाज़ कर गई। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 17)

फरमाने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है, नेकियां गुनाहों को इस तरह दूर ले जाती हैं जैसे पानी मैल को बहा ले जाता है। (यानी दूर कर देता है) जनाब सईद बिन मुसैइब रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि यह आयत उस शख्स के बारे में नाज़िल हुई जो गुनाह करता फिर तौबा कर लेता फिर गुनाह करता और फिर तौबा कर लेता था। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 17)

जनाबे फुज़ैल रहमतुल्लाह अलैह का कौल है- रब्बे जुल जलाल का इरशाद है, गुनहगारों को बशारत दे दो, अगर वह तौबा करें तो मैं क़बूल कर लूंगा। सिद्दीक़ीन को आगाह कर दीजिए अगर मैंने आमाल का वज़न किया तो उन्हें अज़ाब से कोई नही बचा सकता। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 17)

दिल ख़ौफे खुदा से काँप गया

हदीस : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा का इरशाद है जो गुनाहों की याद में शर्मिन्दा हो गया और उस का दिल ख़ौफे खुदा से काँप गया, उस के गुनाहों को मिटा दिया जाता है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 17)

हिकायत: ख़ौफे खुदा से काँपने वाला बख़्शा गया

बनी इसराईल (पिछली उम्मत) में एक कसीरुल अयाल (ज़्यादा औलाद वाला) आबिद था, उसे तंगदस्ती ने घेर लिया, जब बहुत परेशान हुआ तो अपनी औरत से कहा जाओ, किसी से कुछ मांग कर लाओ। औरत ने एक ताजिर के यहां जाकर खाने का सवाल किया, ताजिर ने कहा अगर तुम मेरी जिस्मानी आरजू पूरी कर दो तो जो चाहो ले सकती हो, औरत बेचारी चुप चाप खाली हाथ घर लौट आई। बच्चों ने जब माँ को खाली हाथ आते देखा तो भूक से चिल्लाने लगे और कहने लगे। अम्मी! हम भूक से मर रहे हैं हमें कुछ खाने को दो औरत दोबारा उसी ताजिर के यहां लौट गई और खाने का सवाल किया, ताजिर ने फिर वही बात की जो पहले कह चुका था।

औरत रज़ामन्द हो गई मगर जब यह दोनों तन्हाई में पहुंचे तो औरत ख़ौफ़ से कांपने लगी। ताजिर ने पूछा किस से डरती हो? उस ने कहा मैं उस रब्ब के ख़ौफ़ से कांपती हूं जिस ने हमें पैदा किया। तब ताजिर बोला जब तुम इतनी तंगदस्ती और मुफ़्लिसी में भी खुदा का ख़ौफ़ रखती हो तो मुझे भी अल्लाह के अज़ाब से डरना चाहिए। यह कहा और औरत को बहुत सा माल व मनाल देकर इज्ज़त के साथ रवाना किया।

अल्लाह तआला ने पैग़म्बरे वक़्त मूसा अलैहिस्सलाम पर वही भेजी कि फुलां इब्ने फुलां के पास जाओ और उसे मेरा सलाम कह दो और कहना कि मैंने उस के तमाम गुनाहों को माफ़ कर दिया है। मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के हुक्म के मुताबिक उस ताजिर के पास आये और पूछा क्या

तुमने कोई अज़ीम नेकी अंजाम दी है जिस की वजह से अल्लाह तआला ने तुम्हारे तमाम गुनाहों को माफ कर दिया है और जवाब में ताजिर ने ऊपर बयान किया हुआ सारा वाकिआ कह सुनाया। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 1, ख़ौफ़े खुदा)

गुनाहों से बचाने वाला सिर्फ रब्बे जुलजलाल है

रिवायत है कि अल्लाह तआला के एक नबी से ख़ता सरजद हुई, अल्लाह तआला ने वह्यी की कि अगर तुम से दो बारा कोताही हुई तो मेरे अज़ाब से नही बच सकोगे! नबी ने अर्ज की ऐ अल्लाह! तू, तू है और मैं मैं मुझे तेरे इज्जत व जलाल की कसम! अगर तू मुझे गुनाहों से न बचाए तो मैं नही बच सकूंगा। इस पर अल्लाह तआला ने उन्हें गुनाहों के ख़्यालात से भी महफूज कर दिया। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 17)

एक गुनाहगार पर अल्लाह को रहम आया:

हज़रते अबू सईद खुदरी रदिअल्लाहु अन्हु नबीए करीमﷺ से रिवायत करते हैं कि आपﷺ ने इरशाद कि तुम से पहले की उम्मतों में एक आदमी था जिसको अल्लाह तआला ने बहुत माल अता फ़रमाया था। जब उसके मरने का वक़्त आया तो उसने अपने लड़कों से कहा मैं तुम्हारे लिए कैसा बाप साबित हुआ? उन्होंने जवाब दिया कि आप बहुत अच्छे बाप हैं। उसने कहा मैंने कभी कोई नेकी नही की, जब मैं मर जाऊँ तो मुझे जलाकर बारीक पीस देना, फिर मेरी राख तेज़ आँधी के दिन हवा में उड़ा देना। लड़कों ने उनकी वसिय्यत के मुताबिक़ अमल किया। अल्लाह तबारक व तआला ने उसकी राख जमा फरमाकर दरयाफ़्त किया, उसने जवाब दिया तेरे ख़ौफ़ की वजह से, इस जवाब पर अल्लाह को उस पर रहम आ गया। (बुखारी)

तौबा का दरवाज़ा कभी बन्द नहीं होता

हज़रते इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हुमा से एक शख्स ने दरियाफ्त किया

मैं गुनाह कर के बहुत ज्यादा शरमिन्दा हूं, मेरे लिए तौबा है? आपने मुँह फेर लिया, जब दोबारा उस शख्स की तरफ देखा तो आप की आँखों से आँसू बह रहे थे। फरमाया जन्नत के आठ दरवाज़े हैं, खोले भी जाते हैं और बन्द भी किये जाते हैं सिवाए तौबा के दरवाजे के, वह कभी भी बन्द नही होता। अमल करता रह और रब की रहमत से मायूस न हो। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 17)

कोई है जो तौबा करे:

हजरत अबु हुरैरा रदीअल्लाहू अन्हु रिवायत करते है के हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया के हर रात जब रात का आखरी तिहाई हिस्सा बाकी रह जाता है तो अल्लाह तआला आसमाने दुनिया पर नुजूल फरमाता है(यानि तजल्ली फरमाता है) और इरशाद फरमाता है कोई है जो मुझ से दुआ करे मैं उसकी दुआ कबूल करूँ, कोई है जो मुझसे कुछ मांगे मैं उसे अता करु, कोई है जो मुझसे अपनी गुनाहो की माफी चाहे और मैं उसके गुनाह माफ करु (बुखारी)

हिकायत : बनी इस्राईल में से एक जवान शख्स ने बीस साल लगातार अल्लाह तआला की इबादत की, फिर बीस साल गुनाहों में गुज़ारे, एक बार आईना देखा तो उसे दाढ़ी में बुढ़ापे के आसार नज़र आये, वह बहुत ही ग़मगीन हुआ और बारगाहे रब्बुल इज्ज़त में गुजारिश की, ऐ रब्बे जुलजलाल! मैं ने बीस साल तेरी इबादत की, फिर बीस साल गुनाहों में गुजारे, अब अगर मैं तेरी तरफ लौट आऊं तो मुझे कबूल कर लेगा? उस ने हातिफे गैबी की आवाज़ सुनी, वह कह रहा था तू ने हम से मुहब्बत की, हम ने तुझे महबूब बनाया। तू ने हमें छोड़ दिया, हम ने तुम्हें छोड़ दिया, तू ने गुनाह किये हम ने मौका दे दिया, अब अगर तू हमारी बारगाह में लौटेगा तो हम तुझे शरफे कबूलियत बख्शेंगे। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 17)

ताइब के गुनाहों पर गवाही देने वाला कोई नही

हज़रते इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब बन्दा तौबा करता है, अल्लाह तआला उस की तौबा कबूल कर लेता है। मुहाफिज़ फरिश्ते उस के पिछले गुनाहों को भूल जाते हैं। उस के आज़ाए जिस्मानी उस की ग़लतियों को भूल जाते हैं, ज़मीन का वह टुकड़ा जिस पर उस ने गुनाह किया है और आसमान का वह हिस्सा जिस के नीचे उसने गुनाह किया है उस के गुनाहों को भूल जाते हैं। जब वह कियामत के दिन आएगा तो उस के गुनाहों पर गवाही देने वाला कोई नही होगा। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 17)

हजरते अली कर्रमल्लाहु वजहहू से मरवी है हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मख्लूक की पैदाइश से चार हज़ार साल पहले अर्श के चारों तरफ् लिख दिया गया था कि जिसने तौबा की और ईमान लाया और नेक अमल किये, मैं उसे बख्शने वाला हूं। छोटे और बड़े तमाम गुनाहों से तौबा फ़र्ज़े ऐन है क्यों कि छोटे गुनाहों पर इसरार उन्हे बड़े गुनाह बना देता है।

तौबा कबूल न हुई

हज़रते इबने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कियामत के दिन बहुत से लोग ऐसे होंगे जो खुद को ताइब समझ कर आयेंगे मगर उन की तौबा कबूल नही हुई होगी, इस लिए कि उन्होंने तौबा के दरवाजे को शर्मिन्दगी से मुस्तहकम (मजबूत) नही किया होगा, तौबा के बाद गुनाह न करने का पक्का इरादा नही किया होगा। गुनाहों को अपनी इमकानी ताक़त तक दूर नही किया होगा और आसान चीज़ों के जवाज़ के सिलसिले में जो काम उन्होंने किये हैं और उन से बख्शिश चाहने में उन्होंने कोई तैयारी नही किया और उन के लिए यह बात आसान है कि अल्लाह तआला उस से राजी हो जाये। गुनाहों को भूल जाना बहुत ख़तरनाक बात है, हर अक्लमन्द के लिए जरूरी है कि वह अपने नफ्स का मुहासबा करता रहे

और अपने गुनाहों को न भूले। ऐ गुनाहों को शुमार करने वाले मुजरिम। अपने गुनाहों को मत भूल और गुज़री हुई गलतियों को याद करता रह मौत से पहले अल्लाह तआला की तरफ रुजू कर ले, गुनाहों से रुक जा और गलतियों को मान ले।

हदीस : अल्लाह की रहमत बड़ी है

हुजूर नबी-ए-पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबी हबीब बिन हारिस से फ़रमाया: ऐ हबीब! जब कभी तुमसे गुनाह हो जाए तो तौबा कर लिया करो। हबीब ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! अगर मेरे गुनाह बहुत ज्यादा हों तो मैं क्या करूँ? इस पर हुजूर ने फरमाया: अल्लाह की माफ़ी तुम्हारे गुनाहों से बढ़कर है (उम्माल, हदीस: 10269)

हिकायत : मुर्दा औरत से बदकारी करने वाले नवजवान की दर्दनाक तौबा

फकीह अबुल्लैस रहमतुल्लाह अलैह से मरवी है, हज़रते उमर रज़ियल्लाहु अन्हु एक मर्तबा हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में रोते हुए हाज़िर हुए। आप ने दरियाफ्त फरमाया कि ऐ उमर! क्यों रोते हो? अर्ज किया हुजूर! दरवाजे पर खड़े हुए जवान के गिरया (रोने) व ज़ारी ने मेरा जिगर जला दिया है। आप ने फरमाया उसे अन्दर लाओ! जब जवान खिदमत में हाज़िर हुआ तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने पूछा ऐ जवान तुम किस लिए रो रहे हो? अर्ज़ किया हुजूर मैं अपने गुनाहों की जज़्यादती और रब्बे जुलजलाल की नाराजगी के खौफ से रो रहा हूं। आप ने पूछा. क्या तू ने शिर्क किया है ? कहा नही, या रसूलल्लाह! (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) क्या तू ने किसी को नाहक कत्ल किया है? अर्ज किया नही या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आप ने दोबारा पूछा, अर्ज किया नही या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), आप ने इरशाद फरमाया अगर तेरे गुनाह सातों आसमानों, जमीनों और पहाड़ों के बराबर हो तब भी अल्लाह तआला अपनी रहमत से बख्श देगा।

जवान बोला या रसूलल्लाह! मेरा गुनाह उन से भी बड़ा है। आपने फरमाया, तेरा गुनाह बड़ा है या कुसएँ? अर्ज किया मेरा गुनाह, आपने फरमाया, तेरा गुनाह बड़ा है या अर्शे इलाही? अर्ज़ किया मेरा गुनाह, आपने फरमाया, तेरा गुनाह बड़ा है या रब्बे जुलजलाल! अर्ज़ कि रब्बे जुलजलाल बहुत ही अज़ीम है! हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बिला शुबहा जुर्मे अज़ीम को रब्बे अज़ीम ही माफ फरमाता है फिर आप ने फरमाया तुम मुझे अपने गुनाह तो बतलाओ। अर्ज की, हुजूर मुझे आप के सामने अर्ज़ करते हुए शर्म आती है। आप ने फ़रमाया कोई बात नही, तुम बताओ! अर्ज किया, हुजूर मैं सात साल से कफन चोरी कर रहा हूं। अन्सार की एक लड़की मर गई तो मैं उस का कफ़न चुराने जा पहुंचा, मैंने कब्र खोद कर कफ़न ले लिया और चल पड़ा, कुछ ही दूर गया था कि मुझ पर शैतान गालिब आ गया और मैं उलटे कदम वापस पहुंचा और लड़की से बद-कारी की, मैं गुनाह कर के अभी चन्द ही कदम चला था कि लड़की खड़ी हो गई और कहने लगी, ऐ जवान खुदा तुझे ग़ारत करे तुझे उस निगहबान का ख़ौफ़ नही आया जो हर मज़लूम को ज़ालिम से उस का हक दिलाता है, तू ने मुझे मुर्दों की जमाअत से बरहना कर दिया और दरबारे खुदावन्दी में नापाक कर दिया है। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब यह सुना तो फ़रमाया दूर होजा ऐ बदबख़्त! तू जहन्नम की आग का मुस्तहिक है।

जवान वहां से रोता हुआ अल्लाह तआला से इस्तिगफार करता हुआ निकल गया। जब उसे इसी हालत में चालीस दिन गुज़र गये तो उस ने आसमान की तरफ निगाह की और कहा ऐ मुहम्मद व आदम व इब्राहीम (अलैहिमुस्सलाम) के रब! अगर तू ने मेरे गुनाह को बख्श दिया है तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उनके सहाबा को मुत्तलअ फरमा और अगर ऐसा न हो तो आसमान से आग भेज कर मुझे जला दे और जहन्नम के अजाब से बचा ले उसी वक्त हजरते जिबरील अलैहिस्सलाम हुजूर की खिदमत में हाजिर हुए और कहा, आप का रब आप को सलाम कहता है और पूछता है कि मख़्लूक को तुम ने पैदा किया है? आप ने फरमाया नही बल्कि मुझे और तमाम मख्लूक को अल्लाह ने पैदा किया है

और उसी ने रिज़्क दिया है, तब जिबरील ने कहा अल्लाह तआला फ़रमाता है मैं ने जवान की तौबा कबूल कर ली है। पस हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जवान को बुला कर उसे तौबा की कबूलियत की खुशखबरी सुनाई। (मुकाशफतुल कुलूब , बाब 17 , पेज 126)

हिकायत : बुजुर्गों की निस्बत से तौबा नसीब हो गई :

हज़रत अबू उमर ने हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैहि से बयान किया कि मैंने इब्तेदा में हज़रत अबू उस्मान हीरी रहमतुल्लाह अलैहि की मजलिस में तौबा की और उस पर कुछ अर्सा कायम रहा फिर मेरे दिल में मासियत की चाहत पैदा हुई और मैंने इर्तेकाब कर लिया और उस बुजुर्ग की सोहबत से रू गरदां हो गया। जब भी मैं उन्हें दूर से देखता तो मैं शर्मिन्दा होकर इधर उधर हो जाता कि उनकी नज़र मुझ पर न पड़े। इत्तेफाक से मेरा उनका आमना सामना हो गया। उन्होंने फ़रमाया ऐ फरजंद! अपने दुश्मनों के साथ न रहा करो क्योंकि अभी तुम मासूम हो। इसलिये कि दुश्मन तुम्हारे ऐब को देखता है और जब तुम इन्हें ऐबदार नज़र आते हो तो वह खुश होते हैं। और जब तुम गुनाह से मासूम होते हो तो इन्हें रंज पहुंचता है। अगर तुम्हारी ख़्वाहिश यही है कि मासियत में मुब्तला रहो तो हमारे पास आया करो ताकि हम तुम्हारी मुसीबत व बला को दूर कर दिया करें और तुम्हारे दुश्मनों को खुश होने का मौका न दें। हज़रत अबू उमर बयान करते हैं कि इसके बाद मेरा दिल गुनाह से सैर हो गया और सही तौबा नसीब हो गयी। (कशफूल महजुब,पेज न. 400)

वली की दरगाह से तौबा

हजरत अबु अली रहमत-उल्लाह अलेह पर कोई बहुत बड़ी मुश्किल आ पड़ी। और वो इसी फिक्रो गम में परेशान रहने लगे। एक रोज हुजर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को उन्होंने ख्वाब में देखा, हुज़ूर अलेहिस्सलाम ने फरमाया। ऐ अबु अली! यहया बिन यहया की कब्र पर जाओ और वहाँ जाकर असतगफार करो। और अपनी हाजत पेश करो। तुम्हारी हाजत पूरी हो जाएगी। चुनाँचे जब सुबह हुई तो अबु अली

रहमत-उल्लाह अलेह हुजर सल- लल्लाहाहे तआला अलेह व सल्लम के इर्शाद के मुताबिक हजरत यहया बिन यहया रहमत-उल्लाह अलेह की कब्र पर गए और वहाँ जाकर असतगफार करके अपनी हाजत पेश की। तो उनकी हाजत पूरी हो गई। और सारे फिक्रो गम दूर हो गए।(तहजीब-उल- तहजीब, सफा 299, जिल्द11)

सिर्फ तौबा करने वाला बख़्शा जायेगा

हदीसः हज़रत अबु सईद खुदरी रदीअल्लाहु अन्हु फ़रमाते है के मैने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम को फरमाते सुना के इब्लीस (शैतान) ने अपने रब से कहा मुझे तेरी इज़्ज़त व जलाल की कसम में आदम की औलाद को बहकाता रहूंगा जब तक उनकी रूह उनके बदन में है (यानी जब तक वो जिन्दा है) अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया मुझे मेरी इज्ज़त वो जलाल की क़सम मैं उनको माफ फरमाता रहूंगा जब तक वो मुझसे इस्तग़फ़ार यानी तौबा करते रहेंगे। (मुसनद अहमद बिन हम्बल)

बगैर तौबा के मगफिरत नहीं होगी

हुज़ूर नबी-ए-पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः "जो अल्लाह तआला से इस्तिगफार नहीं करता अल्लाह तआला उसे नहीं बख्शेगा और जो तौबा नहीं करता अल्लाह तआला उसकी तौबा कुबूल नहीं फ़रमाएगा और जो रहम नहीं करता अल्लाह तआला भी उस पर रहम नहीं फ़रमाएगा। (कन्जुल उम्माल, हदीसः 10284)

बगैर तौबा के मगफिरत की उम्मीद न रख

हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि बगैर तौबा के मगफिरत की और बगैर अमल सवाब की उम्मीद न रख इसलिए कि अल्लाह तआला से ग़ाफ़िल होना उसके गज़ब में मुबतला कर देता है और ऐसे आमाल का इरतेकाब करना जिनसे वह राजी न हो और उस पर

मगफिरत की आरजू करना तेरी आरजू की फ़रेब खूरदगी है यहां तक कि (उसी हालत में) मौत आ जायेगी क्या तूने अल्लाह तआला का यह इरशाद नही सुना यानी बेकार उम्मीदों ने तुम फरेब दिया आखिर तुम को खुदा का हुक्म पहुंचा और अल्लाह के मुताल्लिक तुम को शैतान नें ोके में रखा। दूसरी जगह (इसी बारे में) इरशाद होता है" जिसने तौबा की, ईमान लाया और नेक काम किये और सीधी राह इख़्तेयार की मैं उसे बख्श देता हूं। यह भी इरशाद फरमाया "मेरी रहमत हर चीज़ को अपने अन्दर समाये हुए है मैं अपनी रहमत उन लोगों के लिए मुकद्दर करूंगा जो डरते हैं और ज़कात देते हैं और मेरी आयात पर ईमान रखते हैं"।

बगैर तौबा व तक़वा रहमत और जन्नत की आरजू व हिमाकत, नादानी और नफ़्स का फरेब है क्योंकि रहमत और जन्नत की शर्तें इन मज़कूरा आयतों में बयान कर दी गई हैं यानी रहमत व जन्नत तौबा व तक़वा के साथ मरबूत है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है मोमिन अपने गुनाहों को पहाड़ के मानिन्द समझता है और डरता है कि वह पहाड़ कही सर पर न आ गिरे और फाजिर फ़ासिक़ अपने गुनाहों को उस मक्खी के मानिन्द समझता है जो नाक पर बैठी हुई है कि इशारे से उसको उड़ाया जा सकता है। (गुनियतुत्तालिबीन)

उसको बहिश्त में ले जाता है

आप ने फरमाया गुनाह उसकी नज़र के सामने रहता है जिससे हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया बन्दा गुनाह करता है और वह गुनाह उसको निदामत और शर्मिन्दगी महसूस होती है वह अल्लाह से मगफिरत चाहता है बिल आखिर वही गुनाह उसे बहिश्त में ले जाने का मौजिब बन जाता है।

तौबा से शैतान कमजोर होता है

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला, अन्हु हुजूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से नकल करते हैं कि ला इलाहा

इल्लल्लाह और इस्तिगफार को बहुत कसरत से पढ़ा करो। शैतान कहता है कि मैंने लोगों को गुनाहों से हलाक किया और उन्होंने मुझे ला इलाहा इल्लल्लाह और तौबा से हलाक कर दिया। जब मैंने यह देखा तो मैंने उनको हवाये नफ्स से हलाक किया और वह अपने को हिदायत पर समझते रहे। (जामेउस्सगीर)

मुल्क के बादशाह/प्रधानमंत्री को बुरा न कहो, खुद को बुरा जानो और तौबा करो

हज़रते मालिक बिन दीनार रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि तौरेत शरीफ़ में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि बादशाहों के दिल मेरे क़ब्ज़े में हैं जो मेरी इताअत करेगा मैं उस के लिये बादशाहों को रहमत बनाऊंगा और जो मेरी मुखालफत करेगा उस के लिये उन को अज़ाब बनाऊंगा फिर तुम बादशाहों को बुरा कहने में मश्गूल न हो बल्कि मेरी दरगाह में तौबा करो मैं उन को तुम पर महरबान कर दूंगा । (तम्बीहुल मुग्तरीन, अल बाबुल अव्वल, सब्रहुम अला जोरुल हुक्काम, स. 43)

तौबा न करने वाला ज़ालिम है

अल्लाह फरमाता है: क्या ही बुरा नाम है मुसलमान होकर फ़ासिक़ कहलाना और जो तौबह न करें तो वही ज़ालिम हैं।ण (सूरह- हुजरात, आयत न. 11

तौबा न करने वाले यानी ज़ालिमो पर लानत

कुरआन : अल्लाह की लअनत ज़ालिमों पर (सूरह - आराफ, आयत न. 44)

ज़िना/बदकारी से तौबा -

अपने आंख, शर्मगाह, हाथ, पांव, जबान, कान और दिल को बेहयाई के तरफ जाने से रोक लीजिये किसी औरत की मोहब्बत दिल मे हो तो उसे

निकाल फेकिये और उस दिल मे अल्लाह का खौफ़ और रसूलल्लाह सल्लल्लाहुअलिहिवसल्म का मोहब्बत बसा लीजिये।

अपने नबी के इस फ़रमान को हमेशा याद रख

फरमाते हैं: "मर्द का ग़ैर औरतों को और औरत का गैर मर्दों को देखना आँखों का ज़िना है। पैरों से उसकी तरफ चलना, पैरों का जिना है। कानों से उसकी बात सुनना, कानों का ज़िना है। ज़बान से उसके साथ बातें करना, ज़बान का ज़िना है। दिल में जिस्मानी मिलाप की तमन्ना करना, दिल का ज़िना है। हाथों से उसे छूना, हाथों का ज़िना है। (अबू दाऊद पेज 292)

हिकायत : ज़िना (बदकारी) से दर्दनाक तौबा :

एक शख़्स ख़िदमते अक्दस हुजूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में हाज़िर हुए और अर्ज की या रसूलुल्लाह मेरे लिए ज़िना हलाल फरमा दीजिए, सहाबा किराम ने उन्हें कत्ल करना चाहा कि ख़िदमते अक्दस में हाज़िर हो कर यह गुस्ताखी के अल्फाज़ कहे, हुजूर ने मना फरमाया और उन से फरमाया, करीब आओ, वह करीब हाज़िर हुए, और करीब फरमाया यहाँ तक कि उनके ज़ानू ज़ानूए अकदस से मिल गए, उस वक्त इरशाद फरमाया

'क्या तू चाहता है कि कोई शख्स तेरी माँ से जिना करे।

जवान ने अर्ज किया, नही।

'फरमाया तेरी बेटी से। जवान ने अर्ज किया, नही ।

'फरमाया तेरी बहन से जवान ने अर्ज किया, नही ।

'फरमाया तेरी फूफी से। जवान ने अर्ज किया, नही।

फरमाया तेरी खाला से। जवान ने अर्ज किया, नही।

'फरमाया कि जिससे तू जिना करेगा आखिर वह किसी की माँ, या बेटी, या बहन या फूफी, या खाला होगी, यानी जो बात अपने लिए नही पसन्द करता दूसरे के लिए क्यों पसन्द करता है, दस्ते अक्दस उनके सीना पर मार कर दुआ फरमाई कि इलाही ज़िना की मुहब्बत उसके कर यह गुस्ताखी के अल्फाज कहे, हुजूर ने मना फरमाया और उन से फरमाया, क़रीब आओ, वह करीब हाजिर हुए, और करीब फरमाया यहाँ तक कि उनके जानू जानूए अकदस से मिल गए, उस वक्त इरशाद फरमाया

'क्या तू चाहता है कि कोई शख्स तेरी माँ से जिना करे।

जवान ने अर्ज किया, नही। 'फरमाया तेरी बेटी से। जवान ने अर्ज किया, नही । 'फरमाया तेरी बहन से जवान ने अर्ज किया, नही । 'फरमाया तेरी फूफी से। जवान ने अर्ज किया, नही। फरमाया तेरी खाला से। जवान ने अर्ज किया, नही।

'फरमाया कि जिससे तू जिना करेगा आखिर वह किसी की माँ, या बेटी, या बहन या फूफी, या खाला होगी, यानी जो बात अपने लिए नही पसन्द करता दूसरे के लिए क्यों पसन्द करता है, दस्ते अक्दस उनके सीना पर मार कर दुआ फरमाई कि इलाही जिना की मुहब्बत उसके दिल से निकाल दें। वोह साहब कहते हैं जब मैं हाज़िर हुआ था तो ज़िना से ज्यादा महबूब मेरे नजदीक कोई चीज न थी. और अब इससे ज़्यादा कोई चीज मुझे नफरत के लायक नही । (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 17)

तौब में देर करने वाले लोग हलाक हो गए

हजरत इब्ने अब्बास से मरवी है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया कि ऐसे ताखीर करने वाले लोग हलाक हो गए जो कहते हैं कि हम कुछ दिन बाद तौबा कर लेंगे।

हिकायत गाना बजाने से तौबा :

हज़रत सय्यद अब्दुल कादिर जीलानी (रदिअल्लाहु अन्हु) ईसार के मौजू पर तकरीर फरमा रहे थे यकायक आप खामोश हो गए और आसमान की तरफ नज़र उठाई। फिर आपने हाज़रीन से मुखातिब होकर फरमाया के "ज्यादा नही सिर्फ सौ दीनार दरकार हैं।

आपका इर्शाद सुनकर कई लोग सौ सौ दीनार लेकर हाज़िर हुए आपने सिर्फ एक शख्स से सौ दीनार ले लिए। और अपने खादिम को हुक्म दिया ये सौ दीनार लेकर मकबरे शोनेजिया पर जाओ वहाँ तुम्हें एक बूढ़ा बर्बत बजाता हुआ मिलेगा उसे दीनार देकर मेरे पास ले आओ।

खादिम हस्बे हुक्म मकबरे शोनेजिये पर पहुँचा वहाँ फ़िल वाकेअ एक बूढ़ा बरबत बजा कर गा रहा था। खादिम ने उसे सलाम किया और वो सौ दीनार उसके हाथ पर रख दिए। बूढ़े ने एक चीख मारी और बेहोश हो गया। जब उसे होश आया तो खादिम ने कहा के तुम्हें हज़रत शेख अब्दुल कादिर जीलानी (रदिअल्लाहु अन्हु) बुला रहे थे। बूढ़ा फौरन खादिम के हमरह हो लिया। जब दोनों हज़रत की खिदमत में पहुँचे तो आपने बूढ़े से फरमाया के तुम अपना किस्सा बयान करो। बूढ़ा कहने लगा या हज़रत लड़कपन में मैं निहायत उम्दा गाता बजाता था और बर्बत नवाज़ी में कमाल रखता था लोग मेरी आवाज़ पर फिदा थे। लेकिन जब मैं बड़ा हुआ तो मेरी मकबूलियत बहुत कम हो गई। मैंने शिकस्ता दिल होकर शहर छोड़ दिया और अहेद कर लिया के आइंदा सिर्फ मुर्दों को अपना गाना सुनाया करूंगा। चुनाँचे मैंने कब्रिस्तान ही में बोदोबाश इख्तियार कर ली और वहाँ ही गाता बजाता रहा। एक दिन मैं शुग्ल में मसरूफ था के एक कब्र से आवाज़ आई "ऐ शख्स तू मुर्दों को कब तक अपना गाना सुनाएगा अब खुदा की तरफ रूजू कर।" मुझ पर सख्त दहशत तारी हुई और मैंने आलमे बेखुदी में ये अशआर पढ़े।

(ऐ मेरे रब ! यौमे हश्र के लिए पास कोई सरमाया नही सिवाए इसके के मेरे दिल में तेरी बख्शिश और तेरी रहमत की उम्मीद हो और मेरी ज़बान

पर हम्दो सनाअ हो)

(तेरी रहमत के उम्मीदवार कल तेरे हुजूर में सुरखरू होंगे अगर मैं महरूम रह गया तो हीफ है मेरी बेदबख्ती पर)

(अगर सिर्फ नेकूकार लोग ही तेरी रहमत के आरज़मंद होते तो तेरे गुनहगार बन्दे किस की पनाह लेते)

(मेरी जईफ-उल-उम्री हश्र के दिन तेरी बारगाह में मेरी शिफाअत करेगी उम्मीद है के तू इस पर नज़र करके मुझे अपने दामने रहमत में जगह देगा और जहन्नम से बचा लेगा।)

ये अशआर मेरी जबान पर थे के आपके खादिम ने आकर मेरे हाथ पर सौ दीनार रख दिए अब मैं गाने बजाने से तौबा करता हूँ और अपने खालिके हकीकी की तरफ मुतावज्जेह होता हूँ। ये कहकर उसने अपना बर्बत तोड़ दिया। उस बूढ़े की दास्तान सुनकर लोग दमबखुद हो गए और चालीस आदमियों ने उसी वक्त सौ सौ दीनार उस बूढ़े को दिए। आपके खादिम अबु अल रजा का बयान है के वाकेया देखकर पाँच आदमियों पर ऐसा असर हुआ के वो तड़पने लगे और तड़पते तड़पते वअसल बहक़ हो गए। (कलायद-उल-जवाहर)

तौबा करने वालो से शैतान परेशान रहता है:

हदीस हजरते वहीब बिन विर्द से रिवायत है, उन्होंने कहा हमें खबर पहुँची है कि खबीस इब्लीस, हजरते यहया बिन ज़करिया अलैहिमुस्सलाम के पास आया और कहने लगा मैं आपको नसीहत करना चाहता हूँ, आपने फरमायाः तू झूठा है तू मुझे नसीहत न कर अलबत्ता औलादे आदम के मुताल्लिक बता, उसने कहा मेरे नज़दीक वो तीन तरह के होते हैं:

(1) उनकी पहली किस्म हम पर बहुत सख्त है, हम इस किस्म के लोगों के पास जाते हैं यहाँ तक कि उन्हें फितने में मुब्तला करके मुत्मइन हो जाते हैं लेकिन वो तौबा व इस्तगफार करके हमारा किया धरा अकारत

कर देते हैं, हम दोबारा उनके पास जाते हैं, हम उनसे ना उम्मीद नही होते लेकिन हम अपने मकसद में कामयाब भी नही होते, गोया हम उनकी जानिब से सख्त मशक्कत में मुब्तला रहते हैं।

(2) दूसरी किस्म उन लोगों की है जो हमारे कब्जे में उसी तरह होते हैं जैसे तुम्हारे बच्चों के हाथ मे गेंद, हम जहां चाहते हैं उनको फेर देते हैं।

(3). और आखरी किस्म तो आप ही कि तरह मासूम हैं, हम उनकी जानिब से किसी चीज पर कादिर नही।

हजरते यहया ने फरमाया: क्या तुन्हे मुझ पर कभी काबू पाया है, वो कहने लगा नही मगर एक मर्तबा आप खाना खाने जा रहे थे, मैने आप के लिए उस खाने की लज़्ज़त को बढ़ा दिया हत्ता कि आपने अपनी मुकर्ररह मिकदार से ज्यादा खा लिया और उस रात आप सो गए और जिस तरह नमाज़ अदा करते थे उस तरह न कर सके, आप ने फरमाया यकीनन मैं कभी पेट भर कर खाना नही खाऊंगा, इब्लीस ने कहा यकीनन मैं आपके बाद किसी नबी को नसीहत नही करूंगा। *(मकाइदुश्शैतान इब्ने अबिद्दुनिया)*

तौबा करने वाला की आवाज़ अल्लाह को पसंद है:

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि अल्लाह तआला को गुनहगार तौबा करने वाले की आवाज़ से ज़्यादा महबूब और कोई आवाज़ नही है, जब वह अल्लाह को बुलाता है तो अल्लाह तआला फ़रमाता है, मैं मौजूद हूं, जो चाहे मांग ! मेरी बारगाह में तेरा रुतबा मेरे बाज़ फ़रिश्तों के बराबर है। मैं तेरे दायें बायें ऊपर हूं और तेरी दिली धड़कन से ज़्यादा क़रीब हूं, ऐ फरिश्तो! तुम गवाह हो जाओ कि मैं ने इसे बख़्श दिया है।

अल्लाह बन्दों पर माँ से भी ज्यादा मेहरबान है

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रदियल्लाहु तआला अन्हु से

रिवायत है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास कुछ कैदी आए तो कैदियों में एक औरत की छातिया¡ दूीं से छलक रही थीं और वो दौड़ रही थी। जब कैदियों में कोई बच्चा पाती उसे पकड़ती, अपने सीने से चिमटा लेती और उसे दूीं पिला देती। तब हमसे नबी - ए - करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः "क्या तुम ये ख़्याल कर सकते हो कि ये औरत अपने बच्चे को आग में फेंक देगी?" हमने अर्ज किया: "अगर वो फेंकने पर कादिर हो तब भी कभी नहीं फेंकेगी।" आपने फरमायाः "अल्लाह तआला अपने बन्दों पर उससे भी ज्यादा मेहरबान है जिनती ये अपने बच्चे पर मेहरबान है।"*(मुस्लिम शरीफ)*

इसी क़िस्म की दूसरी रिवायत सहाबी-ए-रसूल हज़रत आमिर से है वो फ़रमाते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु व सल्लम के पास हाज़िर थे कि एक शख्स आया जो कम्बल ओढ़े हुए था, उसके हाथ में कोई चीज़ थी जिस पर कम्बल लिपटा था। अर्ज़ किया कि "या रसूलल्लाह! मैं एक झाड़ी के पास से गुज़रा तो मैंने उस झाड़ी में चिड़िया के चूजों की आवाज़ सुनी, मैंने उन्हें पकड़ लिया और अपने कम्बल में रख लिया, इतने में चूजों की मॉ आ गई, वो मेरे सर पर चक्कर लगाने लगी, मैंने उसके सामने वो बच्चे खोल दिये, वो उन पर गिर पड़ी, मैंने उन सबको अपने कम्बल में लपेट लिया, वो सब मेरे साथ हैं। आपने फरमायाः उन्हें रख दो। मैंने उन्हें रख दिया, उनकी मॉ उन्हें सीने से लगाए रही तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः क्या तुम इन चूजों की मॉ की अपने बच्चों से इतनी मुहब्बत पर तअज्जुब करते हो? उस ज़ात की कसम जिसने मुझे हक के साथ भेजा है! अल्लाह तआला अपने बन्दों पर उससे भी जयादा मेहरबान है जितनी बच्चों की मॉ बच्चों पर। इन्हें वापस ले जाओ और वहीं रख आओ जहॉ से पकड़ा है।*(अबु दाउद)*

हिकायत-मॉ से ज्यादा मेहरबान

बनी इसराईल*(पिछली उम्मत)* में एक निहायत ही फाजिरव फासिक इन्सान था जो अपने बुरे कामों से कभी बाज न आता था. शहर वाले जब

उसकी बदकारियों से महफूज रहने की दुआ मांगने लगे। अल्लाहतआला ने हजरते मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ वही की कि बनी इसराईल के फलां शहर में एक बदकार जवान रहता है उसे शहर से निकाल दीजिए ताकि उस की बदकारियों की वजह से सारे शहर पर आग न बरसे, हजरते मूसा अलैहिस्सलाम वहां तशरीफ ले गये और उस को उस बस्ती से निकाल दिया. फिर अल्लाह का हुक्म हुआ कि उसे उस बस्ती से भी निकाल दीजिए, जब हजरते मूसा अलैहिस्सलाम ने उसको उस बस्ती से भी निकाल दिया तो उस ने एक ऐसे गार (गुफा) पर ठिकाना बनाया जहां न कोई इन्सान था और न ही किसी चरिन्द परिन्द का गुजर था. आस पास में न कहीं आबादी थी और न दूर दूर तक हरियाली का कोई पता था। उस गार में आकर वह जवान बीमार हो गया, उस की तीमारदारी (देख रेख) के लिए. कोई शख्स भी उस के आस पास मौजूद न था जो उस की खिदमत करता वह कमजोरी से जमीन पर गिर पड़ा और कहने लगा काश इस वक्त अगर मेरी माँ मेरे पास मौजूद होती तो मुझ पर शफकत (मेहरबानी) करती और मेरी इस बेकसी और बे-बसी पर रोती, अगर मेरा बाप होता तो मेरी निगहबानी निगहदाश्त (देख-रेख)। और मदद करता, अगर मेरी बीवी होती तो मेरी जुदाई पर रोती, अगर मेरे बच्चे इस वक्त मौजूद होते तो कहते, ऐ रब हमारे आजिज, गुनहगार, बदकार और मुसाफिर बाप को बख्श दे जिसे पहले तो शहर बदर किया गया और फिर दूसरी बस्ती से भी निकाल दिया गया था और अब वह गार में भी हर एक चीज से नाउम्मीद होकर दुनिया से आखिरत की तरफ चला है और वह मेरे जनाजा के पीछे रोते हुए चलते।

फिर वह नौजवान कहने लगा ऐ अल्लाह! तू ने मुझे माँ बाप और बीबी बच्चों से तो दूर किया है मगर अपने फज्ल व करम से दूर न करना तू ने मेरा दिल अजीजों की जुदाई में जलाया है, अब मेरे सरापा को मेरे गुनाहों की वजह से जहन्नम की आग में जलाना, उसी दम (वक्त) अल्लाह तआला ने एक फरिश्ता उसके बाप के हमशक्ल बना कर, एक हूर को उस की माँ और एक हूर को उसकी बीवी की हमशक्ल बना कर और गिल्माने जन्नत (जन्नत के खादिमों) को उस के बच्चों के रूप में भेज दिया, यह सब

उसके करीब आकर बैठ गये और उस की बेहद तकलीफ पर अफ़सोस और आह व जारी (रोना चिल्लाना) करने लगे। जवान उन्हें देख कर बहुत खुश हुआ और उसी खुशी में उसका इन्तेकाल हो गया, तब अल्लाह तआला ने हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ वही की कि फला गार की तरफ जाओ, वहां हमारा एक दोस्त मर गया है। तुम उस के दफन व कफन का इन्तेज़ाम करो।

हुक्मे इलाही के मुताबिक हजरते मूसा अलैहिस्सलाम जब गार में पहुंचे तो उन्होंने यहां उसी जवान को मरा हुआ पाया। जिस को उन्हों ने पहले शहर और फिर दूसरी बस्ती से निकाला था, उस के पास हूरे तअजियत करने वालों की तरह बैठी हुई थी। मूसा अलैहिस्सलाम ने बारगाहे इलाही में अर्ज की, ऐ रब्बुल इज्जत यह तो वही जवान है जिसे मैंने तेरे हुक्म से शहर और बस्ती से निकाल दिया था। रब्बुल इज्जत ने फरमाया ऐ मूसा! मैंने उस के बहुत ज्यादा रोने और अज़ीजों की जुदाई में तड़पने की वजह से उस पर रहम किया है और फरिश्ता को उस के बाप की और हूर व गिलमां को उस की माँ, बीवी और बच्चों के हमशक्ल बना कर भेजा है जो गुरबत में उस की तकलीफों पर रोते हैं, जब यह मेरा तो उस की बे-चारगी पर ज़मीन व आसमान वाले रोये और मैं अरहमराहिमीन फिर क्यों न उस के गुनाहों को माफ करता। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 3, पेज 50)

मरना पसंद किया लेकिन गुनाह करना पसंद नही क्या

बदकारी से तौबा 1

हज़रते सय्यदुना अबू अब्दुल्लाह बल्खी फ़रमाते हैं: "बनी इसराईल (पिछली उम्मत) में एक निहायत ही पाकबाज हसीनो जमील नौ जवान था जिस के हुस्न की मिसाल न थी, वोह टोकरियां बना कर बेचा करता। इसी तरह उस की गुज़र बसर हो रही थी। एक रोज़ वोह टोकरियां बेचता हुवा शाही महल के करीब से गुज़रा। एक खादिमा की उस नौ जवान पर नज़र पड़ी तो वोह फ़ौरन शहज़ादी के पास गई और उसे बताया कि बाहर

एक नौ जवान टोकरियां बेच रहा है, वोह इतना खूब सूरत है कि मैं ने आज तक ऐसा खूब सूरत नौ जवान नहीं देखा। येह सुन कर शहज़ादी ने कहाः "उसे मेरे पास बुला लाओ।" खादिमा बाहर गई और नौ जवान से कहाः "अन्दर आ जाओ।"

(नौ जवान समझा शायद इन्हें टोकरियां चाहिएं) पस वोह उस के साथ महल में दाखिल हो गया। वोह उसे एक कमरे में ले गई जैसे ही वोह कमरे में दाखिल हुवा उस ख़ादिमा ने दरवाज़ा बन्द कर दिया, फिर उसे दूसरे कमरे में ले गई और इसी तरह उस का दरवाजा भी बन्द कर दिया। जब वोह तीसरे कमरे में पहुंचा तो उस के सामने एक खूब सूरत नौ जवान शहजादी मौजूद थी, उस ने अपना नक़ाब उठाया हुवा था और सीना भी उभरा था। जब नौ जवान ने शहजादी को इस हालत में देखा तो कहने लगा : "जो चीज़ तुम ने खरीदनी ने है जल्दी से ख़रीद लो।" शहजादी कहने लगी : "मैं ने तुझे कोई चीज़ खरीदने के लिये नहीं बुलाया बल्कि मैं तो तुझ से जिस्मानी ख़्वाहिश की तस्कीन चाहती हूं, आओ और मेरी शहवत को तस्कीन दो।" उस पाकबाज़ नौ जवान ने कहाः "ऐ शहज़ादी ! तू अल्लाह से डर ।" उस नेक नौ जवान ने शहज़ादी को बहुत समझाया लेकिन वोह न मानी और बार बार बुराई का मुता-लबा करती रही। फिर उस नौ जवान से कहने लगी : "अगर तूने मेरी बात न मानी तो बादशाह को शिकायत कर दूंगी कि येह नौ जवान बुराई के इरादे से महल में घुस आया है फिर तुझे बहुत सख्त सजा दी जाएगी, तेरी बेहतरी इसी में है कि तू मेरी बात मान ले और मेरी ख़्वाहिश पूरी कर दे।" नौ जवान ने फिर इन्कार किया और उसे नसीहत करने लगा बिल आखिर जब वोह बाज़ न आई तो उस अज़ीम नौ जवान ने कहा : "मैं वुजू करना चाहता हूं, मेरे लिये वुजू का इन्तिज़ाम कर दो।" येह सुन कर शहज़ादी बोली : "क्या तू मुझे धोका देना चाहता है।" फिर उस ने खादिमा से कहाः "इस के लिये महल की छत पर वुजू का बरतन ले जाओ ताकि येह फ़रार न हो सके।"

चुनान्चे उस नौ जवान को छत पर ले जाया गया। महल की छत ज़मीन से तकरीबन 40 गज़ ऊंची थी जिस से छलांग लगाना मौत को दावत देने के

मु-तरादिफ़ था। जब नौ जवान छत पर पहुंच गया तो उस ने अपने पाक परवर्दगार की बारगाह में अर्ज की: "**ऐ अल्लाह ! मुझे तेरी ना फ़रमानी पर मजबूर किया जा रहा है और मैं इस बुराई से बचना चाहता हूं, मुझे येह तो मन्जूर है कि अपने आप को इस बुलन्दो बाला छत से नीचे गिरा दूं लेकिन येह पसन्द नहीं कि मैं तेरी नाफ़रमानी करूं।**"

चुनान्चे उस ने बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ कर छत से छलांग लगा दी। अल्लाह ने एक फ़िरिश्ते को भेजा जिस ने उस नौ जवान को बाजू से पकड़ा और ज़मीन पर बड़े सुकून से उतार दिया और उसे किसी किस्म की तक्लीफ़ न हुई, नौ जवान ने अल्लाह की बारगाह में अर्ज की : "ऐ मेरे पाक परवर्दगार ! अगर तू चाहे तो मुझे इन टोकरियों की तिजारत के बिगैर भी रिज्क अता फरमा सकता है। ऐ मेरे परवर्द गार मुझे इस तिजारत से बे नियाज़ कर दे।" जब उस ने येह दुआ की तो अल्लाह रब्बुल इज्ज़त ने उस की तरफ़ एक बोरी भेजी जो सोने से भरी हुई थी। उस ने बोरी से सोना भरना शुरू कर दिया यहां तक कि उस की चादर भर गई। फिर उस अज़ीम नौ जवान ने अल्लाह की बारगाह में अर्ज़ की : ''ऐ अल्लाह ! अगर येह उसी रिज्क का हिस्सा है जो मुझे दुन्या में मिलना था तो इस में ब-र-कत अता फरमा और अगर येह उस अज्र का हिस्सा है जो मुझे आख़रित में मिलना है और इस की वजह से मेरे आख़िरत के अज्र में कमी होगी तो **मुझे येह दौलत नहीं चाहिये।**"

जब उस नौ जवान ने येह कहा तो उसे एक आवाज़ सुनाई दी: "येह जो सोना तुझे अता किया गया है येह उस अज्र का पच्चीसवां हिस्सा है जो तुझे इस **गुनाह से सब्र करने पर मिला है।**" तो उस अज़ीम नौ जवान ने कहा: "ऐ मेरे परवर्द गार ! मुझे ऐसे माल की हाजत नहीं जो मेरे आखिरत के खजाने में कमी का बाइस बने।" जब नौ जवान ने येह बात कही तो वोह सारा सोना गाइब हो गया। (उयुनुल हिकयत)

बदकारी से तौबा 2

बनी इसराईल में एक कसीरुल अयाल में (ज्यादा औलाद वाला) आबिद

था, उसे तंगदस्ती ने घेर लिया, जब बहुत परेशान हुआ तो अपनी औरत से कहा जाओ. किसी से कुछ मांग कर लाओ। औरत ने एक ताजिर के यहां जाकर खाने का सवाल किया, ताजिर ने कहा अगर तुम मेरी आरजू पूरी कर दो तो जो चाहो ले सकती हो, औरत बेचारी चुप चाप खाली हाथ घर लौट आई। बच्चों ने जब मां को खाली हाथ आते देखा तो भूक से चिल्लाने लगे और कहने लगे। अम्मी! हम भूक से मर रहे हैं हमें कुछ खाने को दो औरत दोबारा उसी ताजिर के यहां लौट गई और खाने का सवाल किया, ताजिर ने फिर वही बात की जो पहले कह चुका था। औरत रजामन्द हो गई मगर जब यह दोनों तन्हाई रुम में पहुंचे तो औरत खौफ से कांपने लगी। ताजिर ने पूछा किस से डरती हो? उस ने कहा मैं उस रब के खौफ से कांपती हूं जिस ने हमें पैदा किया। तब ताजिर बोला जब तुम इतनी तगदस्ती और मुफ़लिसी में भी खुदा का खौफ रखती हो तो मुझे भी अल्लाह के अज़ाब से डरना चाहिए। यह कहा और औरत को बहुत सा माल व मनाल देकर इज्जत के साथ रवाना किया।

अल्लाह तआला ने पैगम्बरे वक्त मूसा अलैहिस्सलाम पर वही भेजी कि फुलां इब्ने फुलां के पास जाओ और उसे मेरा सलाम कह दो और कहना कि मैंने उस के तमाम गुनाहों को माफ कर दिया है। मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के हुक्म के मुताबिक उस ताजिर के पास आये और पूछा क्या तुमने कोई अजीम नेकी अंजाम दी है जिस की वजह से अल्लाह तआला ने तुम्हारे तमाम गुनाहों को माफ कर दिया है और जवाब में ताजिर ने ऊपर बयान किया हुआ सारा वाकिआ कह सुनाया। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 2, पेज 43

बदकारी से तौबा 3

मुस्लिम की रिवायत है कि एक औरत जुहैना जो जिना से हामिला हुई थी हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में आई और अर्ज़ की या रसूलल्लाह! मैं काबिले हद हूं, मुझ पर हद जारी फरमाइए, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके सरपरस्त को बुला कर फरमाया कि

इस से हुस्ने सुलूक करना और जब इस का बच्चा पैदा हो जाये तो इसे मेरे पास ले आना. चुनान्चे उस शख्स ने ऐसा ही किया और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हुक्म फरमाया कि इस औरत के कपड़े अच्छी तरह बा|ाि दिये जायें, फिर आपने उसे संगसार करने का हुक्म दिया और बाद में आप ने उस की नमाज़े जनाजा पढ़ाई।

हजरते उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज की या रसूलल्लाह! आपने इस जानिया की नमाज़े जनाजा पढ़ाई? आपने फरमाया, इसने ऐसी तौबा की है कि अगर वह मदीना के सत्तर आदमियों पर बांट दी जाये तो सब को पूरी हो जाये, क्या तुम ने इससे कोई अफजल शख्स देखा कि वह खुद को अल्लाह की हुदूद के इजरा के लिए आई है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 53)

ज़िना/बदकारी से तौबा 4

तिर्मिजी ने ब-सनदे हसन, सहीह इबने हिब्बान और ब-सनदे सहीह हाकिम ने हज़रते इबने उमर रजियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की है, उन्होंने कहा मैं हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बातों को सुनता था. आप एक या दो बार और उन्होंने सात बार तक गिना से ज्यादा किसी बात को नहीं दोहराया करते थे मगर यह बात मैंने आप से इस से भी ज्यादा बार सुनी है। आप फरमाते थे कि बनी इसराईल में एक कफल नामी शख्स था, वह गुनाहों से परहेज नहीं करता था। एक मर्तबा वह एक औरत के पास गया और उसे साठ दीनार देकर गुनाह पर रज़ामन्द कर लिया, चुनान्चे जब वह बुराई के इन्तेहाई करीब हुआ तो वह औरत क,पने और रोने लगी। उसने औरत से कहा क्या तुम मुझे अच्छा नहीं समझती हो? वह बोली नहीं, बल्कि बात यह है कि मैने ऐसी बुराई कभी नहीं की है और आज मैं किसी जरूरत से मजबूर होकर यह कर रही हूं। उसने यह बात सुनकर कहा वाकई तुम ने इस हालत में भी ऐसी बुराई नहीं की है यह दीनार ले जाओ, मैंने तुम्हें बख्श दिए हैं और खुदा की कसम! मैं आइन्दा कभी. भी गुनाह नहीं करूंगा। फिर वह उसी रात मर गया, सुबह उस के

दरवाजे पर लिखा हुआ था कि अल्लाह तआला ने किपल को बख्शा दिया है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 53)

ज़िना से बचने वाला का ईमान 1

बनी इस्राईल यानी पिछली उम्मत के एक शख्स ने किसी दूसरे शहर की औरत से निकाह किया और उसे अपने पास बुलाने के लिये अपने काबिले ए' तिमाद साथी को उस की तरफ़ भेजा। तो उस शख्स को उस के नफ्स ने वरगलाया और उस ने औरत से बदकारी की ख्वाहिश जाहिर की तो उस वक्त उस ने अपने नफ्स को धमकाया और अल्लाह से पनाह मांगी तो अल्लाह ने उसे नफ्सानी ख्वाहिश तर्क करने की तौफीक अता फरमाई (बहरुद्दुमूअ)

ज़िना से बचने वाला का ईमान 2

हज़रते स,यदुना इब्ने अब्बास और हज़रते स,यिदुना का' बुल अहबार से रिवायत है : "बनी द्य इस्राईल में एक इबादत गुज़ार शख्स था जो लोगों से अलग रह कर इबादत किया करता था। वोह एक तृवील मुद्दत तक अपनी इबादत गाह में इबादत करता रहा। बादशाह सुब्हो शाम उस के पास हाज़िर द्य होता और उस से हाजत वगैरा पूछता तो वोह जवाब में कहता कि "अल्लाह , मेरी हाजत को जियादा जानता है।" अल्लाह " ने उस की इबादत गाह पर अंगूर की एक बेल उगा जिस पर रोज़ाना अंगूर लगते। जब उस आबिद को प्यास लगती तो वोह अपना हाथ बढ़ाता तो उस से पानी बह निकलता वोह उसे पी लिया करता।"

कुछ अर्से के बा'द मग्रिब के वक्त एक हसीनो जमील औरत उस आबिद के क़रीब से गुज़री तो उसे पुकारने लगी : "ऐ अल्लाह के बन्दे !" आबिद ने जवाब में लब्बैक कहा तो औरत ने पूछा : "क्या तुझे तेरा रब देख रहा है ?" आबिद ने कहा : "या'नी मेरा रब अल्लाह है वोह कुहार है यता है द्य ह,यो क,यूम है दिलों के भेद जानता है और क़ब्रों में मदफून लोगों को उठाने वाला है।" औरत ने कहा: "शहर मुझ से दूर है यानी मुझे पनाह दे

दो ।" आबिद ने कहाः "ऊपर आ जाओ।" जब वोह औरत इबादत गाह में दाखिल हुई तो अपने कपड़े उतार कर बरह्ना द्य हो गई और आबिद को दा' वते नज़ारा पेश करने लगी। उस आबिद ने अपनी निगाहें झुका लीं और औरत से कहा : "तू बरबाद हो ! अपना जिस्म ढांप ले ।" औरत बोली : "अगर आज रात तू मुझ से नफ्सउठा लेगा तो तेरा क्या जाएगा।" तो उस आबिद ने अपने द्य नफ्स से पूछा : "तू क्या कहता है ? " नफ्स बोलाः "खुदा की क़सम ! मैं तो इस मौक़अ से ज़रूर फाएदा उठाऊंगा।" आबिद अपने नफ्स से बोला : "तेरी हलाकत हो, तू गन्धक का लिबास और आग के अंगारे चाहता है और मेरी इतने अर्से की इबादत जाएअ करना चाहता है, क्या तू नहीं जानता जानी की बख़्शिश न होगी और उसे मुंह के बल जहन्नम में धकेल दिया जाएगा, जहन्नम की आग कभी न बुझेगी और न फ़ना होगी मुझे अन्देशा है कि अल्लाह तुझ पर ऐसा गज़ब फ़रमाएगा कि फिर कभी तुझ से राज़ी न होगा।"

जब उस के नफ्स ने उसे मजीद वर-गलाया तो वोह आबिद बोला : "मैं तुझे दुन्या की हलकी आग पर पेश करता हूं अगर तूने इसे बरदाश्त कर लिया तो तुझे आज रात इस औरत से नफ्स उठाने दूंगा ।" फिर उस ने चराग़ में तेल भरा और उस की बत्ती को बड़ा कर दिया । वोह औरत भी येह सब बातें सुन रही थी और आबिद का अमल देख रही थी। फिर उस आबिद ने अपना हाथ बत्ती पर रखा तो उस ने हाथ न जलाया तो वोह बत्ती से बोला : "क्या हुवा जलाती क्यूं नहीं ?" तो आग ने उस का अंगूठा जला दिया फिर उस की उंग्लियां और फिर उस का हाथ जला डाला। इस पर औरत ने एक ज़ोरदार चीख मारी और दुन्या से रुख़सत हो गई । उस आबिद ने उसे उसी के कपड़ों से ढांप दिया। जब सुब्ह हुई तो इब्लीस मल्ऊन ने चीख कर लोगों से कहा : "ऐ लोगो ! आबिद ने फुलां शख़्स की फुलां बेटी से ज़िना कर के उसे क़त्ल कर दिया है ।" तो बादशाह अपने लश्कर और रआया के साथ सुवार हो कर आया । जब वोह उस इबादत खाने के करीब पहुंचा तो चिल्ला कर आबिद को पुकारा । आबिद ने पुकार का जवाब दिया तो बादशाह ने पूछा कि "फुलां की बेटी कहां है ?" आबिद ने ने कहाः "वोह मेरे पास ही है।" बादशाह बोला

: "उसे मेरे पास भेजो ।" आबिद बोला : "वोह तो मर चुकी है । " बादशाह बोला : "जब वोह जिना पर राज़ी न हुई तो तूने उसे क़त्ल कर दिया ?" फिर उस औरत को वहां से उठा लिया गया और आबिद को कैदखाने में डाल दिया गया। वोह लोग जानी को आरे से काट दिया करते थे। उस आबिद का हाथ आस्तीन में छुपा हुवा था वह उन्हें अपना क़िस्सा नहीं बता रहा था फिर उस के सर पर आरा रख दिया गया और जल्लादों से कहा गया कि आरा चलाओ तो उन्हों ने आरा चला दिया। जब आरा उस के दिमाग़ तक पहुंचा तो उस के मुंह से आह निकली तो अल्लाह ने जिब्रईलको भेजा : "इस से कहो कि येह कुछ न बोले, मैं इसे देख रहा हूं मेरा अर्श उठाने वाले और आस्मानों के मकीन फ़िरिश्ते रो रहे हैं, मुझे अपनी इज्ज़तो जलाल की क़सम ! अगर इस ने दूसरी मर्तबा आह निकाली तो मैं आस्मानों को ज़मीन पर गिरा दूंगा।" तो उस ने मरते दम तक न ही कोई आह निकाली और न ही कोई और बात की जब उस का इन्तिकाल हो गया तो अल्लाह ने औरत की रूह वापस लौटा दी तो वोह बोली : "खुदा की क़सम ! येह मज़्लूम था इस ने जिना नहीं किया था मैं अभी तक कुंवारी ही हूं।" फिर उस ने लोगों को पूरा वाकिआ सुना दिया तो उन्हों ने आबिद का हाथ देखा तो वोह औरत के बयान के मुताबिक़ जला हुवा था । वोह लोग बोले : "अगर हमें मालूम होता तो हम हरगिज़ इसे न चीरते।"

जब वोह आबिद दो टुकड़े हो कर ज़मीन पर गिर गया तो वोह औरत भी अपनी साबिका हालत में लौट गई। लोगों ने उन दोनों के लिये क़ब्र खोदी तो क़ब्र में मुश्क अम्बर और खुश्बू पाई। जब वोह जनाज़ा अदा करने के लिये उन के पास पहुंचे काफ़ूर की तो आस्मान से एक मुनादी ने उन्हें निदा दी: "ठहर जाओ पहले मलाएका को जनाज़ा पढ़ने दो।" फिर उन लोगों ने उन का जनाज़ा पढ़ा और उन्हें दान कर दिया तो अल्लाह ने उन की कब्र पर यास्मीन का पौदा उगा दिया और उन्हों ने उन की कब्र पर एक तख्ता पड़ा हुवा देखा उस पर लिखा था कि,

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला, अल्लाह की

तरफ से अपने बन्दे और वली के लिये : "मैं ने अपने अर्श के नीचे एक मिम्बर नस्ब किया और अपने मलाएका को जम्अ किया, जिब्रईल ने खुत्बा दिया और मैं ने अपने फ़िरिश्तों को गवाह बनाया कि मैं ने फ़िरदौस की पचास हज़ार हूरें तेरे निकाह में दीं और मैं अपने फ़रमां बरदार और डरने वाले बन्दों से ऐसे ही पेश आता हूं।" (बहरुद्दुमूअ़)

गुनाहों को छोड़ने का अनोखा अमल

हजरत सयिदुना इब्राहीम बिन अदहम अलैहिर्रहमा 162 हिजरी की खिदमत में एक नौजवान हाजिर हुआ और कहने लगा "मैंने अपनी जान पर बहुत जुल्म किया है, मुझे कुछ नसीहत फरमाइये जो मुझे गुनाहों को छोड़ने में मददगार हो।" आपने इरशाद फरमायाः "अगर तुम 5 बातों को अपना लो तो गुनाह तुम्हें कोई नुकसान न देगा।" उसने आमादा होने का इजहार किया तो आपने फरमायाः

"**पहली** बात ये है कि जब तुम गुनाह का इरादा करो तो अल्लाह तआला का रिज्क मत खाओ।" उस नौजवान ने कहाः "फिर मैं कहॉ से खाऊ गा? क्योंकि दुनिया की हर चीज़ अल्लाह की पैदा की हुई है।" आपने फरमायाः "क्या ये अच्छा लगेगा कि तुम अल्लाह तआला का रिज्क भी खाओ और उसकी नाफरमानी भी करो? उस नौजवान ने कहा "नहीं" फिर कहाः "अच्छा दूसरी बात बताएँ।

आपने फरमायाः **दूसरी** बात ये है कि जब तुम कोई गुनाह करने लगो तो अल्लाह के मुल्क से बाहर निकल जाओ।" वो कहने लगा "ये बात तो पहली बात से भी ज्यादा मुश्किल है क्योंकि पूरब से पश्चिम तक अल्लाह ही की मम्लिकत है।" आपने इरशाद फरमाया "तो क्या ये मुनासिव है कि जिसका रिज्क खाओ और जिसके मुल्क में रहो उसी की नाफरमानी करो? नौजवान ने नहीं में सर हिलाया और कहाः "तीसरी बात बताएँ।" आपने फरमायाः "**तीसरी** बात ये है कि जब तुम कोई गुनाह करो तो ऐसी जगह करो जहां तुम्हें अल्लाह न देख

सके।" उसने कहाः "हुजूर ये कैसे हो सकता है? अल्लाह तआला तो हर बात का जानने वाला है, कोई उससे कैसे छुप सकता है? आपने फरमायाः "तो क्या ये अच्छा लगेगा कि तुम उसका रिज्क भी खाओ, उसकी मम्लिकत में भी रहो और फिर उसी के सामने उसकी नाफरमानी भी करो? नौजवान ने कहाः "चौथी बात बयान फ़रमाए।"

आपने फ़रमाया "**चौथी** बात ये है कि जब मलकुलमौत तुम्हारी रुह कब्ज़ करने तशरीफ लाएँ तो उनसे कहनाः "कुछ देर के लिये ठहर जाएँ ताकि मैं तौबा करके चन्द्र अच्छे आमाल कर लूँ।" उसने कहाः "ये तो मुम्किन ही नहीं है कि वो इस मुतालबे को मान लें।" आपने फरमायाः "जब तुम जानते हो कि मौत यकीनी है और उससे बचना मुम्किन नहीं तो छुटकारे की उम्मीद कैसे कर सकते हो? उसने कहाः "पांचवीं बात बताएँ।"

आपने फ़रमायाः "पांचवीं बात ये है कि जब ज़बानिया यानी जहन्नम के दारोगे आए और तुझे जहन्नम की तरफ ले जाने लगें तो मत जाना।" उसने अर्ज की "वो नहीं मानेंगे और न मुझे छोड़ेंगे।" तो आपने इरशाद फरमायाः "तो फिर तुम नजात की उम्मीद कैसे रख सकते हो?" वो नौजवान पुकार उठाः "मुझे ये नसीहत काफी अब मैं अल्लाह तआला से माफी माांगता हूँ और तौबा करता हूँ।" उसके बाद वो नौजवान मरते दम तक इबादत में मशगूल रहा। (किताबुत्तव्वाबीन, 168)

तौबा करने वाल की पहचान!

तौबा करने वाले तन्हाई पाने के लिये वीरान मक़ामात की तरफ़ इस तरह भागते हैं जिस तरह ख़ौफ़ज़दा इन्सान दारुल अमान या'नी अम्न वाली जगह की तरफ भागता है । येह लोग वक़्ते सहर में आंसू बहा कर सुकून हासिल करते हैं। सज्दों ने पेशानियों पर निशाने मारिफत खीच दिये । येह लोग सारी सारी रात इबादत में मसरूफ़ रहते हैं फिर जब सहर फूटती है तो इनकी आंखों से अश्कों के धारे बह निकलते हैं। फिर जब तुलूए फ़ज्र होती है तो येह मुशा-हदात में खो जाते हैं और अल्लाह की बड़ाई बयान करते हैं ।

मैं इन चमक्ते सितारों, पुख़्ता इरादे रखने वालों और जवानों पर कुरबान जाऊं। येह हमें सदा देते हैं कि तन्हाई इख़्तियार करो, आख़िरत में हम तुम्हारे पड़ोसी बनेंगे। हम ने माल व अस्बाब, बीवी बच्चे और वतन छोड़ दिये, नफ़्सानी ख़्वाहिशात छोड़ दी हैं। हम ने फ़ानी दुन्या वीरान कर दी है, अब येह एक अर्से से हमारी तलाश में है मगर हम ने इसे ऐसी तलाक़ दे दी है जिस में रुजू मुम्किन नहीं। घर और घर वालों को खुद से जुदा कर दिया और महब्बते खुदा वन्दी का जाम पी लिया। काश ! हमें इस के कुछ घूंट और मिल जाएं।

येह हज़रात दिन में रोज़ा रखते हैं, दिल को तक्वा से आबाद रखते हैं और ज़बान को ज़िक्र से मा' मूर रखते हैं। अल्लाह का कुर्ब पाने के लिये एक दूसरे से सबक़त ले जाना चाहते हैं।(बहरुद्दुमूअ़)

ईमानी अक़वाल

हज़रते अली रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ौल है कि जिस शख़्स में छः आदतें पाई जाती है वह नारे जहन्नम (जहन्नम की आग) से दूर और जन्नत का तालिब (हक़दार) है-

(1) अल्लाह को पहचान कर उस की इबादत की।
(2) शैतान को पहचान कर उस की मुखालफत की।
(3) हक को पहचान कर उस की इत्तेबा की।
(4) बातिल को पहचान कर उस से परहेज किया।
(5) दुनिया को पहचान कर उसे तर्क कर दिया, और
(6) आख़िरत को पहचान कर उस का तलबगार रहा।

नसीहत :

जिहालत की अँधेरियों से दूर भागो
ग़फ़लत की नींद से जागो
इस्लामी किताबों को पढ़ो, नफ़्स और शैतान से लड़ो
ज़बान से ज्यादा न बोलो, दिल के दरवाज़े खोलो
फेक मुसलमान न बनो, नेक मुसलमान बनो

वो इल्म बेकार है जिसपर अमल न किया जाये
वो अमल भी बेकार है जो बिना इल्म का किया जाये